।। श्री स्वामी समर्थाय नमः।।

।। श्री कामाख्या नवशती ।।

वैद्य गणेश लक्ष्मणराव शिंदे
(B.A.M.S.)

मनकर्णिका पब्लिकेशन

मनकर्णिका प्रकाशन पुष्प -

★ ।।श्री कामाख्या नवशती।।

★ © वैद्य गणेश लक्ष्मणराव शिंदे
(B.A.M.S.)

★ **प्रथम आवृत्ती** -
(श्री)

★ लेखन सहाय्य
सौ. प्रियंवदा अरविंद जोशी

★ अक्षरजुळणी
सौ. अर्चना गजानन एकतारे
श्री. गजानन अमृत एकतारे

★ मुखपृष्ठ
नयना मते

★ प्रकाशक
गिरीश दगडूलाल गांधी
मनकर्णिका पब्लिकेशन
विशाल अपार्ट., पडवळ आळी,
चिंचवडगांव, पुणे - ४११ ०३३.
मो.- ९९२१६२५३८४
E-mail: manakarnikapc@gmail.com

★ मुद्रक

★ मुल्य

श्री गणेशाय नमः

मनोगत

सर्वप्रथम विघ्नोंको हरण करके सुख देनेवाले कार्य निर्विघ्न करनेवाले श्रीगणेशजी हे चरणों मे शतशः वंदन। सभी विघ्नों के हर्ता श्री गणेशजी का वरदहस्त मैं वैद्य गणेश शिंदे को मेरे गुरु श्रीस्वामी समर्थ की कृपा से निरन्तर प्राप्त हुआ है। मेरा जीवन स्वामीजी की कृपा से परिपूर्ण, संतोषपूर्ण, और अलौकिक आनंद से भरा हुआ है। स्वामीजी की कृपा से मैं आसाम के गुवाहाटी नगर में कामाख्या देवीजी के दर्शन के लिए गया था। तब मेरा मन किसी अलौकिक कृपा की अनुभूती कर रहा था। मैं बहुत प्रसन्नचित्त हो गया। मानो स्वामीजी मुझे कुछ सूचित कर रहे थे। बाद में मुझे स्वामीजी का आदेश प्राप्त हुआ। उन्होंने मुझे कामाख्या नवशती लिखने की प्रेरणा देकर उनकी और कामाख्या देवी की कृपा से मेरी झोली भर दी। स्वामीजी की इच्छा ऐसी की इस भक्त गणेश शिंदे को कामाख्या देवी की कृपा का निरंतर लाभा होता रहे इसीलिए उनके वरदान से यह कामाख्या नवशती साकार हुई है। कामाख्या माताजी को यह नवशती प्रिय हो ऐसी उनकी चरणों में प्रार्थना करके विनंती करता हूँ कि देवीजी का वरदहस्त मैं और सभी भक्तों के जीवन में रहे। सबका जीवन आयुरोग्य सुख से परिपूर्ण हो।

इस नवशती के निर्माण में भक्त संजीवना (वैद्य गणेश शिंदे)सुचेता, अथर्व वैसे ही सौ प्रियवंदा जोशी, श्री राघवेंद्र राव, श्री गजानन,सौ अर्चना इनका बडा सहयोग प्राप्त हुआ। इसे ग्रंथ को प्रकाशित करने में

मनकर्णिका पब्लिकेशन के श्री गिरीश दगडूलाल गांधी और मुखपष्ठकार नयना मते इनसे भी बडा महत्त्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। कामाख्या माताजी को मैं नम्र विनंती करता हूँ कि इन सबके सिरपर आपका और स्वामीजी का वरदहस्त सदा रहे। इन सभी को और इनके सब परिवार जनोंको आपका आशीर्वाद निरन्तर मिलता रहे।

इस नवशती के पठन मात्र से ही कामाख्या देवी, भगवान शिव , माता पार्वती , ब्रह्माजी और देवी सरस्वती, विश्वपालक श्री विष्णुजी, माता लक्ष्मीजी सभी प्रसन्न होकर भक्तों की सारी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं। यह ग्रंथ मानो इह और परलौकिक सुखी जीवनकी कुँजी है । इसका लाभ लेकर सभी सदैव सुखी जीवन का अनुभव करे। ऐसी प्रार्थना स्वामीजी और माता कामाख्या देवी को कर के मैं उनको चराणों मे विनम्र वंदन करता हूँ।।

।।श्रीकामाख्या माताजीके चरणोंमे समर्पित। परमपूज्य स्वामीजीकें चरणोंमे समर्पित।।

।।अध्याय पहिला।।

श्री गणेशाय नमः। श्री दत्तात्रेयाय नमः। श्री स्वामी समर्थाय नमः। श्री सरस्वत्यै नमः।
श्री कुलदेवताय नमः। श्री कुलस्वामिन्यै नमः। श्री कामाख्यादेव्यै नमः। श्री ग्रामदेवताय नमः।

नमन मेरा गणेशजीके चरणोंमे। वरप्रसाद पाकर ही जिसके पूर्ण हो मेरे कार्य जीवनमें। श्रीगणेशजी दे दे वरदान मुझे।।१।। गजाननजी के ध्यानमात्र से ही। प्रसन्न होते है कृपामूर्तिजी। करते पूर्ण मनोकामना भक्तों की। स्वयं वे तो सब सुखोंके स्वामी।।२।। मेरा नमन तुम्हें सरस्वती देवि। तुम हो अनंत गुणोंकी स्वामिनी। तव प्रसादे प्रवाहीत रहे वाणी। प्राप्त करते वाग्सामर्थ्य मनुजप्राणी।।३।। कामना मेरे मनमे है एकही। करुँ बयान देवी का माहात्म्य, शक्ति। मेरे अंतःकरणमें ही हो शब्दस्फूर्ती। लिखूँ मैं देवी कामाख्या नवशती।।४।। इस संसार के सुख-दुख-ताप सारे। विश्व की जननी कृपासे दूर करे। अभिलाषा भक्तोंकी पूर्ण करके। भक्तों का वो जीवन सवारें।।५।। स्वामी आपके चरणों में प्रणाम। हैं आप सारे सुखों के निधान। कर रहे भक्तों का उध्दार देके वरदान। मेरे सद्गुरु आप मेरा विश्राम।।६।। रहे स्वामी आपके आशीर्वचन। उससे होते हैं सब कामकाज सफल। आपकी ही प्रेरणा से करुँ लेखन। लिखूं मैं कामाख्या देवी गुणगान।।७।। नमन मेरा माता-पिता के चरणोंमें। उनकी कृपासे मिले सुख जीवनमें। जीवन सँवारकर सजाया जिन्होंनें। रहे उनका आशीर्वचन सदाजीवनमें।।८।। सिंधु मेरी माता प्रेमका सागर। लक्ष्मण मेरे पिता दया के सागर। सुसंस्कार देके किया मुझे

सबल। जीवन गणेश का हो गया कृतार्थ।।९।। देवी तो है सकल सामर्थ्य संपन्न। देवी है परमात्मा का ही रुप। शक्ती रुप में वो ही होकर प्रकट। करे जगत के सारे कार्य सफल।।१०।। प्रकृति ही करे विश्व का निर्माण। वो देवी ही बाँधे प्राणीमात्र का संधान। तीन गुण और पंचतत्त्वोंका मेलन। करके करे वह सृष्टी का निर्माण।।११।। परमात्मा तो निर्गुण निराकार। शक्ति के रुप में होवे साकार। देवी माता ही जगत् का आधार। खेले परमात्मशक्ती करे धारण देवी रुप।।१२।। चार खानों मे बटी यह सृष्टि। उद्भीज - स्वेदज - अंडज- जारज। बन गई जीवन की यह त्रिपुटी। शक्ति रुप में होकर साक्षात।।१३।। वाणी रुप में आयी सरस्वती। वैखरी लक्षणा मध्यमा पश्यन्ती। शब्दरुप नाद होकर वह आयी। बन गई सब प्राणियोंकी बोली।।१४।। तरह तरह के रुप में आकर। करे यह जीवन चक्र का चलन। प्रेरणा मात्र से केवल चलाये चक्र। हो जावे गतिमान यह संसार।।१५।। हम सब उसकी है कठपुलती। नचाये हमें करके भाग्य की खेली। नाच नचाये यह देखा देखी। मुश्किल है जानना किमया उसकी।।१६।। अनेक रुपों में आती यह शक्ति। यही तो है पुरुष की प्रकृति। कहते है इसे ही माया मोहिनी। है यह शक्ति गुणक्षोभिणी।।१७।। परमात्मा स्वयं है अनिर्वचनीय। माया शक्ति भी अनिर्वचनीय। नाना रुप में होती प्रकट यह। परमात्मा संकल्प उसका आश्रय।।१८।। न कुछ करे परमात्मा खुद। पर शक्ति रुप में कराये चलन। अकर्ता बनकर रहे वह स्वयम्। भरे फिर भी सृष्टी कणकण में चैतन्य।।१९।। वैसे तो निराकार उसका आधार। पर देवी ही करती उसे साकार। करे निर्माण ब्रह्मा, विष्णु, महेश। ये है गुणक्षोभिणी के रुप।।२०।। ब्रह्मा की सरस्वती, विष्णु की लक्ष्मी। महेश की सती यही शक्ती। ये ही प्रकृती, ये ही माया, ये

ही सती। ये सारे तुम्हारे ही रुप देवी।।२१।। परमात्मा रुप है शिव परम तत्त्व। पत्नी सती है उसका सर्वस्व। शिवशक्ति का नट नागर रुप। माना जाता है अर्धनारी नटेश्वर।।२२।। प्रथम करता हूँ मैं बयान। था कैसा शिव का स्वरुप मूल। है शिवही परमतत्त्व परब्रह्म। है स्वयं शिव निराकार निर्विकार स्वरुप।।२३।। कहते हैं नारदजी को ब्रह्मदेव। करुँगा बयान पापनाशक शिव तत्त्व। सुनकर अतीव होकर प्रसन्न। नारद बोले कहीये मुझे शिव चरित्र।।२४।। महाप्रलय के समय हुआ विश्व नष्ट। शेष रह गये केवल सत्स्वरुप ब्रह्म। था यह नाम, रस, रुप, गंध विहीत। नही है इसे नाश वृध्दि का विकार।।२५।। सर्वव्यापक, निर्गुण, और निराकार। निर्विकार, निर्विकल्प और निरारंभ। आदि मध्यान्तरहित उपद्रव रहित। अनादि और था उसका रुप चिन्मय।।२६।। उत्पत्ती के समय हो गया स्फुरण। बोले मैं हूँ एक, बनुँगा अनेक। उसी संकल्प के अनुसरण से। कर दी क्रिया शिवस्वरुपी तत्त्वने।।२७।। अपनी खुद की लीला स्वरुप में। किया मूर्ति का निर्माण शिव ने। हो गया खुद अंतर्धान क्षण में। थी वह मूर्ति बहुत शोभाय मान।।२८।। था यह परमात्मा का मूर्त स्वरुप। कहते है इसी रुप को सदाशिव। बुधजन कहते है इसे ईश्वर। करती हैं यह स्वेच्छा से व्यवहार।।२९।। इसके बाद फिर सदाशिवजी ने। स्वशरीरसे की निर्मित एक शक्ति। यही शक्ति प्रधान माया, प्रकृति। है यह विकार रहित गुणवती।।३०।। कहते हैं इसे शक्ति अंबिका। हैं यह सर्वेश्वरी प्रकृति नित्या। विश्व का मूल कारण, त्रिदेव माता। थी यह सर्व शुभ लक्षण युक्ता।।३१।। अष्टभुजा धारण करनेवाली। वदन उसका था अति तेजस्वी सुंदर आभूषणोंसे सजी हुई। करोंमे शस्त्रास्त्र धारण करनेवाली।।३२।। ऐसी ये शक्तिनाम अंबिका। है यह भी

रुप सदाशिवका। फिर सदाशिवने किया निर्माण। क्षेत्र पवित्र 'शिवलोक'नाम।।३३।। है यह क्षेत्र अतिपवित्र स्थान। काशीक्षेत्र नाम से यह है विख्यात। अपने आनंदमें हुआ यह निर्माण। इसीलिए मिला 'आनंदवन' नाम।।३४।। सदाशिव कर रहे थे वहाँ विहार। आया उनके मनमें एक विचार। शक्ति से करके एक पुरुष उत्पन्न। दे दिया उसे सृष्टि संचलन कार्य।।३५।। अपने स्वयं शरीर के वामभाग से। किया एक पुरुष उत्पन्न शिव ने। था यह सात्त्विक सागर समान। बोले शिव तू है विश्वव्यापक।।३६।। 'विष्णु'यह तेरा रहेगा अभिधान। अब तुम करो तपश्चर्या यहाँ रह कर। शिव ने दिया विष्णु को तब। श्वासमार्ग से वेदों का ज्ञान।।३७।। किया विष्णु ने तप बहुत साल। बीते तपमें बारह हजार साल। आया विष्णु को पसीना बहुत। उससे हो गया सर्व प्रदेश जलमय।।३८।। किया विष्णुने जलमें शयन। नार का मतलब है जल। सो गये विष्णु इसी नार में। इसीलिए मिला नाम नारायण।।३९।। विष्णु के नाभी में हुआ कमल उत्पन्न। कमल में हुआ मेरा(ब्रह्माका)जन्म। शिव आज्ञासे ब्रह्मा के शरीरसे। हुआ प्रकटरुद्र जो उसका ही रुप।।४०।। बोले शिव उमा यह शक्ति मेरी। इसकी वाग्देवी रुप जो शक्ति। वही बनेगी देवी सरस्वती। होगी यह ब्रह्मा तव अर्धांगिनी।।४१।। दूसरी जो उसकी ही शक्ति। नाम है उस शक्तिका लक्ष्मी। वही लक्ष्मी होगी विष्णु की पत्नी। काली रुप उमा की जो शक्ति।।४२।। होगी रुद्र की वह अर्धांगिनी। ऐसी तीनों देवताओं को मिली शक्ती। अब कीजिए अपना कार्य बोले शिवजी। निर्माण-पालन - संहार तुम सभी।।४३।। वाग्देवी के साथ करेगा ब्रह्मा निर्माण। विष्णु लक्ष्मी की सहायतासे करे पालन। मैं रुद्ररुपसे काली के साथ लय। ऐसा होगा सबका एकैक कार्य।।४४।। कहता हूँ शिव विवाह

कथा अभी। सुनिए ध्यान देकर सभी। कहा ब्रह्मा ने सदाशिव को तभी। कहा है मैंने दक्षको पहले ही।।४५।। दक्ष की कन्या नाम उसका सती। दे दीजिए आप उसे शिवजी से। तपश्चर्या कठोर कर रहीथी सती। दे दीजिए आप उसे शिवजी से। तपश्चर्या कठोर कर रही थी सती। हुए प्रसन्न तपश्चर्या से शिवजी।।४६।। कर रही थी सती तप शिव के लिए। शिवजी तपसे बहुत प्रसन्न हुए। मन से शिवजी ने किया स्वीकार। हो गई सती तब बहुत मुदीत।।४७।। देखा माँ आक्सिनी ने सती मुख। लग रही थी सती बहुत प्रसन्न। बोली सती माँ के पास आकर। तब अक्सिनी हुई आनंदित।।४८।। अक्सिनी बोली पती दक्ष को। सुनकर दक्ष भी आनंदित हुए। सरस्वती के सह ब्रह्मा दक्षगृह गये। किया उनका आदर सन्मान दक्षने।।४९।। बोले ब्रह्मदेव तब दक्ष प्रजापती से। दिया है सती को वरदान शिवजीने। अब आ गया उस वरपूर्ति का समय। आये हैं हम यहाँ शिवाज्ञा लेकर।।५०।। न हुए वश कामदेव को शिव। न हुआ कामदेव का असर उनपर। विरह व्यथा से हो गये है व्याकुल। वैराग्यमूर्ती जो स्वयं सदाशिव।।५१।। कीजिए सती सदाशिव को अर्पण। कीजिए अभी आप कन्यादान। सुनकर दक्ष प्रजापती हुए मुदित। बोले मुझे स्वीकार तुम्हारा वचन।।५२।। ब्रह्माजी हुए बहुत प्रसन्न। गये सरस्वतीसह शिवजी के समीप। कह दिया उन्होंने मुदित होकर। बोले दक्ष आइए शिवजी को लेकर।।५३।। सुनकर रुद्र हुए बहु आनंदित। बोले मुझे (ब्रह्मा को)नारदको कहिए। आइए कैलासपर सब मानसपुत्रोंको लेकर। आए विष्णु जी भी लक्ष्मी के साथ।।५४।। आए सब संबंधी कैलास परबतपर। चैत्र शुध्द त्रयोदशी हो गई निश्चित। दिन था रविवार और फाल्गुन नक्षत्र। शिव को लेकर किया प्रस्थान।।५५।। संबंधियों के बीच शिव शोभायमान।

हो रहा था बहुत बडा महोत्सव। निकले सभी बहुत सजधजकर। देव, देवता ,ऋषि, मुनि शामिल।।५६।। पथ चलते सब उल्हासके साथ। वाद्यों का ध्वनि गूँज रहा मंगल। आ गए सब दक्षजी के नगर। कन्यावाले सब हो गए उल्लासित।।५७।। प्रजापति दक्ष के किया स्वागत। लेकर आ गए सबको वे अपने घर। दे दिया उन्होंने रुद्रको उच्चासन। दे दिया देवता ऋषियोंको योग्य स्थान।।५८।। किया दक्ष ने मरीचिसे विमर्श। बोले ब्रह्मा को आप बने पुरोहित। कर दी विनंती ब्रह्मा ने मान्य। किया विवाह विधि का आरंभ।।५९।। दक्षहस्तसे करवाया कन्यादान। विधिपूर्वक किया शिव ने पणिग्रहण। बडे स्वरुप में हो गया समारोह। हुआ सती शिवका विवाह संपन्न।।६०।। ब्रह्मा और विष्णुने किया स्तवन। दक्ष प्रजापतिने किया बडा महोत्सव। हो गये नृत्यगायनादि कार्यक्रम। ऐसा हुआ विवाह समारोह उत्तम।।६१।। कैलासनगपर आये सतीसह शिव। दिया अपने गणोंको आदेश। चले जाइए अन्यस्थानपर तुम सब। आइए लौटकर जब करुँगा स्मरण।।६२।। शिव और सती ही थे वहाँ विराजीत। हो गई थी सती हर्षोल्हसित। अपनेही मन में थे सदाशिव संतुष्ट। हो गए थे सती सौंदर्य से मोहित।।६३।। बीत गए ऐसे पचीस साल। थे रुद्र सती के साथ रममाण। आया सती के मन में ख्याल। हो गयी वहा शिव के सामने उपस्थित।।६४।। बडे आश्चर्य से तब पूछा शिवजीने। ऐसा क्या सोच रही आप मनमें। बताइये आप अपने मन का विचार। न रखिए मन में कोई संकोच।।६५।। शिवजी से सतीने बताया तब। शुरु हुआ है अब पर्जन्य समय। गूँज रहा है ध्वनि पत्तोंका यहाँपर। वायुसमान भाग रहे है बादल।।६६।। बह रही है यमुना जल से पूर्ण। गगनमें हो रहा है बिजली नृत्य। देखकर ये सब है मनमें डर। लगता है चाहिए अपना भी

घर।।६७।। सुनकर ऐसी बातें सतीकी। हँसकर सतीसे बोले शिवजी। कहीए मुझे स्थान वह सती। है जो तुम्हारे मन में पसंद की।।६८।। बोले जहाँ न आ सकेंगे बादल। घूमते रहेंगे नीचे शिखरों मे घन। ऐसे उत्तुंग बडे परवत महान। एक है मेरु दुजा है हिमाचल।।६९।। शिवजीने किया परवतों का वर्णन। सुनकर हो गयी सती बहु प्रसन्न। बोली पंसद है मुझे हिमाचल। बनाइए वहीपर अपने लिए घर।।७०।। आए शिवसती हिमालय परवतपर। बनाया शिवजीने निवासस्थान। करते थे दोनो स्वच्छन्द विहार। किया निवास वहाँ हजार साल।।७१।। बिताया बहुत आनंदपूर्ण जीवन। हो गयी सती पूर्ण तृप्तकाम। बोली सती शिवजीको तब। आपके सहवाससे हो गयी संतुष्ट।।७२।। अभी मैं हो गयी सुख से निवृत्त। जानना चाहती हूँ मैं परमतत्त्व। जिससे होगी मैं सुखदु:ख से परावृत्त। मिलेगा जीवन में मुझे सच्चासुख।।७३।। सुनकर सती के ऐसे मीठे वचन। हो गए सदाशिव बहुत प्रसन्न। बोले है यह लोक कल्याणकारी प्रश्न। इसीलिए कहता हूँ सुनो मेरे वचन।।७४।। उस वक्त कहते हैं सती को सदाशिव। जिसे विज्ञान कहते है वही परमतत्त्व। 'ब्रह्म के बारे में ज्ञान' यही है विज्ञान। ये ज्ञान पाकर नही रहता अन्य स्मरण।।७५।। जब मन होता है सर्वसंगोंसे रहीत। होता है उस व्यक्तिका आवर्त व्यूह नष्ट। इसे ही कहते है 'परब्रह्मज्ञान'। यही तो है मोक्ष का असली स्वरुप।।७६।। लेकिन यह ब्रह्म का ज्ञान है दुर्लभ। तभी मिलता है जब मन बुध्दि शुद्ध। विज्ञान की जननी है भक्ति निश्चल। भक्ति से होते प्राप्त भोग और मोक्ष।।७७।। सुनकर सती हुई प्रसन्न। किया भक्तिपूर्वक उसने शिवको वंदन। चाहती हूँ जानना यंत्र, मंत्र। शास्त्र,धर्म और इन सबका महत्त्व।।७८।। कर रहे थे दोनो प्रेमसे वार्तालाप। शिव ने किया

सती का समाधान। कही भक्तिमाहात्म्य कथा और महत्त्व। कर रहे ये सतीशिव मुक्त विहार।।७९।। हो गये दोनो ऐसे ही वृषभारूढ। आ गये शिवसती दोनों भूलोकपर। दण्डकारण्यमें कर रहे थे संचार। दिखाई दिए राम और लक्ष्मण।।८०।। किया शिवजीने राम को प्रणाम। चल दिए आगे सतीसह शिव। सती मन में ही रही थी सोच। शिव से बोली 'आप तो है सर्वश्रेष्ठ'।।८१।। है आपही जगत् के स्वामी एकमेव। सब करते है आपका पूजन स्मरण। कहिए मुझे ये कौन थे धनुर्धर। किया क्यों आपने उनको प्रणाम।।८२।। बोले प्रेमसे सतीको तब शिव। ये दोनों धनुर्धर है दशरथ पुत्र। गौर वर्ण का लक्ष्मण शेषावतार। नीलवर्ण राम है विष्णु का अवतार।।८३।। सुनकर सती का न हुआ समाधान। बोले सती को तब सदाशिव। नही है मेरे वचनपर विश्वास। ले लीजिए उनकी परीक्षा आप।।८४।। दी सती को आज्ञा इसप्रकार। मन में करने लगी वह चिंतन। कैसी ले लूँ मैं इनकी इम्तहान। किया सतीने सीतारुप धारण।।८५।। आगयी सती श्रीराम के सम्मुख। शिवनाम में ही राम थे मग्न। देखकर सती को आगे बढकर। बोले सतीजी, आपको प्रणाम।।८६।। आप अकेली कैसे वनमें इस। कहा गये है सदाशिव इस समय। सुनकर सती हो गयी लज्जित। जाना सती ने राम है विष्णु साक्षात।।८७।। पूछा सतीने तभी श्रीरामको। शिव की अज्ञा से आयी परीक्षा लेने को। अब तेरा प्रभुत्व जान गयी में। सच में तुम साक्षात विष्णु हो।।८८।। लेकिन कहलाते है शिव देवाधिदेव। सभी देवाधिदेव करते उनको वंदन। फिर भी आप कैसे उनको वंदनीय । कृपा करके बताइएँ इसका कारण।।८९।। बोले राम पुरातन समय में शिवजीने। विश्वकर्मा को बुलाया अपने लोकमें। गोशाला, महाल, सिंहासन बनवाये। बनवाया छत्र गणेशजी के लिए।।९०।। हो

गए थे हरि भक्तिसे शिव प्रसन्न। श्रीहरिको किया आमंत्रित। सुमुर्हुपर बिठाया उनको सिंहासनपर। रखा सन्मानसे उनके सिर मुकुट।।९१।। बोले आजसे श्रीहरि हैं सर्वश्रेष्ठ। करेंगे वेद भी उनके ही यशोगान। मुझे भी आप आज से वंदनीय। हो जाएगा इस स्थान का नाम गोलोक।।९२।। करके सती का शंका समानधान। चल दिए वन में फिर से राम। आ गई सती शिव के पास लौटकर। अंतर्ज्ञान से जान गए सदाशिव।।९३।। याद आ गया शिव को विष्णु वचन। उसी साथ हुआ स्वप्रतिज्ञा स्मरण। न स्वीकार करके मेरा वचन। किया है सती ने बडा अपराध।।९४।। कर दिया शिवजीने मनमें सती त्याग। चलपडे कैलास पर सतीसह। 'शिवजी आप सत्य ही है धन्य'। हो गई ऐसी आकाशवाणी तब।।९५।। सुनकर ऐसी यह दिव्य आकाशवाणी। सतीने पूछा प्रतिज्ञा कौनसी। अंत:करण में ही ध्यान करके सती। किया मन में मेरा त्याग जान गयी।।९६।। कैलास परबतपर आते ही शिव। बैठ गए अपने श्रेष्ठ आसनपर। हो गए तत्काल शिव ध्यानमग्न। हो गई सती दुखमें आर्त आकुल।।९७।। बीत गया ऐसा बहुत समय। आ गए शिव समाधि से बाहर। दु:खित सतीने किया उनको प्रणाम। बोले सतीसे शिव सामने बिठाकर।।९८।। बहुत मनोरंजक कथाएँ सुनाकर। किया शिवजी ने सती का रंजन। हो गई उससे सती बहुमुदित। लेकिन न किया शिवने प्रतिज्ञा त्याग।।९९।। ये सब है लेकिन सामान्य विषय। ये तो एक उनकी लीला सामान्य। शिव और सती तो है एकस्वरुप। लीला करना है उनका एक छंद।।१००।।

।। श्रीकामाख्या माताजीके चरणोंमे समर्पित। परमपूज्य स्वामीजीकें चरणोंमे समर्पित।।

।। अध्याय दुसरा ।।

श्री गणेशाय नमः। श्री दत्तात्रेयाय नमः। श्री स्वामी समर्थाय नमः। श्री सरस्वत्यै नमः।
श्री कुलदेवताय नमः। श्री कुलस्वामिन्यै नमः। श्री कामाख्यादेव्यै नमः। श्री ग्रामदेवताय नमः।

करता हूँ गणेशजी आपको प्रणाम। आपही है इस संसार का आधार। आपही है सब गणोंके प्रधान। हो निर्विघ्न आपकी कृपासे आख्यान।।१।। शिवजी आप तो जगत् में परम। प्रधान तत्त्व परमात्मा परम। करता हूँ शीश झुकाकर वंदन। करके स्वीकार दीजिए आशीर्वचन।।२।। सतीजी आप तो जगन्माता स्वरुप। सभी देवता तो है आपका रुप। आपही सदाशिव की शक्ति रुप। शिवशक्ति आप दोनो सबको वन्द्य।।३।। आप अक्सिनीकन्या आप के पिता दक्ष। दोनोंको है मेरा सादर वंदन। करता हूँ बयान सबका लीलाचरित। लीला सब की है न्यारी बहुत।।४।। एक समयपर प्रयाग स्थानपर। मुनिजन सभी हो गये सम्मिलित। किया सबने एक यज्ञ का आयोजन। यज्ञ में थे शामिल सब बुधगण।।५।। आये थे सनकादि मान्यवर मुनिगण। प्रजापति ऋषि और देवाधिदेव। सरस्वती के साथ आये ब्रह्मदेव। गणोंके साथ भवानी पति शिव।।६।। संयोग ऐसा कि उसी समयपर। हुआ दक्ष प्रजापति का आगमन। उठकर खडे होके दिया सबने सम्मान। लेकिन शिवजीने न दिया उत्थापन।।७।। मिल था दक्ष को ब्रह्मांडाधिपति मान। उसका दक्ष के मन में था बडा अभिमान। दक्ष ने समझा

किया शिव ने अपमान। हो गये दक्ष बहुत कोपायमान।।८।। बोले गर्व से दक्ष प्रजापति सबको। आप सब ने दिया सम्मान मुझको। लेकिन यह दुर्जन शिव देखो उसको। उठकर सम्मान नही दिया मुझको।।९।। शिव खुद है कुलहीन, कुरुप, जन्महीन। स्मशानवासी यह दुर्जन है अपवित्र। करता हूँ उसे मैं यज्ञसे बहिष्कृत। इस स्थानपर शिव नही है योग्य।।१०।। सुनकर ऐसे ये दक्षके वचन। करने लगे निंदा भृगुआदि ऋषि सहित। सभी देवता बोलने लगे दुर्वचन। करने लगे शिव की निंदा सब।।११।। ये सब कुछ नंदीने जब देखा। कियी नंदीने दक्षकी निर्भत्सना। निर्भत्सना सुनकर दक्षको क्रोध आया। उन्होंने सब रुद्रगणों को शापित किया।।१२।। बोले दक्ष 'तुम सब गण होंगे वेदबाह्य। महर्षि आदि करेंगे तुम्हारा त्याग'। फिर नंदीने किया सभी को शापित। न जान सकोगे आप तत्त्वका ज्ञान।।१३।। वेद पारंगत होकर भी करोगे व्यर्थवाद। हो जाओगे क्रोधलोभ में उन्मत्त सब। सुन दक्ष तू होगा कर्म से भ्रष्ट। नही मिलेगा तुझे जीवनमें आनंद।।१४।। कियी दक्ष तूने शिवकी निंदा। परमतत्त्व शिव है ये नही जाना। हो गया दूषित यह मुख तुम्हारा। नष्ट ये होगा अजमुख आयेगा।।१५।। ये सब देखकर नंदीको बोले शिव। ऐसे कैसे हो गये तुम संतप्त। मालूम है तुम्हें क्या है शिवतत्त्व। नही कर सकता कोई मुझे शापित।।१६।। समझो मै ही हूँ यज्ञ का सर्वांग। मेरी माया के कारण दिखाई देते अलग। आत्मदृष्टि से देखो सब मेरे ही रुप। आत्मनिष्ठ होकर बनो विकार शून्य।।१७।। शिव उपदेश सुनकर हुआ नंदी शांत। चले गये शिव अपने स्थान पर। परंतु हो गया दक्ष बुध्दिभ्रष्ट। करने लगा वह सदाशिवका द्वेष।।१८।। दक्ष प्रजापति ने कनखल तीर्थ में। बडे यज्ञ का कर दिया आयोजन। भृगु आदि ऋषियोंको बनाया ऋत्विज।

सभी गन्धर्वो, विद्याधरों सिध्दगण समूह।।१९।। यज्ञों, आदित्यसमूहों, सभी नागोंको। किया दक्ष प्रजापतिने महायज्ञमें वरण। अगस्त्य, कश्यप,अत्रि, वामदेव। भृगु,दधीचि और भगवान व्यास।।२०।। भरद्वाज, गौतम,पैल, पराशर। गर्ग, भार्गव, ककुपसित, सुमन्तु, त्रिकु। कंक, वैशंपायन आदि सब मुनिगण। सभी ऋषि मुनी हो गये उपस्थित।।२१।। आए ब्रह्मलोक से ब्रह्मा सपरिवार। पहूँचे विष्णु परिवार पार्षदोंके साथ। पधारे यज्ञ मे सभी देवता सपरिवार। सारे देवता, मुनी, ऋषिगण थे उपस्थित।।२२।। दक्ष ने नही दिया शिवको निमंत्रण। मानता था शिव है कपालधारी अपवित्र। अपनी पुत्री सती शिवकी पत्नी। उसको भी नही बुलाया दक्षने यज्ञमें।।२३।। यज्ञ का जब हो गया आरम्भ। दधीचि ने देवताओं को पूछा तब। क्यों नही उपस्थित भगवान सदाशिव। सुनकर बोले उठे मूढ बुध्दि दक्ष।।२४।। देवताओं के मूल श्रीविष्णु आ गए। शिव की यज्ञ में आवश्यकता ही क्या है। वैसे तो दे दी कन्या ब्रह्मा को मानकर। सच में शिव कुलहीन,मूर्ख है अयोग्य।।२५।। सुनकर दधीचि तब बोले सबको। कुछ भी कहिए, मैं नही मानता ये सब। भगवान शिव के बिना रहेगा यज्ञ अपूर्ण। इससे हो जएगा केवल अनर्थ।।२६।। कहकर दधीचि चल दिए उसी क्षण। आ गए दधीचि यज्ञ भूमिसे बाहर। देखकर उपहासमें हँसने लगे दक्ष। किया अन्य मुनियोंने दधीचिका उपहास।।२७।। दक्ष के यज्ञ करी बात फैली थी चारो ओर। जा रहे थे सब सजधजकर उसी ओर। समझा सती को यज्ञ का वृत्तांत। बोली शिवसे यज्ञ में जाएँगे हम।।२८।। शिव बोले नही है यज्ञ का निमंत्रण। ऐसे में वहाँ जाना सर्वथा अयोग्य। हुई संतप्त सती पिता दक्ष पर। बोली शिव के बिना न होगा यज्ञ सफल।।२९।। ये जानते हुए भी नही बुलाया। जाकर जानुंगी क्या कारण

इसका। फिर शिव बोले अनुचित है जाना। चाहे तो जाओ जैसी तुम्हारी इच्छा।।३०।। गयी यज्ञ में सती सजधजकर। माता, भगिनिओंने किया स्वागत। लेकिन पिताने किया उसे दुर्लक्षित। नही रखा था शिव के लिए यज्ञभाग।।३१।। देखकर सती हुई बहु संतप्त। बोली नही जानते आप शिवमाहात्म्य। तुम्हारी मुखसे शिवनिंदा सुनकर। हो गयी हूँ मैं खुदही अपवित्र।।३२।। करूँगी मैं अभी प्रायश्चित्त। करूँगी मैं खुद इस देह का त्याग। मचा त्रिभुवन में बडाही हलचल। करने लगे दक्ष की चिंता सब।।३३।। मच गया आकाश और भूपर। सबको भयभीत करनेवाला हाहाकार। शस्त्र लेकर खडे हुए शिवगण। मचाने लगे सभी ओर प्रलय।।३४।। देखकर भृगुने दिया मंत्रोंसे अग्नि। हो गये निर्माण ऋभु नाम असुर। करने लगे ऋभु शिवगणोंसे युध्द। कर दी शिवगणोंकी शक्ति क्षीण।।३५।। शिव के पास भागे सारे शिवगण। हो गयी आकाशवाणी उसी समय। बोले हे दक्ष है तू अति मूर्ख। किया है तुमने बडा ही अनर्थ।।३६।। नहीं किया शिव और सती का पूजन। शिव तो है पुरातन अनादितत्त्व। शिव है स्रष्टा, रक्षक और संहारक। सबके स्वामी, कल्याणकर्ता है शिव।।३७।। नहीं अर्पण किया उनको यज्ञभाग। नही किया तुमने शिव का सम्मान। ऐसे कैसे तुम मूर्ख अनजान। शिव दर्शन मात्र मिलता है यज्ञ का फल।।३८।। सोचता था तू करके शिव का धिक्कार। कर सकुँगा मै खुद का कल्याण। हो जाएगा यह तेरा गर्व चूर-चूर। नही करेगी कोई देवता तेरा सहाय्य।।३९।। सभी देवता ऋषियोंने सुनी। ऐसी ये अद्‌भूत आकाशवाणी। हो गये आश्चर्य चकित सब मुनी। हुए भविष्य की आशंकासे ग्रस्त सभी।।४०।। आ गए लौटकर शिवजी के गण। सुनाया उन्होंने शिव को यज्ञ का वृत्तांत। सुनकर यज्ञ वृत्तांत शिवजी हुए क्रोधित।

अपने सिर से उखाड ली जटा एक।।४१।। क्रोध से मार दी जटा पर्वतपर। हो गए उस जटा के दो खण्ड। प्रलयकाल के समान करके शब्द। हुआ बलशाली वीरभद्र उत्पन्न।।४२।। जटा के दूसरे भग से अत्यंत भयंकर। भूतों से घिरी महाकाली उत्पन्न। किया वीरभद्र ने शिवजी को प्रणाम। किया वीरभद्रने विनम्र निवेदन।।४३।। दीजिए आज्ञा मुझे आप शीघ्र। बताइये सोख डालूँ क्या मैं समुद्र। या कर दूँ परबतोंको चूर्ण चूर्ण। या करु इस ब्रह्माण्डका ही भस्म।।४४।। है आपकी इतनी कृपा मुझपर। ये सारी बातें हैं मुझे संभव। सुनकर यह भवानीपति हुए संतुष्ट। दिया उन्होंने वीरभद्र को आशीर्वचन।।४५।। बोले शिवजी,''सुन मेरी बात वीरभद्र। ब्रह्मा का पुत्र दक्ष है दुष्ट। अहंकारी और मेरा विरोधी है वह। कर रहा है यज्ञ उन्मत्त होकर।।४६।। जाकर वहाँ कर दो यज्ञ का विध्वंस। न बच पाये कोई देवता, गंधर्व। कोई भी हो ब्रह्मा, इंद्र या यम। कर दो इन सभियों का भस्म।।४७।। भस्म करके आओ तुम मेरे पास। दधिची को न मानकर बन गए विरोधक। दक्ष को पत्नी बांधवों सहीत। दे दो उनको तीलांजली जलाकर।।४८।। करके शिवजी को सादर प्रणाम। ले लिया उसने गण देवियोंको साथ। आ गया यज्ञ स्थान पर वीरभद्र। देखा सारे ऋषी, देव, गण है उपस्थित।।४९।। वीरभद्र ने किया इंद्र, विष्णु का परिहास। ललकारा उनको आओ करने युध्द। कर दिया उनको त्रिशूल से घायाल। भय से सभी गए वहीसे भाग।।५०।। युध्द से भागकर पहुँचे विष्णु के पास। बोले यज्ञ की रक्षा करो रमानाथ। आ गया है वीरभद्र यज्ञस्थान। कर रहा है वह सबका संहार।।५१।। आ गये विष्णु यज्ञस्थानपर स्वयम्। हुआ वीरभद्र और विष्णु में युध्द। किया वीरभद्र ने शिव का स्मरण। मार गिरा दिये विष्णु के पार्षद।।५२।।

विष्णु के वक्षस्थानपर मारा त्रिशूल। गिरपडे भू पर विष्णु घायल होकर। होश आनेपर लिया सुदर्शन। अद्‌भूत तेजसे वीरभद्र ने रोका चक्र।।५३।। उठाया विष्णुने अपना शाङ्‌र्गधनुष। वीरभद्र ने शरसे किए टुकडे तीन। ब्रह्माने विष्णु को दिया परिचय। हो गए तब विष्णु अंतर्धान।।५४।। पुत्र शोक से ब्रह्मा भी हूए अंतर्धान। पहूँचे दोनोंही अपने अपने लोक। इधर वीरभद्र ने मचाया बडाप्रलय। ब्रह्माजी बैठे रहे सोंच में चिंतीत।।५५।। वीरभद्रने तभी देखा यज्ञ भगवान। भाग रहे थे वे भृगुरुप धारण कर। पकडा उनको वीरभद्रने तुरंत। मार दिया उनको उनका सिर काटकर।।५६।। प्रजापति, धर्म, अरिष्टनेमि, कश्यप। इन सभी मुनियों को पकड पकड कर। मारा वीरभद्रने सभीं को लातोंसे। कर दिया सब मुनियों को उसने त्रस्त।।५७।। पकडी उसने देवमाता सरस्वती की नाक। अपने नखोंसे काट डाला अग्रभाग। वीरभद्रने पकडा अन्य देवताओंको। मारा पृथ्वीपर पटकर उनको।।५८।। आया शिव का मणिभद्र नाम गण। उसने भृगु के छातीपर पैर रखकर। उखाड डाली भृगु की दाढी पकडकर। हँसे थे पूषा जब हुए शिव शापित।।५९।। पकडा उसको शिवगण ने चण्डनामक। उखाड दिए उसने पूषा के दाँत। क्रोधित शिवगणोंने किया यज्ञभ्रष्ट। विसर्जित किया उन्होंने मलमुत्र विसर्जित।।६०।। कर दिया दक्ष का यज्ञ उन्होंने भ्रष्ट। वेदी के भीतर छीप गये थे दक्ष। वीरभद्र ने निकाला दक्ष को पकडकर। तोड दिया दक्ष का शिर मरोडकर।।६१।। फेक दिया वह शिर वीरभद्रने अग्निमें। किया शिवजी की आज्ञा से कार्य पूर्ण। आ गए वीरभद्र कैलाश परवतपर। शिवजी को मिलकर किया प्रणाम।।६२।। बोले आपकी आज्ञा से किया कार्य। किया शिवको सब समाचार निवेदन। वीरभद्र को सुनकर हुए शिवजी

प्रसन्न। बना दिया वीरभद्र को गणोंका नायक।।६३।। उधर सब देवता पहुँचे ब्रह्माके पास। किया उनको सब समाचार निवेदन। ब्रह्मा सोचने लगे ऐसे समयपर। मैंने क्या करना रहेगा उचित।।६४।। किया ब्रह्माने विष्णुजी का ध्यान। उससे प्राप्त हुआ ब्रह्माको ज्ञान। गये ब्रह्माजी तब वैकुण्ठ लोक। विष्णु की स्तुती करके दिया समाचार।।६५।। बोले विष्णुजी ब्रह्माको तब। दक्ष प्रजापती ने किया है बडा अपराध। नही दिया शिवजी का यज्ञभाग। परमेश्वरी सती का किया अपमान।।६६।। इसलिए उचित है हम सब मिलकर। शिवजी के चरण मे जाएँ शरण। चरण पकडकर करेंगे उन्हें प्रसन्न। अन्यथा ब्रह्माण्ड में होगा प्रलय।।६७।। कहकर विष्णु, ब्रह्मा, देवता अन्य। पहूँच गये सब कैलास परबतपर। देखा अलकापुरी से आगे विशाल वटवृक्ष। योगियोंसे सेवित थे शिव विराजमान।।६८।। चारो ओर थे शिवजी के सबगण। यज्ञों के स्वामी कुबेर थे उनके साथ। पहूँच गये विष्णु ब्रह्मादि शिव के निकट। किया सभी ने प्रणाम बार-बार।।६९।। किया उन्होंने शिव का स्तवन। बोले महेश्वर, आप है दया के सागर। आपकी कृपाबिना हो गए हम भ्रष्ट। आये आपके शरण में हो जाईए प्रसन्न।।७०।। कीजिए हमारी रक्षा हमे बचाइए। आप ही आकर कीजिए यज्ञ पूर्ण। अवशिष्ट यज्ञ में हम सब मिलकर। देंगे आपको सम्मानसे यज्ञभाग।।७१।। बोले,‘‘शिवजी, आप है कृपासागर। कीजिए सबकी रक्षा प्रसन्न होकर। भगदेवता की आँखे ठीक हो जाए। यज्ञ का यजमान दक्ष हो जीवित।।७२।। पूषा को भी दाँत हो जाएँ। भृगु की फिर पहले की समान। उसकी दाढी फिरसे ठीक हो जाएँ। मिले आप की कृपासे सभी को आरोग्य।।७३।। तब बोले शिवजी देखेंगे भगदेवता। सूर्य की नेत्र से देखेंगे वे यज्ञभाग। हो जाएँगे ठीक पूषा के सब दाँत। कर

सकेंगे पूषा यज्ञभाग का उपयोग।।७४।। भृगु जो है मेरा बडाही विरोधक। फिर भी बकरे जैसी पाएगा दाढी वह। मेरे गणोंद्वारा त्रस्त किए गए देवता। ठीक हो जाएँगे उनके टूटे हुए अंग।।७५।। यज्ञ के सभी अध्वर्यु होंगे प्रसन्न। कहकर इतना परम भगवान शिव हुए मौन। शिव का कहना सुनकर हुए सब मुदित। सभी देवताओंने दिया शिव को धन्यवाद।।७६।। प्रसन्न होकर बोले शिवजी सबको। वस्तुतः मैं क्रुध्द हूँ पर क्षमा करता हूँ तुमको। दक्ष यज्ञ का विध्वंस मैने नही किया। लेकिन बुरा चाहनेवाले का बुरा हुआ है।।७७।। देखो दक्ष ही है उस यज्ञ का शिर। अतएव होगा बकरे जैसा उसका शिर। मेरे गणोंने कर दिया यज्ञ का विध्वंस। मेरी कृपा से ठीक हो जाएगा सब।।७८।। तब देवर्षियों सहीत सबने विनम्रता पूर्वक। शिवजी को किया यज्ञ में आमंत्रित। ब्रह्मा, विष्णु तथा समस्त देवगण। गए कनखल जहाँ था दक्ष का यज्ञ।।७९।। भगवान शंकरने भी वहाँ पहूँचकर। वीरभद्रने भंग किया यज्ञ का निरीक्षण। बादमें शंकरने वीरभद्र को बुलाकर। हँसकर बोले सबको दिया दंड कठोर।।८०।। जाओ अब लेकर आओ दक्ष का शरीर। वीरभद्रने सामने रखा शिररहीत शरीर। शिवने पूछा कहाँ है इसका शिर। वीरभद्र बोले कर दिया यज्ञ में हवन।।८१।। बोले शिवजी सब देवताओंको तब। पहले ही मैने तुमको कहा था यह। कहकर शिवने हाथ लिया बकरे का शिर। दिया जोड दक्ष के शरीर को शिर।।८२।। शिर जोडकर कृपा दृष्टिसे उसको देखा। तुरंत ही दक्ष जीवित हो गया। उठकर दक्ष प्रसन्नचित्त हो गया। उसने शंकर भगवान का दर्शन किया।।८३।। भगवान का दर्शन करते ही हुआ ऐसा। दक्ष का कलुषित हृदय निर्मल हुआ। दक्षने बडी विनम्रतासे सिर झुकाया। और वह शिव का स्तवन करने लगा।।८४।।

शिवजीने दक्ष को आशीर्वचन दिया। ब्रह्मा, विष्णु देवताओंने शिवस्तवन किया। सभी को कृपा से शिवने संतुष्ट किया। उसके बाद शिवजी चले गए यज्ञशाला।।८५।। देखा उन्होंने जल गया था सतीशरीर। देखकर भगवान शंकर हो गये दु:खित। देखकर भगवान शंकर करने लगे शोक। पुकारने लगे 'सती-सती' बारबार।।८६।। जाकार उठाया सती का चिन्मय शरीर। रख दिया अपने कंधेपर सती शरीर। दु:खसे शिवजी हो गये थे विक्षिप्त। भटकने लगे देश में इधर उधर।।८७।। रुक गया सारे संसार का चक्र। लगने लगा अब आयेगा प्रलय। ब्रह्मा आदि देवता हो गए भयभीत। करने लगे सब विष्णु का आराधन।।८६।। बोले सब विष्णु भगवान को तब। करो आपही कोई ऐसा उपाय। सती को भूलकर शिव हो जाए पूर्ववत्। तभी टल जायेगा ये बडा प्रलय।।८९।। विष्णु भगवान सबको बोले मुस्कुराकर। शिव को सती न सकती कभी भूल। न कभी भूल सकेंगे सतीको शिव। सती और शिव है एक, नही वे भिन्न।।९०।। त्रैलोक्य रक्षक विष्णुजी को बोले सब। फिर आपही बचाइए, रोकीये प्रलय। रोकीए सब कीजिए शिव का मन शांत। आपही सबके तारक हम आपके शरण।।९१।। फिर विष्णुने किया शिव-शिवा का स्मरण। मानो उनकी आज्ञासे चलाया सुदर्शन। काट डाले उन्होंने भगवती सती के अंग। हो गये भगवती के अंग छिन्न-भिन्न।।९२।। छिन्न-भिन्न होकर सती के अंग। जाकर गिरे अनेक स्थानोंपर। शिव और सती दोनो है एकरुप। इसीलिए शिव ने की लीला और एक।।९३।। शरीर के खंड गिरे अनेक स्थानोंपर। उन्हीं अनेक हर एक स्थानोंपर। शिवजी की अनेक मुर्तिंया होगयी प्रकट। उनसे अनेक स्थान हो गए उत्पन्न।।९४।। तब देवाताओं को सब बोले शिव। सुनिए सब मेरे ये वचन।

इन स्थानों पर आकर भक्तिपूर्वक। करेंगे शिवा सती की उपासना मन लगाकर।।९५।। मिलेगा उन सब को सर्वश्रेष्ठ फल। नही रहेगा उनको कुछ भी दुष्प्राप्य। होंगे प्राप्त संसार के सब पदार्थ। हो जाएगा जीवन मंगलकारक।।९६।। इसका कारण जहाँ जहाँ शक्तिने। त्यागा है अपने शरीर का खण्ड। वहाँ वहाँ रहेगा उसका निरंतर निवास। होंगे ये स्थान जगमें प्रसिध्द।।९७।। 'सिध्द देवी पीठ'नामसे होंगे ख्यात। सभी स्थान रहेंगे पुण्यफलदाय। उनमें काशी और कामाख्या प्रमुख। इन स्थानों का महत्त्व रहेगा विशेष।।९८।। इतना कहकर हो गए शिव अधीर। किया शिव ने उन स्थानोंपर निवास। करने लगे वहाँ जप और ध्यान। तथा समाधिद्वारा बिताने लगे समय।।९९।। उनस्थानों के बारे में करुँगा बयान। है स्वामीजीका वरदहस्त सिरपर। स्वामी आज्ञासे ही किया शब्दांकीत। सतीशिव चरीत्र जो है शब्दातीत।।१००।।

।। श्रीकामाख्या माताजीके चरणोंमे समर्पित। परमपूज्य स्वामीजीकें चरणोंमे समर्पित।।

।। अध्याय तिसरा ।।

श्री गणेशाय नमः। श्री दत्तात्रेयाय नमः। श्री स्वामी समर्थाय नमः। श्री सरस्वत्यै नमः।
श्री कुलदेवताय नमः। श्री कुलस्वामिन्यै नमः। श्री कामाख्यादेव्यै नमः। श्री ग्रामदेवताय नमः।

जय जय जय गणपती राजा। मंगल भरण करण शुभकाजा। देकर ज्ञान हटावे अज्ञान हमारा। जीवनमें बस तू ही सहारा।।१।। जय जय जय सरस्वती माता। है तू ही चारों वाणी की कर्ता। सरस्वती शारदे तू बुध्दीदाता। इस गणेश पर कीजिए कृपा।।२।। सती देवी का शरीर लेकर। घुम रहे थे सदाशिव इधर उधर। ब्रह्मांड में मच गयी हलचल। मानो आयेगा बहुत बडा भूचाल।।३।। ब्रह्माजी की विनंती सुनकर। किया विष्णुने शिवसती का ध्यान। फिर हाथ में लेकर सुदर्शन। किया सती का शरीर छिन्नभिन्न।।४।। गिर गये सती के छिन्नअंग। भिन्न भिन्न जगह भूपर। हो गए वे सारे स्थान प्रसिध्द। कर रही देवी सती निवास उधर।।५।। सती के प्रेम से हो गए प्रकट। हर एक जगह पर स्वयं सदाशिव। हो गए उनके नाम अलग अलग। है ये सारे प्रसिध्द स्थान विख्यात।।६।। जो कोई भक्तिभाव पूर्ण होकर। जायेगा भक्तिसे इन स्थानोंपर। सदाशिव और शक्ति का करके पूजन। करेगा उनका प्रेम से आराधन।।७।। हो जाएँगे शिवसती दोनों प्रसन्न। करेंगे वे हर एक कामना पूर्ण। दे देंगे उनका सभी प्रकारेके वरदान। हो जाएगा जीवन सुख संपन्न।।८।। जहाँ जहाँ पर गिरे सती के अंग। हो गए शक्तिपीठ उन स्थानों पर। है ऐसे देवीके बावन्न शक्तिपीठ। करता हूँ अभी उनका बयान।।९।।

गिर गया सती का ब्रह्मरन्ध्र। हिंगुला इस नाम के स्थानपर। हो गया प्रसिध्द हिंगुला शक्तिपीठ। कर रही सती वहाँ निवास।।१०।। उसी स्थानपर हुए प्रकट शिव। देवी कोटारी और भीम लोचन भैरव। है जागृत शिवसती का ये स्थान। रहते हैं यहाँ सती सदाशिव।।११।। देवी के तीनो चक्षु गिर गए। करवीये शर्कराय नाम स्थान पर। रहते है सतीशिव इसी स्थानपर। देवी महिषमर्दिनी और क्रोधिश भैरव।।१२।। गिर गई नासिका सुगन्धाय स्थानपर। है यह देवी का स्थान सुविख्यात। रहते देवी सुगन्धा और त्र्यंम्बक भैरव। देते है दोनो अपने भक्तों को वरदान।।१३।। गिरा देवी का कण्ठ काश्मीर। देवी भगवती और महामाया का स्थान। त्रिसन्धेश्वर अमरनाथ तीर्थ भैरव। रहते है जागृत इसी स्थानपर।।१४।। ज्वालामुखी स्थान में सती की। जिह्वामुखी स्थान में सती की। जिह्वा (जिव्हा) जाकर गिर गई। रहती है यहाँ अम्बिका देवी। और रहते है उन्मत्त भैरव।।१५।। वामस्तन गिरा जलन्धर स्थान। हुई देवी त्रिपुरमालिनी प्रकट। रहते हैं यहाँ भीषण भैरव। होते हैं दोनो भक्तोंपर प्रसन्न।।१६।। गिर गया हृदय वैद्यनाथ स्थान। रहती यहाँ देवी जय दुर्गा नाम। शिव रहते भैरव वैद्यनाथ नाम। दोनों दिखाते लीला अगाध।।१७।। दोनो जाँघे गिर गए नेपाल। है यहाँ देवी महामाया नाम। रहते हैं यहाँ कपाली भैरव। है यह स्थान भी जागृत।।१८।। सती के बाएँ हाथ का आधाभाग। गिर गया मानव क्षेत्र स्थान। रहती यहाँपर देवी दाक्षायणी नाम। रहते है उसके साथ अमर भैरव।।१९।। गिरी नाभी उत्कल विराज क्षेत्रपर। देवी विमला नाम से हुई प्रकट। रहते है यहाँपर जगन्नाथ भैरव। दोनों होते है भक्तिसे प्रसन्न।।२०।। गण्डकी नदी के मध्य स्थान। गिर गया देवी का दाहिना गाल। है यहाँ देवी गण्डकी चंडी नाम। हैं यहाँपर

चक्रपाणि भैरव।।२१।। गिरा सती का वाम बाहु। बेहुलाय इति प्रसिध्द स्थान पर। है यहाँ देवी बहुला नाम। रहते है यहाँ भीरुख भैरव।।२२।। है यह स्थान कटवा पश्चिम। दिशा में केतु - बर्दवान। यह है जिला इसमें मौजुद। है शिव-सती का प्रसिध्द स्थान।।२३।। देवी सती की दक्षिण कोहनी। गिरी स्थान में नाम उज्जैनी। रहती है यहाँ देवी मंगलचण्डी। हैं यहाँ पर कपिलम्बर भैरव।।२४।। सती के दाहिने हाथ का आधा भाग। गिरा चटगाँव नाम स्थानपर। हुई देवी भवानी नाम प्रकट। करते निवास यहाँ चंद्रशेखर भैरव।।२५।। गिर गए देवी के दोनो कान। करनाट नाम कें स्थान पर। यहाँ देवी जयदुर्गा हुई प्रकट। रहते उसके साथ अभीरुरख भैरव।।२६।। गिरा देवी का दाहिना चरण। त्रिपुरा नाम के स्थान पर। त्रिपुरसुन्दरी हुई प्रकट यहाँपर। रहते हैं यहाँ त्रिपुरेश भैरव।।२७।। कामरुप देश में है यह स्थान। यह स्थान कामाख्या योनि मण्डल। आता है इसके अंतर्गत कामरुप। कामाख्या का ही है यह स्थान।।२८।। गिर गया देवी सती का वामपाद। त्रिसोताय नाम के स्थान पर। है देवी भ्रामरी यहाँ जागृत। रहते है यहाँ ईश्वर भैरव।।२९।। कामाख्या का नाम है कामरुप। है यह स्थान बडा विख्यात। देवी की महामुद्रा याने योनिपिठ। गिरा है इस कामरुप स्थानपर।।३०।। रहती है सती देवी कामाख्यारुप। है यह देवी का स्थान जागृत। यहाँपर ही है उन्मादक भैरव। शिव-सती दोनो है वरप्रदायक।।३१।। सती की दोनो हाथों की अंगुलियाँ। गिर गई प्रयाग नाम स्थान पर। हो गई देवी ललिता प्रकट। उसके साथ रहते है भवभैरव।।३२।। गिरगई वामजंघा देवी की। नाम इस स्थान का जयन्ती। हुई यहाँ पर प्रकट जयन्ती देवी। रहते हैं यहाँ क्रमदीश्वर भैरव।।३३।। देवी की दाहिने पैर की अंगुलियाँ। गिरगई

कालीघाट स्थान पर। हुई प्रकट वहाँ देवी कालिका। रहते नकुलेश्वर भैरव यहाँ पर।।३४।। सती देवी का मुकुट गिर गया। किरीट नाम के स्थान पर। हो गई यहाँ प्रकट देवी विमला। हैं यहाँपर सम्बर्थभैरव।।३५।। सती देवी के कान का कुण्डल। गिर गया वाराणसी स्थान पर। विशालाक्षी देवी करती यहाँ निवास। रहते है यहाँ पर कालभैत्त्व।।३६।। देवी सती की पीठ गिरगई। कोन्नाश्रम नाम स्थान पर। रहती है यहाँ सर्वाणि देवी। है यहाँपर निमिषभैरव।।३७।। दाहिने पैर का गुल्फ(एड़ी)। गिर गया कुरुक्षेत्र स्थान पर। देवी सावित्रिरुप यहाँ निवास। रहते हैं यहाँ भैरव अश्वनाथनाम।।३८।। गिरी सती के कर की ग्रन्थि। मणिबंध नाम के स्थानपर। इुई प्रकट वहाँ देवी गायत्री। हैं यहाँ पुष्कर में सर्वानन्द भैरव।।३९।। देवी सती की ग्रीवा गई गिर। श्रीहट्ट नामस्थान पर। देवी महालक्ष्मी हुई यहाँ प्रकट। सबरानन्द भैरव रहते यहाँ पर।।४०।। सती के शरीर हड्डी का ढाँचा। कांची देश में जाकर गिरा। हुई देवी वेदगर्भा यहाँ प्रकट। पं. बंगालबोलपुर में यहाँ रुरुभैरव।।४१।। गिरा सती का वाम नितम्ब। कालमाधव नाम के स्थानपर। देवी काली हुई प्रकट यहाँपर। है यहाँ असितंग भैरव।।४२।। गिरा देवी का दक्षिण नितम्ब। सोननद नाम के स्थान पर। देवी नर्मदा करती यहाँ निवास। रहते है यहाँ भद्रसेन भैरव।।४३।। गिरा सती देवी का दक्षिण स्तन। स्थान है वह रामगिरी नाम। यहाँ देवी शिवानी हुई साक्षात। रहते है उसके साथ चन्द्र भैरव।।४४।। गिर गए देवी सती के केश। वृन्दावन नाम प्रसिध्द स्थान पर। हुई है प्रकट यहाँ देवी उमा। उसके साथ है यहाँ भूतेश भैरव।।४५।। गिरी ऊर्ध्वदन्त पंक्ति देवी की। सूचीदेश नाम के स्थान पर। हुई प्रकट यहाँ देवी नारायणी। रहते है संहारभैरव साथ।।४६।। गिर गई देवी की

आखोदन्त चौघड़। पंचसागर नाम के स्थानपर। इस स्थान देवी वाराही हुई प्रकट। रहते यहाँ महारुद्र भैरव।।४७।। देवी की जरयु गिर गई स्थानपर। करोनवा नदी के किनारे पर। देवी अपर्णा करती निवास। रहते यहाँ वामनभैरव।।४८।। गिरा देवी सती का दक्षिण गुल्फ। श्री पर्वत नाम के स्थान पर। देवी सुन्दरा हुई प्रकट यहाँ पर। यह स्थान लद्दाख है यहाँ नन्दभैरव।।४९।। गिरा सती देवी का वामगुल्फ। तमलक याने विभाष के स्थान पर। देवी भीमरुपा करती है निवास। रहते हैं यहाँ सर्वानन्द भैरव।।५०।। गिर गया देवी सती का उदर। प्रभास नाम पवित्र स्थान पर। देवी चन्द्रभागा का यहाँ निवास। मथुरा में यहाँ है रुक्तुतुन्द्रा भैरव।।५१।। गिर गया देवी सती का ऊर्ध्व ओष्ठ। भैरव पर्वत नाम के स्थान पर। हुई यहाँ पर देवी महादेवी प्रकट। रहते यहाँ लम्बकर्ण नाम भैरव।।५२।। देवी की जंधा मगध स्थान। देवी सर्वानन्दकरी करती निवास। रहते है यहाँ व्योमकेश भैरव। देते दोनों भक्तों को वरदान।।५३।। सती देवी की ठुड्ढी याने चिबुक। गिर गई जनस्थान नाम स्थानपर। देवी भ्रामरी हो गई यहाँ प्रकट। यहाँ खानदेश में है विक्रीतक्ष भैरव।।५४।। देवी सती का वाम दंड। गिर गया गोदावरी तीर पर। करती यहाँ देवी विश्वमातृका निवास। हैं यहाँ दन्तपाणि नाम भैरव।।५५।। देवी सती के शरीर का दक्षिण स्कन्ध। गिर गया रत्नावली नाम स्थान पर। करती है यहाँपर देवी कुमारी निवास। है मद्रास में, यह है शिव भैरव।।५६।। देवी के दाहिने पैर का अंगूठा। खीरग्राम नाम स्थान में गिरा। रहती है यहाँ पर देवी योगाद्या। क्षीर खण्डक भैरव रहते हैं यहाँ।।५७।। सती के शरीर का वाम स्कन्ध। गिर गया मिथिला नाम स्थान पर। देवी महादेवी का है यह स्थान। रहते है यहाँ पर महादेव भैरव।।५८।। देवी

सतीजी की कंठनली। गिर गयी स्थान में नाम नलहटी। रहती है यहाँ पर कालिका देवी। योगीश भैरव का स्थान है यही।।५९।। देवी सतीजी के शरीर से उसका मुंड। जाकर गिरा कालीघाट स्थान पर। है यह देवी जयदुर्गा का स्थान। यहाँ कटवा में रहते क्रोधिश भैरव।।६०।। सती देवी का मन: भ्रूमध्य। गिर गया बक्रेश्वर नाम स्थान पर। देवी महिष मर्दिनी का ये स्थान। रहते हैं यहाँ बक्रनाथ भैरव।।६१।। इसी स्थान का नाम दुवराजपुर। आये थे यहाँ महामुनि अष्टवक्र। यहाँ पर उनको सिध्दि हुई प्राप्त। इसलिए भी यह स्थान है प्रसिध्द।।६२।। देवी सतीजी का पानीपद्म। गिरा जशोर ईश्वरीपुर स्थान पर। हुई है देवी यशोश्वरी यहाँ प्रकट। रहते है उसके साथ चण्डभैरव।।६३।। सती देवीजी का अध: ओष्ठ। गिर गया अट्टहास स्थान पर। यहाँ है देवी फुल्लरा का निवास। है विश्वेश भैरव उसके साथ।।६४।। देवी सती के गले का हार। गिर गया नन्दीपुर स्थान पर। हुई है देवी नन्दिनी प्रकट। रहते हैं यहाँ नन्दिकेश्वर भैरव।।६५।। देवी सतीजी के नूपुर। गिर गए लंका नाम स्थान पर। हुई यहाँ देवी इन्द्राक्षी प्रकट। रहते यहाँपर राक्षेश्वर भैरव।।६६।। सती देवीजी की वाम पादांगुली। विराट नाम स्थान पर गिरी। हुई प्रकट इस स्थान अम्बिका देवी। रहते यहाँ अमृतभैरव भी।।६७।। इसप्रकार हुए देवी के जागृत स्थान। जहाँ जहाँ गिरगए देवी के अंग। सती के प्रेम में करते शिव निवास। उन्हीं स्थानों पर भैरव बनकर।।६८।। करते हैं यहाँ तपस्या भैरव। रहती है देवी माँ जागृत। करता है जाकर कोई इन्सान। भावभक्तिपूर्वक उनका आराधन।।६९।। होते दोनो सती सदाशिव। उनकी भावना देखकर प्रसन्न। भक्ति की भावना है महत्त्वपूर्ण। नही है उसे कुछ भी दुष्प्राप्य।।७०।। भगवान शंकर तो है आशुतोष। होते है वे

शीघ्र प्रसन्न। औघडदानी है शिव सदाशिव। देते हैं भक्तों को आशीर्वाद वर।।७१।। होता है प्रसन्न देखकर भक्ति। देते भक्तों को वर पसंद की। अपने वर से शंकर औघडदानी। मिटाते है ब्रह्मा की भाग्य लेखनी।।७२।। देखकर ये बाते शिवजी की। हो गए बहुत क्षुब्ध ब्रह्माजी। गए भवाजी के पास ब्रह्माजी। कियी निवेदन बात अपनी।।७३।। इस सृष्टिक्रम का कार्य। आपने ही सोपा है मुझे वह। उसमें भोलेनाथ डालते है विघ्न। मिटा देते मैने लिखा हुआ भाग्य।।७४।। लिखता हूँ मैं प्राणिमात्रों का भाग्य। परंतु शिवजी होकर प्रसन्न। देते भक्तों को आयु अधिक। जाती है मेरी लेखनी मिट।।७५।। इससे बढ़ता है धरती का भार। बढता है विष्णु का पालन कार्य। देखकर मैं पूर्वजन्म का पापपुण्य। लिखता रहता हूँ प्राणियों का भाग्य।।७६।। लेकिन मृत्युलोक वासी मनुष्य। करते है शिव को भक्तिसे प्रसन्न। होते है शिवजी प्रसन्न उनपर। बदलते है शिवजी यह कालचक्र।।७७।। नही करते है ये भगवान शंकर। अपनी संहार शक्ति का प्रयोग। यह तो आपकी आज्ञा का उल्लंघन। इस से घटता है मेरा महत्त्व।।७८।। ब्रह्माजी की ये बात सुनकर। बोली देवी तब मुस्कुराकर। हे चतुर्मुख मत भूलो तुम। मैंने ही किया तीनों को उत्पन्न।।७९।। और तुम तीनों का कार्य। और देती हूँ तुमको मैं महत्त्व। मेरी शक्तिसे ही करते हो कार्य। असल में मैं ही करती हूँ कार्य।।८०।। मैं ही हूँ तीनो गुण। सत्त्व और रज और तम गुण। इन तीनों गुणोंसे रचाती हूँ सृष्टि। पालन और संहार करती हूँ।।८१।। छीन लूँ यदि तुमसे तुमारी शक्ति। हो जाओगे निष्प्राण तीनो ही। तुम्हारे और विष्णू द्वारा का कार्य भी। शिवजी का कार्य भी प्रेरणा मेरी ही।।८२।। फिर भी दूँगी मैं शिव को सीख। न दे वरदान प्रसन्न होकर। दे दूँगी मै स्वयं ही चाहूँ जब। वरदान भक्तों को रहे

यह ध्यान।।८३।। और सुन लो तुम भी एक। जो कहती हूँ वह मेरी बात। मैं तुम्हे भी मिटा सकती हूँ। मेरे सामने तुम्हारी भाग्य लेखनी क्या चीज।।८४।। सुनकर ब्रह्मा लौट गए ब्रह्मलोक। करने लगे फिरसे वो अपना कार्य। करके शिव की तपस्या भस्मासुरने। कर लिया उसने शिव को प्रसन्न।८५।। दिया शिवजीने उसको दर्शन। बोले उसे माँग लो वरदान। देवी की प्रेरणासे माँगा वरदान। जिसके सिर रखूँ हाथ हो जावे भस्म।।८६।। भोलेभाले शिवजी बोले तथास्तु। वरदान से हुआ संतुष्ट भस्मासुर। सोचा देखूँगा वरदान आजमाकर। रखूँगाा शिव के सिरपर ही हाथ।।८७।। दौडा शिव के पीछे बढाकर हाथ। भयभीत होकर भाँगने लगे शिव। नही रहा संहार शक्ति का ध्यान। थक गए किया भगवती का ध्यान।।८८।। किया देवी ने विष्णु को प्रेरीत। आये विष्णु पार्वतीरुप लेकर। पूछा भस्मासुर को कहाँ रहे भाग। मैं तो रही थी तुम्हें खोज।।८९।। बोले क्यों रहे शंकर के पीछे भाग। वह बावला, भांग धत्तुरे में मस्त। हुआ भस्मासुर बहुत आनंदित। बोला चलो तुम अब मेरे संग।।९०।। बाले विष्णु जो पार्वती रुप। मैं तो हूँ चलने को तैयार। लेकिन है कन्या का अधिकार। देखे है क्या तुझमें पती के गुण।।९१।। ले लो परीक्षा बोले भस्मासुर। हैं मुझमें शंकर के सभी गुण। मुझे पसंद है उनका यह नाच। रखते है दाहिना हाथ सिरपर।९२।। फिर नाचते है वे पैर मोडकर। दिखाओ उस प्रकार नाच के तुम। देवी की प्रेरणासे भूल गया वरदान। रखा सिरपर उसने दाहिना हाथ।।९३।। वैसे ही भस्म हो गया वह असुर। शिव भी जान गए अपनी भूल। देने लगे वर वे अब सम्भलकर। हो गई ब्रह्मा की शिकायत दूर।।९४।। करने लगे शिव शक्ती का प्रयोग। करने लगे भाग्यलेखनी से मेल। सृष्टिक्रम में करने लगे मेल। चलाने लगे यथा

प्रकार सृष्टि का क्रम।।९५।। देवी भगवती ने किया इसप्रकार। ब्रह्मा,विष्णु, रुद्र को प्रेरित। सृष्टिपर एकाधिकार किया स्थापन। प्रकृति की चेतना रखी जागृत।।९६।। पुरुष और प्रकृति का है मेल। आपस में है उनका तालमेल। लेकिन पुरुष हमेशा है उदासिन। चलाती जगत् प्रकृति चेतनामय होकर।।९७।। देवी भगवती के विविध रुप। है विविधातार पर एकाधिकार। वास्तवमें है एक रुप चैतन्यमय। ब्रह्मा, विष्णु, महेश उसके ही रुप।।९८।। स्वामीजी तो सद्गुरु प्रेरणादायक। करते है बयान शक्ति का रुप। नही तो चैतन्य, शक्ति सभी अमूर्त। करते कार्य लेकर सगुण रुप।।९९।। स्वामीजीं को करता हूँ प्रणाम। स्वामीजी ही करते है बयान। भगवती माहात्म्य भवानी कार्य। उनके चरणोंमे है शतशः वंदन।।१००।।

।। श्रीकामाख्या माताजीके चरणोंमे समर्पित। परमपूज्य स्वामीजीकें चरणोंमे समर्पित।।

।। अध्याय चौथा ।।

श्री गणेशाय नमः। श्री दत्तात्रेयाय नमः। श्री स्वामी समर्थाय नमः। श्री सरस्वत्यै नमः।
श्री कुलदेवताय नमः। श्री कुलस्वामिन्यै नमः। श्री कामाख्यादेव्यै नमः। श्री ग्रामदेवताय नमः।

सुखकर्ता दुःखहर्ता हे गजानन। आपके चरणों में मेरा नमन। रहे मेरे सर आपका कृपाहस्त। हो जावे मेरा सब कार्य सफल।।१।। मेरे सद्गुरु श्री स्वामी समर्थ। है उनका कृपाछत्र इस गणेशपर। उनकी प्रेरणा से करता हूँ लेखन। हो जावे मेरा लेखन प्रासादिक।।२।। सती-सदाशिव के चरणों में वंदन। है उनकी लीला न्यारी अगाध। हो गये उनके बावन्न शक्तिपीठ। देते है अपने भक्तों को वरदान।।३।। है ये सारे शक्तिपीठ महत्त्वपूर्ण। सती-शिव के निवास से है पावन। फिर भी काशी, कामाख्या हैं प्रमुख। इन दोनों का महत्त्व अनन्य साधारण।।४।। वैसे देखे तो अपना भारत वर्ष। है यह भूमि पावन पवित्र पुण्यक्षेत्र। भारतभूमि तो है मुक्तिक्षेत्र। बाकी अन्य स्थान भोगभूमि इससे अतिरिक्त।।५।। हमारे पुराण, इतिहास और साहित्य। कहते है भारतभूमि का महत्त्व। वृथा है अन्य स्थानों मे जन्म। भारत में जन्म होता है सार्थक।।६।। भारतवर्ष है बहुतही विशाल। इनमें हैं अनेको पुण्यप्रद स्थान। ये सारे पुण्यस्थान है अलौकिक। इन स्थानों को कहते है तीर्थक्षेत्र।।७।। करते जो यात्रा इन पुण्यक्षेत्रों की। होती है त्रिताप, वेदनाओंसे मुक्ति। मिलती उनको सान्त्वनापर अनुभूति। मिलती है तप्तत्रस्त मन को शांती।।८।। करनेसे संवेदनशील तीर्थोंका दर्शन। होता है मन भगवद्भक्ति से सिंचित।

होता है परमतत्त्व की कृपा का लाभ। होता है परमतत्त्व का अनुभव।।९।। भारतीय इतिहास में अनादि कालसे। सौंदर्य और भक्ति का समन्वय स्पष्टरुपसे। और मैं कहता हूँ एक बात। इन दोनों का समन्वय है प्रस्फुटीत।।१०।। भारतीयों की भक्ति भाव का मूल। अरुप सच्चिदानंद को करता मूर्तरुप। उसका सौंदर्य जो है अरुप अमूर्त। होता है अंतरात्मा में मूर्त प्रकट।।११।। इसीलिए प्राय: सभी तीर्थस्थान। है सोंदर्यक्रीडास्थलों में संस्थापित। उसी तरह यहाँ का हर एक मन्दिर। है शक्ति और सौंदर्य से परिपूर्ण।।१२।। इन मन्दिरों की स्थापत्य कला। तथा यहाँ की अवर्णनीय शिल्पकला। दिखाती है हिन्दु-धर्म की सभ्यता। वैसे ही करती दिग्दर्शन संस्कृतिका।।१३।। भारतीय संस्कृति की और विशेषता। उदार एवं सर्वसमावेशक धर्म इसका। इनमें समष्टि कल्याण की अधिकता। है समर्थन सृष्टिमंगलता का।।१४।। इसीलिए देखिए खुद सूक्ष्मता से। यहाँ की भगवान की उपासना में। चाहे हो गायत्री उपासना इसमें। विश्वजित यज्ञ तक कर्म सब हमारे।।१५।। सभी यज्ञ संपन्न है होते। विश्वकल्याण की ही भावनासे। हर व्यक्ति आब्रह्मस्तंभ पर्यंत। करते सब उपासना विश्वकल्याणार्थ।।१६।। स्वार्थप्रणोदित निज कल्याण साधन। नही यह सनातन धर्म का ध्येय। हमारे सब ऋषीमुनी पुरातन। थे पुण्यात्मा स्वार्थरहित कर्मकृत।।१७।। करते थे वे तीर्थस्थानों मे रहकर। जगद्हितार्थ ध्यान, तपश्चर्या, यज्ञ। इससे संलग्न रहकर किया जागृत। हो गये मुक्तिक्षेत्र पतित पावन।।१८।। इन ऋषीमुनियोंने करके साधना। देवदेवताओं को प्रसन्न किया।। जिससे तप मुमुक्षु साधकों का। हो जावे अत्यंत सहज सफल।।१९।। पहले ही कह दिया है मैंने यह। हो गये है सती-शिव स्थान इक्यावन्न। है हर एक पीठस्थान

पुण्यतीर्थ। करते है शिव-सती भक्तों को कृतार्थ।।२०।। इन पीठों मे कामाख्या यह महापीठ। माना जाता है यह सर्वश्रेष्ठ। रहती है जगदम्बा ब्रह्मज्योतिस्वरुप। भक्तों के मुक्ति के लिए विराजित। २१।। जान लो पीठ का पारम्पारिक अर्थ। पीठ याने निवास योग्य स्थान या आसन। जिन तीर्थों में महामाया अधिष्ठित। कहलाते है देवीपीठ या शक्तिपीठ।।२२।। कैसा हुआ उत्पन्न कामाख्या पीठ। इस बारे में है एक कथा प्रसिध्द। ब्रह्मा,विष्णु, महेश हुए आविर्भूत। सृष्टि,स्थिती , संहारके स्वामी बनकर।।२३।। परन्तु महायोगी जो सदाशिव। महायोग में रहते थे तल्लीन। इससे संसारक्रिया हुई स्थगित। अपना काम नही करते थे शिव।।२४।। यह तो है सर्वसाधारण नियम। करे हर एक निज कर्तव्य पालन। एक भी यदि न करे पालन। कार्य की शृंखला होती है भग्न।।२५।। इसलिए अपने पुत्र प्रजापति को। की आज्ञा, 'भगवती आराधना करो'। करके उसे प्रसन्न वरदान माँग लो। ले जन्म तुम्हारी पुत्री रुप में।।२६।। करो उसका विवाह महादेव से । रुद्र को स्वकर्मनिष्ठा वह बनाये। किया वैसा ही दक्ष प्रजापतिने। भगवती हो गई उसपर प्रसन्न।।२७।। कहा देवी ने प्रजापति को तब। ले लुँगी तुम्हारी कन्यारुप में जन्म। बनुँगी मैं सदाशिव पत्नी अवश्य। परंतु मेरा भी रहेगा प्रण।।२८।। यदि कदाचित करोगे अनादर। उसी समय कर दूँगी मैं देहत्याग। लिया भगवतीने जन्म सतीरुप। किया उसने सदाशिव का आराधन।।२९।। किया सती ने सदाशिव को प्रसन्न। हो गई सती शिव की पत्नी। शिव के साथ रही कैलासशिखर। सृष्टि का चक्र हुआ यथावत।।३०।। लेकिन एक समय में ऐसा हुआ। प्रजापति दक्ष ने बडा यज्ञ किया। यज्ञमें सती को नही बुलाया। शिव-सती का उसने अनादर किया।।३१।। इससे क्रोधित होकर

सती ने। किया देहत्याग दक्ष के सामने। भोलानाथ पडे बडे व्यामोह में। उठाया सती का शव कन्धे अपने।।३२।। वे ऐसे करने लगे विचरण। हो गया हा - हा - कार चारों ओर। देखकर गये ब्रह्मा विष्णुलोक। किया विष्णु ने शिव - सती का ध्यान।।३३।। लेकर अपने हाथ में सुदर्शन। किया सती का देह खण्डित। गिराया उसको विभिन्न स्थानोंपर। हो गए देवी के इक्यावन्न शक्तिपीठ।।३४।। सर्वश्रेष्ठ हिन्दु भारत पर्वत। कियी है उसने भारतसीमा सुरक्षित। हुई यहाँ सती की योनी-मुद्रा पतित। किया धारण उसने नीलवर्ण।।३५।। इसीलिए हो गया इसका नाम। 'नीलाचल' ऐसा ही हुआ प्रसिध्द। इस आचल की अधिष्ठात्री देवी। हुई प्रसिध्द वह कामाख्या नाम।।३६।। नही रहते कभी भी सदाशिव। अपनी देवी सती को छोडकर। हो गये यहाँपर शिवजी प्रकट। इस भैरव का नाम उमानन्द शिव।।३७।। सती देह होते ही कन्धेसे अलग। हो गए महादेव मन में स्वस्थ। चले गए सदाशिव हिमालय पर। हो गए शिवजी वहाँ ध्यानस्थ।।३८।। उन दिनों हुई थी एक बात। तारकासुर ने कियी ब्रह्मा की तपस्या बहुत। ब्रह्मा से उसने प्राप्त किया वर। लेकिन यह वर था बहुत ही अलग।। ३९।। रहेगा वह सदा ही अपराजित। केवल शिव का पुत्र ही आकर। करेगा तारकासुर को पराजित। उसके अलावा किसी को भी नही संभव।।४०।। सती ने तो कर दिया देहत्याग। हुए हिमालय में शिवजी ध्यानस्थ। इसीलिए खुद को अपराजित मानकर। करने लगा तारकासुर यथेच्छाचार।।४१।। हो गया पुरा त्रिलोक संत्रस्त। हो गए सभी देवता भी पीडित। शिव ने होना चाहिए गृहस्थ। सोचने लगे सब उसका उपाय।।४२।। तब हिमालयपत्नी मेनका भी। कामना से भुवनमोहिनी कन्या की। जगज्जननी महामाया

आदिशक्ति की। मनसे आराधना करने लगी।।४३।। हो गई आदिशक्ती महामाया प्रसन्न। लिया मेनका की कन्यारुप जन्म। देवलोक में सब हो गए मुदीत। भेजा नारद को हिमराज के घर।।४४।। नारद ने कहा हिमालय को तब। पार्वती का पति होगा महादेव। शिव परिचर्या में किया नियुक्त। पर शिवजी तो रहे अविचलीत।।४५।। करने महादेव का ध्यान भग्न। भेज दिए रति और कामदेव। हो गए कामदेव क्रोधग्नि में भस्म। चले गए महादेव अन्यत्र।।४६।। कियी पार्वती ने कठोर तपस्या। शिव हुए प्रसन्न देखकर आराधना। दिया पार्वती को वचन विवाह का। नारद को इस कार्य में नियुक्त किया।।४७।। किये सभी देवता निमंत्रित। पहूँच गए सब हिमालयपर्वत पर। तब रति का विलाप सुनकर। किया कामदेव को पुनः जीवित।।४८।। परन्तु न हुआ पूर्वरुप प्राप्त। स्तुती से करने लगे शिव को प्रसन्न। तब बताया शिवजी ने उसे उपाय। बोले देवी का एक पीठ है गुप्त।।४९।। है यह शक्तिपीठ नीलाचलपर्वत। जाओ तुम उस स्थान पर। कर दो सुंदर मंदिर का निर्माण। हो जाएगा तुम्हे पूर्वदेह प्राप्त।।५०।। पहुँचे कामदेव नीलाचल स्थान। किया उसने विश्वकर्मा को आवाहन। कामदेवने लिया विश्वकर्मासे सहयोग। विश्वकर्मा ने किया मंदिर निर्माण।।५१।। कामदेव की भक्ति, निष्ठा देखकर। हो गई महामाया उसपर प्रसन्न। दिया महामाया ने उसे वरदान। हुआ कामदेव को पूर्वस्वरुप प्राप्त।।५२।। इस प्रकार इसी नीलाचल प्रदेश पर। हुआ कामदेव को पूर्वदेह प्राप्त। हो गया यह स्थान प्रसिध्द। मिला इसे कामरुप ऐस नाम।।५३।। आज भी है यह स्थान विख्यात। कहते है इसे कामाख्या कामरुप। इसी नाम से है यह शक्तिपीठ। कामरुप कामाख्या नाम से प्रसिध्द।।५४।। (शम्भुनेत्राग्निदग्ध काम

शम्भोरनुग्रहात्। तत्र रुपंयतः प्राप कामरुपं ततोऽभवत्।। कालिका पुराण ५१/२) अर्थः शंकरजी के नेत्राग्नि में दग्ध कामदेवको शंकरजी के अनुग्रहसे अपना पूर्वरुप प्राप्त हुआ इसीलिए यह स्थान कामरुप नामसे विख्यात हुआ। अब कहता हूँ कामरुप राज्य। उसका विस्तार, उसका प्रदेश) प्राचीन काल में कामरुप राज्य। करतोया नदी से उसके पूर्व तक। दिक्कर वासिनी या दिक्राई नदी तक। फैला है यह स्थान विस्तृत।।५५।। (करतोया समारभ्य यावदिक्करवासिनी। कामाख्येति तं लोका गायन्ति गिरीनन्दिनी।।) कहता है योगिनी तंत्र। बटा चारभाग में कामरुप राज्य कामपीठ, रत्नपीठ, स्वर्णपीठ। और चौथा सौमारपीठ नाम।।५६।। स्वर्णकोष एवं रुपिका नदी। इनके मध्यभाग में है अवस्थित। है कामाख्या देवी स्वयंम्। उस स्थान का नाम कामपीठ।।५७।। है करतोया याने स्वर्णकोष। इस नदी के बीच स्थानपर। है रत्नपीठ नाम अवस्थित। है रत्नपीठ नाम से यह विख्यात।।५८।। है रुपिका तथा भैरवी नदी। इस नदी के मध्यभाग स्थान पर। स्वर्णपीठ स्थान है अवस्थित। यही स्वर्णपीठ नाम से प्रसिध्द।।५९।। भैरवी तथा दिक्रा नदी। इसे ही कहते है दिक्राई नदी। इस नदी के ही बीच बीच। है सौमार पीठ अवस्थित।।६०।। कहता है कालिका पुराण। था प्राचीन कामरुपराज्य प्रसिध्द। इसकी राजधानी थी ख्यात। प्राग्ज्योतिषपुर नाम से विख्यात।।६१।। कहा जाता है की इस स्थानपर। बैठकर किया ब्रह्मा ने सृष्टिप्रारम्भ। यहाँपर ही ब्रह्मा ने बैठकर। ग्रह तथा नक्षत्रादि का सन्निवेश।।६२।। यही है महत्त्व का कारण। मिला इसे प्राग्ज्योतिषपुर नाम। उसी कारण से हुआ यह स्थान। प्राग्ज्योतिषपुर नाम से प्रसिध्द।।६३।। वर्तमान में है यह आसाम राज्य। इस राज्य में है गौहाटी नाम स्थान।

हुआ यह गौहाटी नाम से ख्यात। कामरुप हुआ एक जिलें मे परिणत।।६४।। हैं प्रचलित इस कामरुप सम्बन्ध में। अनेकानेक आख्यायिकाएँ प्रचलित। तन्त्र, पुराण, रामायण, महाभारत में। अनेको अन्यान्य प्राचीन ग्रन्थों में।।६५।। आज भी प्रचलित है दन्तकथाएँ। नाना कथाएँ देश देशान्तर में। कामरुप कामाख्या जादू के विषयमें। यह स्थान है प्रसिध्द देशमें।।६६।। नही थी प्राचीन काल में। यातायात सुविधा समान आजके। झेलने पडते थे नाना प्रकारके। कष्ट कामरुप पहूँचने के लिए।।६७।। कहते हैं यात्री उन दिनों में। पहुँच जाते थे कष्ट से कामरुप में। पर लौटने की कष्टों की डर से। उसी स्थानपर निवास करते थे।।६८।। अनेको यात्री यहाँ आते थे। इस सिध्द पीठ स्थान श्रध्दा से। होकर तन्मय उसी तपस्या में। नहीं लौट जाते वे घरमें।।६९।। ईसा की सातवी सदी में। प्रतापी भास्कर वर्मन नाम के। स्वधर्मनिष्ठ एक हिन्दु नृपति। थे अधीश्वर कामरुप राज्य के।।७०।। चिनी भ्रमणकारी हुयेन सांग। किया था उन्होंने भारतभ्रमण। लिख गये थे विवरण लेख। कामरुप स्थान के विषय में।।७१।। उनका लिखा हुआ विवरण लेख। है यह बहुत ही चित्ताकर्षक। देश के बारे में है यह लेखन। यह लेखन देश गौरव का विषय।।७२।। आंग्ल शासन में यातायात व्यवस्था। बढ गयी परिवहन सुविधा। इस कारण दिन प्रति दिन बढी। धर्मप्राण हिन्दु यात्री संख्या।।७३।। कहा गया है तन्त्रपुराणों में। त्रेतायुग में पृथ्वी के गर्भ से। वराहावतार नारायणसे। पुत्र हुआ नरकासुर नामक।।७४।। राजा जनक के घरमें हुआ। इस नरकासुरका पालनपोषण। इस कारण यदि यह असुर था। आचार व्यवहार था आर्यो समान।।७५।। विष्णु ने स्वयं किया अधिष्ठित। इस असुर को कामरुप राज्याधिकार। तभी दिया था उसे

निर्देश। न करना देव ब्राह्मणों का विरोध।।७६।। न करना कभी स्त्रियों का अपमान। अर्यों समान रखना बर्ताव। कही थी एक बात और। न करना उपासना कामाख्या अतिरिक्त।।७७।। और अन्य देवताका आराधन। करना होगा इस उपदेश का पालन। यदी करोगे बर्ताव इससे अतिरिक्त। समझो तुम्हारी मृत्यु आयी निकट।।७८।। बन गया था असुर ये दुर्धष। तभी और किरातराज घटक। किया नरकासुर ने इनका वध। बनायी राजधानी प्राग्ज्योतिषपुर।।७९।। द्वापर के शेषांश में बाणासुर। हो गया यह नरकासुर का मित्र। हो गई नरकासुर को कुसंगती प्राप्त। करने लगा विष्णु की आज्ञा का उल्लंघन।।८०।। फैल गया त्रिभुवन में अत्याचार। असाह्य हुआ नरकासुर का दुराचार। ब्रह्माजी के उपदेशनुसार। आये देवता कामाख्या के शरण।।८१।। उनकी व्याकुल प्रार्थना सुनकर। हो गयी कामाख्या द्रवित। दिया कामाख्या ने होकर प्रसन्न। उन देवताओं को अभयदान।।८२।। बढ गया था नरकासुर का अत्याचार। है कालिका पुराण की कथा प्रसिध्द। आये थे वसिष्ठ कामाख्या दर्शनार्थ। नरकासुरने डाली बाधा उसमें।।८३।। हुए क्रोधित मुनि वसिष्ठ। किया उन्होंने नरकासुर को शापित। रहेगा तू जबतक जीवित। रहेगी कामाख्या देव अन्तर्धान।।८४।। (त्वं तावज्जीविता पाप कामाख्यादि जगत् प्रभुः) सर्वं परिकरैः सार्ध्दमन्तर्ध्दानाय गच्छतु।।(कालिका पुराण ३६/१८) (अर्थः जब तक तू जीवित रहेगा, तबतक जगदिश्वरी कामाख्यादेवी समस्त परिवारों के साथ अन्तर्धान रहेगी।) हुआ सत्य मुनिका शाप। मदान्ध नरक ने न की परवाह। है किम्वदन्ती की घमंडी यह। अपने ही घमंड मे बहुत मस्त।।८५।। कामाख्या को पत्नी बनाने का संकल्प। कर बैठा मस्तवाल असुरनरक। जाना महामाया ने अब

है सन्निकट। इस नरकासुर की मृत्यु निश्चित।।८६।। कहा कामाख्या ने उस असुर को। चारो ओर में इस नील पर्वत के। तुम सोपान पथ बनाओ। कामाख्या मन्दिर और विश्रामगृह बनाओ।।८७।। लेकिन ये सब होना चाहिए। प्रात: काल के पूर्व, बाद में नही। तब बनुँगी मैं तेरी पत्नी। असफल होने पर होगा तेरा अन्त।।८८।। किये असुर ने चारो सोपान। कर दिया उसने विश्राम कक्ष निर्माण। महामाया ने कुक्कुट द्वारा दियी बाँग। हो गया निशाकाल समाप्त।।८९।। हो गया नरकासुर बहु क्रोधित। पीछा करके किया कुक्कुट का वध। है यह स्थान ब्रह्मपुत्र के दुसरे तीर। 'कुक्कुटकाटाचकि ' नाम से प्रसिध्द।।९०।। भगवती की माया से इसके बाद। किया विष्णुने नरकासुर का वध। राजा हो गया उसका पुत्र भगदत्त। लेकिन हुआ भगदत्त का वंश लुप्त।।९१।। उसके बाद कामरुप राज्य। हो गया छोटे भागों मे विभक्त। लेकिन काल की गती के कारण। हुआ कामाख्या मंदिर ध्वंसप्राप्त।।९२।। नरकासुर के निंद्य कर्मोसे। तथा वसिष्ठमुनी की शाप प्रभावसे। हो गयी थी कामाख्या अप्रकट। अब मन्दिर की स्मृती हुई लुप्त।।९३।। हो गया यह स्थान जंगल व्याप्त। बन गया वन्य जीवों का निवासस्थान। अब हो गया यह वस्ती में विरल। रहते थे केवल म्लेंछ,क्रौंच जाति के लोक।।९४।। हो गया मंदिर पूर्णरुप मे उध्वस्त। हो गया मृत्तिका स्तूप में परिणत। नीलाचलवासियों ने कामाख्या पीठ। सजाकर दिया धर्माचरण का परिचय।।९५।। कामाख्या देवी का इतिहास। है बहुत रोचक प्रेरणादायक। है यह स्थान तबसे जागृत। देवी कामाख्या का यह निवासस्थान।।९६।। आज भी है यह स्थान प्रसिध्द। है पूर्वस्मृती भी जागृत। आते हैं दूर दूर से भक्तगण। पाते है देवी से पूर्ण वरदान।।९७।। स्वामी की प्रेरणा वरदहस्त। लिखता

हूँ मैं देवी माहात्त्म्य। पढकर इस माहात्त्म्य भक्त। प्राप्त करे अपने सब इप्सितार्थ। ।।९८।। मिले जीवन में सब ऐश्वर्य। हो जाए भक्तों का जीवन कृतार्थ। देती है देवी भोग और मोक्ष। हम सब है देवी के शरणागत।।९९।। श्री स्वामी समर्थ अनाथनाथ। रहे सदैव ऐसी आपकी कृपा। दीजिए मुझे वरदान सदा। रखता है गणेश चरणों मे माथा।।१००।।

।। श्रीकामाख्या माताजीके चरणोंमे समर्पित। परमपूज्य स्वामीजीकें चरणोंमे समर्पित।।

।।अध्याय पाचवा।।

श्री गणेशाय नमः। श्री दत्तात्रेयाय नमः। श्री स्वामी समर्थाय नमः। श्री सरस्वत्यै नमः।
श्री कुलदेवताय नमः। श्री कुलस्वामिन्यै नमः। श्री कामाख्यादेव्यै नमः। श्री ग्रामदेवताय नमः।

स्वामी समर्थ आपको मैं शरण। दीजिए मुझे आपका प्रसाददान। बयान करता हूँ कामाख्या माहात्म्य। हो जावे मेरा यह कार्य महान।।१।। बडा रोचक है और प्रासादिक। कामाख्या स्थान का पूर्वेतिहास। बडे प्राचीनकाल से है सुप्रसिध्द। काल की गतिसे हुआ था लुप्त।।।२।। १४८ की इसवी में कोचविहार प्रान्त में। कामतापुर के संस्थापक विश्वसिंह थे। अतिरिक्त उसके आहोम राज्य के। अन्य छोटे राजा थे आधीन उसके।।३।। यह घटना हुई थी उस समय। किया था उन्होंने नैश अभियान। पर उस अभियान के समय। हुई घटना बहुतही विचित्र।।४।। एक बार विश्वसिंह और भाई। हो गये दोनो फौज से अलग। पहूँच गए नीलपर्वत के उपर। रात के समय में हुए पिपासाकुल।।५।। देखा उन्होंने एक वृध्दा महिला। मृत्तिका स्तूप समीप कर रही थी पूजा। वह थी धद्मवेश में महामाया। देखकर उन्हे बडा आनन्द हुआ।।६।। जल के बारे में पूछने के लिए। दोनो उस महिला के निकट गए। जाना था महिला ने उनके विषयमें। फिर भी जलप्रपात दिखाया उसने।।७।। दोनो पानी पीकर हुए शांत। महिला से उनको हुआ ज्ञात। यह स्थान है बडा जागृत। उन दोनों ने मनमें कियी प्रार्थना तब।।८।। आश्चर्य यह की पूरी हुई प्रार्थना। मिल गए सारे साथी और सेना। कर ली प्राप्त जानकारी वृध्दा से।

और पूजाविधान पूछ लिया।।९।। छद्मवेशी देवी ने कहा उनसे। महामाया को संतुष्ट करने के लिए। पाद्य, अर्घ्य, गन्ध, पुष्प,रक्तवस्त्र। अलंकार और पशुबली देना चाहिए।।१०।। किया महाराजा ने निष्काम अर्चन। लौट गये राज्य वे अतीशीघ्र। लौटकर हुआ शांती का अनुभव। हो गए देवीप्रती वे श्रध्दापन्न।।११।। महाराजा ने इस बारे में। बुलाकर पंडितों को पूछा। विद्वान पण्डितोंने दिया प्रमाण। नीलाचल स्थित मृत्तिका स्तूप।।१२।। है इक्यावन्न पीठों में यहमुख्य। कहते इसे ही योनिमुद्रापीठ। हुआ महाराजा को तब प्रतीत। यही है कामाख्या देवीस्थान।।१३।। पधारे महाराजा अपनी प्रतिज्ञानुसार। कारीगरों को लेकर नीलाचल। करना है देवीपीठ का उध्दार। मंदिर निर्माण व्यवस्था में हुए तत्पर।।१४।। हुआ खोदन कार्य का आरंभ। हुई खुदाई स्तूप की चारो ओर। मिट्टी खोदते ही तब हुई प्रकट। देवी की योनिमुद्रा उनके सामने।।१५।। तभी दिखाई दिया मंदिर। जो किया था कामदेव द्वारा प्रतिष्ठित। हुआ था ध्वस्त ये पूर्णमंदिर। रह गये थे सीर्फ उसके अवशेष।।१६।। पहले किया थ महाराजाने संकल्प। बनवऊँगा यहा एक सुवर्णमंदिर। देखे जब उन्होंने मंदिर के अवशेष। सोच बनवाये ईट गोर का मंदिर।।१७।। परन्तु न हो सके इसमें सफल। प्रतिदिन जो बनती थी दीवार। सबेरे आकर देखता था तब। पाता था की गिर गयी वह।।१८।। दूसरे दिन भी वैसाही अनुभव। जाती थी गिर बनायी दीवार। हो रहा था ऐसा ही लगातार। हो गए महाराज बहुत दु:खित।।१९।। किया उन्होंगे भगवती का स्मरण। देखकर महाराजा का अनन्य भाव। राजा ने देखा रात में तब। एक दिव्य कुमारी हुई प्रकट।।२०।। पूछा उसने तब महाराजासे। भूल गया क्या तू अपना प्रण। बनवाना चाहता था तू सुवर्णमंदिर। कियी थी तुमने

प्रतिज्ञा यह।।२१।। आयी राजा को याद प्रतिज्ञा। राजा को बहुत पश्चाताप हुआ। करबध्द होकर स्तुती करने लगा। परम भक्तिभाव से बोला राजा।।२२।। हे करुणामयी जगदंबे करो कृपा। वस्तुस्थितीसे मैं अनभिज्ञ था। आवेश में आकर कर दी प्रतिज्ञा। मातेश्वरी करो मुझे क्षमा।।२३।। कहाँ से लाऊँ मैं इतना सोना। जिससे कर सकुँ मन्दिर निर्माण। इस कार्य में हूँ मैं असमर्थ। करो भगवती अपने संतान का रक्षण।।२४।। महाराजा की ऐसी प्रार्थना सुनकर। हो गई भगवती उसपर प्रसन्न। बोली राजा से वह प्रसन्न होकर। बतलाती हूँ मैं तुझे उपाय।।२५।। मंदिर के हर ईट के साथ। रखो सोना एक रती बस। इससे हो जाएगी प्रतिज्ञा पूर्ण। करो यह, होगा प्राप्त अभीष्ट फल।।२६।। दूसरे दिन देवी के निर्देश प्रकार। शुरु हुआ मंदिर का कार्य। थोडे ही दिनों में हुआ सफल। हुआ मंदिर निर्माण कार्य पूर्ण।।२७।। किया ब्राह्मण पुजारी नियुक्त। वैसेही नियुक्त किए सेवक। देवी की पूजा, अर्चना, भोग, राग। कर दी स्थायी व्यवस्था सब।।२८।। विश्वसिंह के पुत्र नरनारायण। बाद में हुए सिंहासनाधिष्ठित। भाई चिलाराय को किया सेनाध्यक्ष। थे दोनो प्रतिभाशाली, दक्ष।।२९।। पितृशत्रु थे आहोम राज खोरा। किया उसे उन्होंने पराजित। आसाम के अन्यान्य छोटे राज। जीत कर मनाया विजयोत्सव।।३०।। वीर चिलाराय थे युध्द में व्यस्त। तब सुलेमान के अत्याचारी प्रधान। कालपहाड ने किया आक्रमण। कामाख्या और अन्य देवस्थान।।३१।। किया कालपहाड ने नष्टभ्रष्ट। नरनारायण, चिलाराय हुए दु:खित। सोचा गौड राज्यपर करके आक्रमण। ले लेंगे कुकर्मोका बदला हम।।३२।। आ गए दोनो नीलाचलपर। लिया कामाख्या देवी का दर्शन। कियी प्रार्थना मिले युध्द में जय। कर देंगे मंदिर का जीर्णोध्दार।।३३।। किया

उन्होंने गौड राज्यपर आक्रमण। हो गए दोनो युध्द में पराजित। बनाये गए शत्रुद्वारा बंदी। भेजा सुलेमान ने उन्हें कारागृह।।३४।। करने लगे देवी का ध्यान। महामाया ने कहा चिलाराय से तब। नबाब की माता को निकट भविष्य में। काटेगा एक बहुत बडा साँप।।३५।। राज्य के सभी वैद्य हकीम। झाडफूक करनेवाले हो जाएँग असफल। राजा के बुलाने पर जाओ तुम। हो जाओगे तुम इसमें सफल।।३६।। हुए चिलाराय सफल इलाज में। नबाब की माता हुई प्रसन्न। चिलाराय को मानने लगी पुत्रसमान। कहा अपने पुत्र को रखो उससे भ्रातृभाव।।३७।। भक्तों को दु:खमुक्त करनेवाली। कामाख्या देवी की हुई कृपा। सम्मान सहीत दोनो लौटे अपने देश। युवराज ने महाराज को सुनायी कथा।।३८।। कथा सुनकर हुए महाराज प्रसन्न। किया अपने मनसे संकल्प। दोनोंने करके बहुत प्रयास। किया कामाख्या मंदिर का पुन: संस्कार।।३९।। महाराज नरनारायण ने उसके बाद। बंगाल, कान्यकुब्ज, काशी मिथिला से। विद्वान ब्राह्मणों को बुलाकर। भूदानादि देकर किया प्रतिष्ठित।।४०।। देवी की नित्य नैमित्तिक पूजा। अर्चादि के लिए कर दी सुव्यवस्था। ब्रह्मोत्तर तथा देवोत्तर क्रिया। पर्याप्त भूमिदान देकर प्रतिष्ठित किया।।४१।। आज भी देवी के मंदिर में। है विद्यमान एक शिलालेख। दोनो भाईयों की मूर्ति विद्यमान। शिलालेख है आज भी विद्यमान।।४२।। जनश्रुती है आज भी प्रसिध्द। थे पुजारी केन्दुकलाई नाम। करते थे सायं आरती भावपूर्ण। गद्‌गद् होकर करते देवी स्तवन।।४३।। भक्तिसुलभा जगदम्बा नित्य। भक्त केन्दुकलाई को देती दर्शन। करती थी ग्रहण बडे प्रेम के साथ। केन्दुकलाई का सुमन अर्चन।।४४।। सुनकर आये नरनारायण नीलाचल। नम्रता से किया पुजारी को वंदन। बोले कृपया करवा दे

देवीदर्शन। लेकिन ब्राह्मण ने किया इन्कार।।४५।। बोले,'' महाराज न होगा दर्शन। छलचतुरी से है दर्शन दुर्लभ। है जगदम्बा भक्तिसुलभा बहुत। चाहती है माँ श्रध्दा आन्तरिक।।४६।। इसीलिए है मेरा विनम्र वचन। हो जाइए आप श्रध्दान्वित। कीजिए प्रकट आप अनन्य भाव। देगी भगवती आपको दर्शन।।४७।। राजा न हुआ इस बात को तैयार। हुआ बेचारा पुजारी लाचार। बोले छिद्रपथ से ले लो दर्शन। मान लियी राजाने बात।।४८।। संध्या समय ब्राह्मण करते नीरांजन। हो गए वे स्तोत्रगान में तल्लीन। हो गए वे आत्मानन्द में विभोर। हो गयी देवी जगदम्बा प्रकट।।४९।। छिद्रपथ से देखा महाराजा ने। आँखों मे पैदा हुई चकाचौंध। पता चला देवी को षडयंत्र। हो गई भगवती बहुत अप्रसन्न।।५०।। मारा तमाचा ब्राह्मण के सिर। कहा तू बन जाएगा पत्थर। कहा राजासे कुपित होकर। '' तू चला जा नीलाचल छोडकर।।५१।। मेरे पीठस्थान का न होगा दर्शन। यदि तू या तेरा कोई वंशज। करेगा पर्वतारोहण की कोशिश। हो जाएगा तेरा वंश लोप।।५२।। इस समयबाद कोचबिहार राजवंश। कोई भी उनका सदस्य या वंशज। इस तीर्थ को नही झाँक सका। महाराजा ने देवीत्तर भूमि के सिवा।।५३।। और अतिरिक्त राजकोष। किया देवी भगवती को अर्पण। देवी के पर्व, उत्सवादि के लिए। कियी उसने पर्याप्त व्यवस्था।।५४।। महाराज नरनारायण हुए दिवंगत। कालान्तर में पूजादि हो गए बंद। आ गयी राज में शिथिलता तब। हो गया शुरु शत्रु का आक्रमण।।५५।। आये आहोम राजा पूरब की ओरसे। आये मुसलमान पश्चिम दिशासे। आसाम में आहोम राजाओंने। किया कामरुप राज्य का परिचालन।।५६।। असम, अहम या आहोम शब्द। इन्ही से कामरुप राज्य का नाम। मिला उसे 'आसाम'यह

नाम। कामरुप हुआ हुआ सीर्फ जिला एक।।५७।। आज भी आसाम राज्य में। कामरुप राज्य के बीहड जंगलों में। वहाँ के ग्राम और प्रान्तरों में। है आहोम राजाओं के चिन्हादि उपलब्ध।।५८।। कहीपर गढकिलों के भग्नविशेष। तो कही राजपथों के ध्वंसावशेष। इनके द्वारा निर्मित मंदिर, प्रासाद। हुए रुपान्तरित न हुए विलुप्त।।५९।। इन प्राचीन राजाओं की कीर्ति। है भारतीय संस्कृती समान अमर। इसीलिए करो परम्परा का स्मरण। करो प्रतिक्षा आएगा समय।।६०।। जब सीतोध्दार के समान। तुम्हारी प्राचीन संस्कृति तथा देश। अपनी पूर्व सीमा कर लेंगे प्राप्त। हो जाएँगे पराक्रम फिर उजागर।।६१।। गाते उनकी गाथा स्थानीय लोक। है उनके गीतों में वह अक्षुण्ण। कियी उन्होंने देवस्थान रक्षा प्राचीन। निधर्मियोंने किये नष्टभ्रष्ट मंदिर।।६२।। कामाख्या मंदिर के प्रांगण। कहते है जिसे नाट्यमंदिर। आहोम राजाओंने बनाया था यह। किया अनेकबार मंदिर जीर्णोध्दार।।६३।। आज भी दीवारों के शिलालेख, ताम्रलेख। करते है इनकी कीर्ति अजरामर। कामाख्या मंदिर के है संलग्न। है दशमहाविद्या का मंदिर।।६४।। वैसे ही है अन्यान्य शिवमंदिर। इन राजाओं ने किया संस्कार। किया मंदिरों में पूजा का व्यवस्थापन। किया इसकारण धन और भूमिदान।।६५।। आहोम राजाओं की परिपाटी प्रबन्ध। आज भी वैसाही प्रचलित। शिव सिंह का पुत्र था रुद्रसिंह। उसने अपनी पत्नी फूलेश्वरीसह।।६६।। वरिष्ठ ब्राह्मण से सिखा शान्ति मंत्र। गुरुदक्षिण में दियी भूमि ब्रह्मोत्तर। उस न्याय वागीश महोदय परिवार। कियी निवास व्यवस्था नीलाचल पर।।६७।। तभी से उस ब्राह्मण का वंशज। पर्वतीश गोस्वामी ऐसा नाम। इसतरह किया दश महाविद्या मंदिर। और शिवंमदिर पुनः संस्कार।।६८।। किन्तु भूचलादि

और कालक्रम। नैसर्गिक कारण हुआ मंदिर अस्ताव्यस्त। देवी भक्त दरभंग नरेश रामेश्वर सिंह। किया उन्होंने मंदिर का पुन:संस्कार।।६९।। प्राचीन काल में नरकासुर निर्मित। थे चार दिशाओं मे चार सोपान। उसके उत्तर तथा पश्चिम के पथ। थे ये बीहड और संकीर्ण।।७०।। यातायात थी दुर्गम कष्टकर। हुआ उन दोनों पर चलना बंद। अब तो मिट गया इनका चिन्ह। दक्षिण,पूर्व के पथ भी है कष्टकर।।७१।। गुवाहाटी स्टेशन से तीन मील। वहाँ से पश्चिम की ओर चलकर। जाते नीलाचल पाददेश में पहुँच। यहाँ से नीलाचल आरोहण पथ।।७२।। है पत्थर की सीढी पूर्वद्वार। रास्ते में सिध्दगणेश और अग्निवेताल। हैं ये दोनों यहाँ के द्वारपाल। बढता वहाँ से नीलाचल की ओर।।७३।। भारत सरकार ने बनवाया अब। अमीन गाँव से पाँडतक अभिनव पुल। ४१५८ फीट लम्बा यह बडा पुल। ब्रह्मपुत्र नद मे उपरसे जाता यह।।७४।। अब अमीन और पाँडु स्टेशन पर। ये दोनों ही पुल हुए है बंद। रंगिया से अब ट्रेन छुटकर। पुल पारकर के जाती कामाख्या स्टेशन।।७५।। यहाँ से पाँड घाट की ओर। लगभग आधा मील तक चलकर। जाते दक्षिणद्वार से पहाड पर। जाते दो मील चलकर पूर्वद्वार से।।७६।। पूर्वद्वार निकट है कटि नाम स्थान। बनायी है वहाँ से पक्की सडक। टॅक्सी लेकर जा सकते पहाडपर। विमान से भी जा सकते है आज।।७७।। देता हूँ अब मैं कामाख्यास्तोत्रार्थ। पढकर भक्त पा सकते इच्छितार्थ। अत्यंत सुफलदायी है ये स्तोत्र। संकटमोचन है यह सुखदायक।।७८।। छीन गया हो राजा का राज्य। धन संपत्ती खोकर हो गया हीनदीन। इनके लिए यह स्तोत्र क्षमोपास्त्र। करे इस स्तोत्र का पाठ अवश्य।।७९।। रखकर अष्टमी तीथीपर उपवास। वैसे ही चतुर्दशी में भी उपवास। उपवास रखकर होकर

पवित्र। अधिक संख्या में पढे यह स्तोत्र।।८०।। होता है प्राप्त राजा को राज्य। हीनदीन धनसंपत्ती करता है प्राप्त। होता उसके सभी पापोंका क्षय। होते है उसे सब भोगमोक्ष प्राप्त।।८१।। स्तोत्रः हे कामेशिचामुण्डे भूतापहारिणि। हे देवी तुम्हारी जय हे कामेश्वरि। हे विश्वमूर्ते हे शुभे, शुध्दे विरुपाक्षि। त्रिलोचने, भीमरुपे, शिवे, कामेश्वरि।।८२।। मेरा आपको है सादर प्रणाम। जम्भे,भूताक्षि, महामाये, महेशानि। कामेश्वरि हे क्षुभिते, आपको नमन। भीमाक्षि, सर्व भूतों को नष्ट करनेवाली।।८३।। कालि, विकरालि, तुम्हे शतशः प्रणाम। हे कालि हरप्रिये आपको मेरा नमन। आप कामरुपप्रदीपा, हो नीलाचलवासिनी। हे कामाख्या आपको बार बार प्रणाम।।८४।। हे कामेश्वरी, कामरुपस्थित, करो पूर्ण। इस भक्त के सारे मनोरथ। त्रिलोकस्वामिनी शुम्भनिशुम्भ मथनि। महिषासुर संहारिणि नमन।।८५।। हे छागतुष्टे, महाभीमे, कामाख्ये। हे देववन्दिते, कामप्रदे, सन्तुष्टे। अष्टमी, चतुर्दशीदिनी जो करे। तुम्हारा व्रत करे प्राप्त वह इप्सितार्थ।।८६।। करे जो इस स्तोत्र का पाठ वा श्रवण। होयेगा वह आपकी कृपा के पात्र। होते है उसके पाप नष्ट, होता मोक्ष प्राप्त। आपको है मेरा सादर नमन।।८७।। कामरुपेश्वरि,भास्करप्रभे,त्रयीभये। प्रकाशित मुखाम्भोजे, आपको प्रणाम। हे सितासते, रक्तपिशंग विग्रहे। होते है आपके अनेक रुप प्रतिभासित।।८८।। होता प्रकाशित शुंभ -निशुंभ विकल्पित रुप। कामरुप समुद्भूते कामपीठाधिष्ठिते। विश्वाधारि, विश्वरुपे, महामाये। है आपको मेरा सादर प्रणाम।।८९।। हे जगद्व्याप्ते, अव्यक्त विग्रहे। विश्वरुपिणि विश्वाधारे, शान्ते। है तू काल से भी अगम्य परमे। करता हूँ आपको सविनय वंदन।।९०।। तू योगियोंसे सुषुम्नानाडी में चिन्तित। है ज्योतिस्वरुप ज्योति प्रकाशित। हे प्रकाशाधीश्वरि हे

जगदीश्वरि। करता हूँ मैं तुमको प्रणाम।।२१।। हे माते तू दंष्ट्राकराल वदने। हे भगवती तू मुण्डमालाशोभिते। सर्वव्यापिनी तू है सर्वगा। है कामेश्वरि मेरा आपको सादर वंदन।।९२।। हे चामुण्डे, महाकालिमाते। हे कपालहारिणि हे कालीमाते। पाश है तुम्हारे एक हाथ में। शूल है तुम्हारी दूसरे हाथमें।।९३।। हे भवभय हारिणी तेरी चरणों में। है मेरा बार बार प्रणाम। हे सकलभयत्राते दे दो शरण। इस भक्त को तेरी चरणों में।।९४।। कुलमालास्य हे चामुण्डे देवि। हे तीक्ष्ण-दंष्ट्रे हे महाबले। हे शवारुढे, हे देवि महाबले। है मेरा शतशः प्रणाम चरणों में।।९५।। हे कराल विक्रान्ते, कामरुपे, हरप्रिये। सर्वशास्त्र सारभूते हे भक्तप्रिये। कामरुप प्रदीपे, कामाख्या माते। विनम्र वंदन है तेरी चरणों मे।।९६।। असुरारिरक्षिणे, स्तुतिपानोत्सुके। त्रयीभये, देवनुते, हे हरिप्रिये। कामरुपस्थे कामाख्ये देवीमाते। कामनां देहि मे नित्य भक्तवत्सले।।९७।। इस स्तोत्र का करे पाठ प्रतिदिन। हो जाएगी उसकी कामना पूर्ण। करे पूजापाठ देवी प्रीत्यर्थम्। हो जाए वह सकलसौख्याप्रदा।।९८।। भक्तवरदायिनी,भक्तवत्सलामाता। वरप्रदायिनी सकलसौख्यप्रदा। कामेश्वरी, कामरुपिणी कामाख्यामाता। मिले तेरी चरणोंमे स्थिरता।।९९।। हो जाओ संतुष्ट भक्ततारिणी भक्तवत्सले। शरणागतवत्सले देवी माते। दे दो स्थान इस गणेश को चरणोंमें। करे स्वीकार माते इस भक्त का।।१००।।

कामाख्या स्तोत्र

जय कामेशि चामुण्डे जय भूतापहारिणि।
जय सर्वगते देवि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।

विश्वमूर्ते शुभे शुद्धे विरुपाक्षि त्रिलोचने।
भीमरुपे शिवे विद्ये कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।
मालाजये जये जम्भे भूताक्षि क्षुभितेऽक्षये।
महामाये महेशानि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।
कालि कराल विक्रान्ते कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।
कालि कराल विक्रान्ते कामेश्वरी हरप्रिये।
सर्व्वशास्त्रसारभूते कामेश्वरी नमोऽस्तु ते।।
कामरुप - प्रदीपे च नीलकूट - निवासिनी।
निशुम्भ - शुम्भमथनि कामेश्वरी नमोऽस्तु ते।।
कामाख्ये कामरुपस्थे कामेश्वरि हरिप्रिये।
कामनां देहि में नित्यं कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।
वपानाढ्यवक्त्रे त्रिभुवनेश्वरि।
महिषासुरवधे देवि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।
छागतुष्टे महाभीमे कामख्ये सुरवन्दिते।
जय कामप्रदे तुष्टे कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।

भ्रष्टराज्यो यदा राजा नवम्यां नियतः शुचिः।
अष्टम्याच्च चतुर्दश्यामुपवासी नरोत्तमः।।
सवंत्सरेण लभते राज्यं निष्कण्टकं पुनः।
य इदं श्रृणुवादभक्त्या तव देवि समुदभवम्।।
सर्वपापविनिर्म्मुक्तः परं निर्वाणमृच्छति।
श्रीकामरुपेश्वरि भास्करप्रभे, प्रकाशितमभोजनिभायतानने।
सुरारि - रक्षः - स्तुतिपातनोत्सुके, त्रयीमये देवनुते नमामि।।
सितसिते रक्तपिशङ्गविग्रहे, रुपाणि यस्याः प्रतिभान्ति तानि।
विकाररुपा च विकल्पितानि, शुभाशुभानामपि तां नमामि।।
कामरुपसमुदभूते कामपीठावतंसके।
विश्वाधारे महामाये कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।
अव्यक्त विग्रहे शान्ते सन्तते कामरुपिणि।
कालगम्ये परे शान्ते कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।
या सुष्मुनान्तरालस्था चिन्त्यते ज्योतिरुपिणी।
प्रणतोऽस्मि परां वीरां कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।

दंष्ट्राकरालवदने मुण्डमालोपशोभिते।
सर्व्वतः सर्वंग्गे देवि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।
चामुण्डे च महाकालि कालि कपाल - हारिणी।
पाशहस्ते दण्डहस्ते कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।
चामुण्डे कुलमालास्ये तीक्ष्णदंष्ट्र महाबले।
शवयानस्थिते देवि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।

।। श्रीकामाख्या माताजीके चरणोंमे समर्पित। परमपूज्य स्वामीजीकें चरणोंमे समर्पित।।

।।अध्याय छठा।।

श्री गणेशाय नमः। श्री दत्तात्रेयाय नमः। श्री स्वामी समर्थाय नमः। श्री सरस्वत्यै नमः।
श्री कुलदेवताय नमः। श्री कुलस्वामिन्यै नमः। श्री कामाख्यादैव्य नमः। श्री ग्रामदेवताय नमः।

शिवसुत श्री देव गजानन। चरणों में उनके सादर वंदन। करके मुझको सदा निर्विघ्न। दे दे वरदान होकर प्रसन्न।।१।। योगियोंके योगी शिवशंकर। उमापति भवानि प्रिय वर। सकल सृष्टि के जो आदिस्वरुप। परमात्मा परमश्रेष्ठ परमतत्त्व।।२।। पार्वतीश सदाशिव भोलेनाथ। है दीनवत्सल भक्तों के नाथ। उनकी कृपासे कसता हूँ बयान। कामाख्या तन्त्र और माहात्म्य।।३।। तन्त्रशास्त्र कहते है देवीमाहात्म्य। देवी के विविध पूजा-विधान। तन्त्र है अलौकिक और अपौरुषेय। यह है शिवमुखोक्त शास्त्र।।४।। मानते सब आस्तिक जनसमुदाय। होता है यह कल्पकल्पांतर मे प्रवर्तित। लेकिन कुछ विद्वान मानते है विज्ञान। प्रत्यक्ष या अनुमानसे करते निर्णय।।५।। दोनों परंपराओंको जानकर। तन्त्र के विषयमें करते है बयान। हमारे वेदों के हैं छह अङ्ग। उनमें से तन्त्र आता है कल्प अंतर्गत।।६।। (वेद के छह अङ्ग - शिक्षा, कल्प,व्याकरण, निरुक्त,छन्द और ज्योतिष)परमसत्ता का अपना पूर्णरुप। उसे संकुचित करने का विधान। फिर उसे पूर्ण रुप में प्रतिष्ठित। इसका निर्वचन को कहते है तन्त्र।।७।। तन्त्रशास्त्र या आगमके प्रवर्तक शिव। है शिव सनातन अनादि तत्त्व। इसीलिए है अनादि तन्त्रशास्त्र। कौल परंपरा भी है शिवप्रवर्तित।।८।। 'कु'शब्द है पञ्चमहाभूतों का प्रतिक। है यह

पञ्चमकार का संकेतक। 'ल' का अर्थ लय को होता प्राप्त। अपनी सत्ता परमसत्ता में मिलाना कुल।।९।। इस कुल को जो मानते करते है। उनको कौल कहा जाता है। कौल के बिना नही सिध्दान्त तत्त्व। कौलमार्ग से बढकर न है अन्य मार्ग।।१०।। प्रवेशमात्र देता यह अद्वैतज्ञान। चित्त को करता स्थैर्य प्रदान। है सभी मार्गों का शिखा स्वरुप। कौल से बढकर न है मुक्तिमार्ग।।११।। पृथिवी ऐसा भी है कुल का अर्थ। है यह पाँचो मूलतत्त्वों का उपलक्षण। पञ्चमकार है इनके ही संकेतक। कहता हूँ इसका स्वरुप संक्षिप्त।।१२।। इनमें मुद्रा है पहला मकार। भुना, तेल में तला हुआ अन्न। बडा पकौडा या नमकीनादी सब। पृथिवी तत्त्व का है यह अन्न।।१३।। दूसरा मकार आता है मत्स्य। जलसे उत्पन्न इसलिए जलतत्त्व। तिसरा मद्य है अग्नितत्त्व। अग्नि को पैदा करता है मद्य।।१४।। चौथा मांस है वायु का प्रतीक। वायु के कारण ही है शरीर। पाँचवा मैथुन है आकाशतत्त्व। है आकाश सब का लय स्थान।।१५।। मैथुन है चेतना का लय। इस प्रकार है 'कु' शब्द। है यह शब्द पञ्चमकार संकतेक। यह ही पञ्चमहाभूतों का प्रतीक।।१६।। कौल मार्ग को मानते है शक्तिमार्ग। यद्यपि है शिव और शक्ति अभिन्न। है यह कौलमार्ग शक्तिप्रधान। वास्तवता में शक्ति का मूल एक।।१७।। लेकिन काल में भिन्न भिन्न। भिन्न रुप है भिन्न उद्देश। हुई है शक्ति यहाँ अवतीर्ण। है उसके अनेक रुप और नाम।।१८।। देवी कामाख्या हुई अवतीर्ण। है काली और तारा का मिश्र रुप। लेकिन है ऐसे बहुत विद्वान। मानते उसको षोडशी का रुप।।१९।। वाणी के होते है चार प्रकार। उनमे कामाख्या है परावाक्। है शक्ति दशविद्या स्वरुप। काली प्रथम तारा द्वितीय।।२०।। षोडशी है तृतीय स्थान पर। देता हूँ उन विद्याओंके नाम। काली, तारा,

षोडशी, तृतीया। मुक्तेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता छठी।।२१।। धूमावती, मातङ्गी कमला। है ये सारी दशमहाविद्या। करते है सभी अलग उपासना। दो प्रकारकी होती है उपासना।।२२।। एक है आभ्यन्तर या मानसिक। बाह्य उपासना है दूजा प्रकार। मानसिक होती है मन के अंदर। बाह्य है मूर्ति या चित्र प्रधान।।२३।। बाह्य उपासना के है दो प्रकार। सम्यदुपासना और प्रतिकोपासना। बाह्य मूर्ति मैं है इष्ट देव का स्थापन। ऐसी की जाती है सम्यदुपासना।।२४।। इसमें आरोप्य इष्टदेव। होते है प्रधान मूर्ति गौण। प्रतिकोपासना में मूर्ति प्रधान। इष्टदेव रहते है गौण।।२५।। (आरोप्य प्रधान सम्पत्। आलम्बन प्रधानः प्रतीकः।) दोनो उपासना के दो प्रकार। एक है लघु दुसरी बृहद्। एक उपासना में हैं पञ्चोपचार। दूसरी में होते है षोडशोपचार।।२६।। (पंचोपचार- गन्ध,पुष्प,धूप,दीप और नैवेद्य। षोडशोपाचार- आसन, अर्घ्य, पाद्य, आचमन, मधुपर्क, आचमन, स्नान, वस्त्र, आभूषण,गन्ध,पुष्प,धूप,दीप और नैवेद्य,माल्य और आरती। इसमें यज्ञोपवीत अथवा स्त्रीदेवता के लिए दुकुल और पुनः आचमन जोडने पर अष्टादशोपाचार होते है)द्विजाती को उपासना के पूर्व। संध्या एवं तर्पण है आवश्यक। जिनके माता- पिता है जीवित। करे केवल देव तर्पण, ऋषि तर्पण।।२७।। एक और चीज ध्यान में रखे। देवालय, तीर्थ,नदी, जलाशय किनारे। वैसेही समुद्रतट आदि स्थानों में। स्थान शुध्दी की जरुरत नही होती।।२८।। यात्रा आदि में परिस्थिती वश। है जलहीन संध्या का विधान। स्थूल उपचार के अभावपर। है बीजक्षरों से पूजा का विधान।।।२९।। है तान्त्रिक उपासना सकाम। इहलौकिक विशिष्ट कामना के कारण। विशेष सावधानी है आवश्यक। इसमें औषधियों का है प्रयोग।।३०।। कामाख्या नाम की महाविद्या। है यह

योनिरुप, वरदायिनी,वरदा। महाविभव वर्धिनी, आनन्ददा, नित्या। सबकी तारिणी है सबकी माता।।३१।। है यह रमणी स्थूल और सूक्ष्म। सबके लिए है बहुत शुभ। बताता हूँ अभी उसके तन्त्र। उमासे कहते शिव सावधानतासे सुन।।३२।। जो साधक सिध्दि को करते प्राप्त। कोई भी हो जो करते उपासन। कामाख्या करती सिध्दि प्रदान। इसीलिए न हो कोई उससे विमुख।।३३।। इसके सिवा शक्ति कोई अन्य। न दे सकती किसे सिध्दिसम्पद्। है कामाख्या एक ही शाश्वत धर्म। कामाख्या ही है काम और मोक्ष।।३४।। है कामाख्या सभी से उपासित। ब्रह्मादि, विष्णु, चन्द्रमा, करते उपासना। देती है यह शक्ति मुक्ति सायुज्य। परमगती सालोक्य और सारुप्य।।३५।। कामाख्या ही है शिव की शिवता। यही देवी है ब्रह्मा की बह्मता। है कामाख्या विष्णु की विष्णुता। तथा है यह चन्द्र की चन्द्रता।।३६।। यह कामरुपिणी देवों का देवत्व। विद्याओंका है यह लौकिक वाक्य। समस्त जगह है कामाख्या का स्वरुप। हृदय में ध्यान कर देखो स्वयम्।।३७।। तीनों लोकों में उसके बिना नही कुछ। तन्त्रशास्त्र में विद्या है लाख, करोड। कहते इसे षोडशी साराद् सार। नित्य, अनित्य और सत्य ही सत्य।।३८।। बाद में कहते है शिव देवीसे। कहता हूँ अब मैं मंत्रोध्दार। है ये मंत्रोध्दार परात्पर। देवता भी मानते है यह मंत्र।।३९।। होती दुर्लभ सिध्दि प्राप्त। इस मंत्र का प्रभाव है बहुत। ब्रह्मादि सह जगत इसके साधक। सभी को कर लेता हैं संमोहित।।४०।। इस मंत्र की प्रभाव से स्तम्भन। मोहन, क्षोभण, जृम्भण, द्रावण। त्रासव, विद्वेषण,उच्चाटन आकर्षण। वशीकरण आदि होते है सिध्द।।४१।। साधक कटाक्षमात्र से अग्नि, सूर्य। समुद्र ये सब होते है स्तम्भित। सम्पूर्ण जगत् जीत लेता साधक। नही साधक को कुछ भी

असाध्य।।४२।। अब सुनिए मंत्र स्वरुप का वर्णन। कह रहा हूँ देवी के मूलमंत्र। जृम्भणान्त (त) त्यक्तपाश (अ से रहित)। यात्रावारण (र) से रोहक(युक्त)।।४३।। वामकर्ण(ई) नादबिन्दु है (ँ)। कहता हूँ अभी इसका मतलब। जृम्भण 'ण 'के अन्त बादवाला 'त ' जो है पाश (आकार)रहीत।।४४।। (तू)तथा यात्रावारण 'र'से युक्त। तथा वामकर्ण 'ई'से युक्त। है तथा नादबिन्दु (ँ) से युक्त। इससे बनता है 'त्रीं'।।४५।। है यह मन्त्र कल्पवृक्ष समान। करना चाहिए यह मन्त्र जाप। इस कल्पवृक्ष को करे तीन गुणा। त्रीं त्रीं त्रीं करना चाहिए यह जप।।४६।। करे विद्वान इसका जाप माला एक। अथवा एक हजार या लाख बार। ऐसी कामाख्या साधना करे साधक। पायेगा साधक सिध्दि सर्वत्र।।४७।। हो कोई भी सच्चा साधक। शाक्त, वैष्णव, सौर, गाणपत्य। इसके लिए न चक्रशुध्दि आवश्यक। न है जरुरत कालादि संशोधन।।४८।। करे साधक सीर्फ मंत्रोध्दार जाप। है यह कामाख्या की साधना परम। यह साधना है बिल्कुल क्लेशशून्य। शीघ्र ज्ञानदायिका है विशेष।।४९।। कहता हूँ अब त्रैलोक्य सिध्ददायिका। कैसी है यह कामाख्या की पूजा। हठात् (कठिणसाधना) प्राप्त होती सिध्दियाँ। होती है प्राप्त क्षणमें करे कामाख्यापूजा।।५०।। कामाख्या यंत्र निर्माण के लिए। सिन्दुर से मण्डल (गोलचक्र) बनाए। लिखे त्रिकोण बीच उस चक्रके। त्रिकोण में बीज 'त्रीं' को लिखे।।५१।। मण्डल के बाहर चतुर्भुज बनाए। इसके बाहर वज्राष्टक बनाए। बाद में न्यास - समूह सम्पादित करे। आठों दिशाओं मे उसकी पूजा करे।।५२।। इस मन्त्र के ऋषि अक्षोभ्य है। छन्द अनुष्टुप, देवता कामाख्या है। समस्त सिध्दि के लिए विनियोजित है। कराङ्गन्यास बीज 'त्रीं'से करना है ।।५३।। (न्यास के पहले विनियोग करते समय ॐ

अस्य श्रीकामाख्या मन्त्रस्य अक्षोम्य ऋषिरनुष्टुप छन्दः कामाख्या देवता सर्वसिध्दये विनियोगः ऐसा कहना चाहिए) बाद में कामाख्या का ध्यान करे। यह कामाख्या अभीष्टदायिनी है। है इसका मन्त्र छह दीर्घ स्वरयुक्त। धारण करती यह देवी लालवस्त्र।।५४।। इसके एक हाथ में है वरदमुद्रा। उसने है सिन्दुर - तिलक लगाया। है कलङ्करहीत कमलसमाना। सुवर्ण मणि- माणिक्य विभूषिता।।५५।। रत्नजडित सिंहासनापर बैठी। ईषा हास्य मुखवाली देवी। पद्मरागमणिसम, कान्तिवाली। चौडे ॐचे स्तनवाली।।५६।। क्षीणकाय, आकर्ण आँखोवाली। परमेश्वरी, नित्या, सर्वाङ्गसुंदरी। है परिवेष्टित डाकिनी योगिनी। करती परिवेष्टित इसे विद्याधरी।।५७।। कामिनियोंसे युक्त, गन्धोंसेसुगन्धित। है यह विशेषरुप शोभायमान। इसके हाथों में है ताम्बुलगन्धित। है वह सिध्द वर्गोंसे प्रतीष्ठित।।५८।। त्रिनेत्रा, मोहकरी, पुष्प धनुयुक्त। वाणी लक्ष्मीवचन प्रति उत्सुक। समस्त गुणसंपन्न करुणासागर। ऐसी ये शिवा का करे ध्यान।।५९।। इसप्रकार एकाग्र मन से करेध्यान। तत्पश्चात कुंकुम, रक्तपुष्प। जपाफुल, अलक्तक, सिन्दुर। करवीर(कनेर) के फूलों से करे पूजन।।६०।। करवीर, जपाकुसुम में देवीनिवास। रहती मालती आदि के समीप। करे जो देवी को जपापुष्प अर्पित। वह साधक बनता है गाणपत्य।।६१।। करे पञ्चतत्त्व से देवी का पूजन। पञ्चतत्त्व से होती देवी प्रसन्न। पञ्चतत्त्व पर ही है ब्रह्म। है परमगती यह पञ्चतत्त्व।।६२।। पञ्चतत्त्व है महादेवी और शिव। पञ्चतत्त्व है ब्रह्मा और जनार्दन। पञ्चतत्त्व है भोग, मोक्ष, और महायोग। है पञ्चतत्त्व सकल पापनाशक।।६३।। मद्यद्वारा पूजा से मिलता स्वर्ग। माँस से राजा बनता है साधक। मत्स्यद्वारा अर्चन से भैरवपुत्र। मुद्रा से विधाता होता है पूजक।।६४।।

पर याने अन्तिम है मैथुन। इससे प्राप्त होता है सामुज्य। करे साधक पूजा भक्तियुक्त। होता उसे सबकुछ प्राप्त।।६५।। श्वेतवर्ण स्वयंभू कुसुम, पवित्र। कुण्ड और गोल से उत्पन्न शुभवस्तु। कुंकुमादि एवं आसव से अर्घ्य। पश्चात पायस, वस्त्र, आभूषण।।६६।। करे देवी का विधियुक्त पूजन। तत्पश्चात करे आवरण का पूजन। इसमें इन्द्रादि देवता, उनके यन्त्र। सभी का करना चाहिए पूजन।।६७।। यह सब पूजन करके साधक। करे देवी के पार्श्वभाग में स्थित। लक्ष्मी और सरस्वती का पूजन। इससे ही होती है पूजा संपूर्ण।।६८।। कामाख्या देवी है क्षेमदा। आरोग्यदा,शुभदा,धनदा,वरदा। मोहदा, ऋध्दिदा, सिध्दिदा। बुध्दिदा, शुध्दिदा, मुक्तिदा।।६९।। मोक्षदा,सुखदा, ज्ञानदा। वैसी ही कान्तिदा है कामाख्या। इसीलिए, वरदायिनी इसकी पूजा। भावभक्ति से साधक करे पूजा।।७०।। कामाख्या, लक्ष्मी,सरस्वती देवता। यन्त्र के मध्य में करे इनकी पूजा। उसी प्रकार से डाकिनीयाँ। तथा सिध्दियाँ इनकी भी करे पूजा।।७१।। उसके बाद करे षडङ्गोंसे। देवी का पूजन विधिपूर्ण करे। बाद में मन्त्रपुष्पांजली अर्पण करे। और करे मंत्रजाप शुध्दभाव से ।।७२।। अन्त में जाप का करके समर्पण। वाद्य आदि से करे देवी को संतुष्ट। करे स्तोत्र और कवच का पठण। प्रसन्न होकर करे विधिवत प्रणाम।।७३।। होती साधना शक्ति के ही कारण। शक्ति ही है जप आदि का मूल। गति,जीवन, ऐहिक, पारलौकिक। सभी अभ्युदय है शक्तिमूलक।।७४।। शक्ति को जो कुछ करे समर्पित। होता है वह सब उद्देश्य हस्तगत।।७५।। कहता हूँ कामाख्या मन्त्रपुरश्चरण। पुरश्चरण में करे लाख संख्या में जाप। उसका दशांश घी, शर्करा, मधु, खीर। इनसे साधक करे हवन।।७६।। उस के दशांश से गन्ध, चंदन। इनसे मिश्रित

जलद्वारा करे तर्पण। तर्पण के दशांश के दशांश करे अभिषेक। उसके दशांश कराये मिष्ठान्न भोजन।।७७।। करे देवीभक्त साधकों को साधक। पञ्चमकार करे उन्हे तृप्त। इस प्रकार से करे मन्त्रपुरश्च। इससे कामाख्या होती है प्रसन्न।।७८।। उस प्रकार है योनिचक्र में विहीत। यही पूजा है महापूजा महान। इसके समान सिध्दि प्रदा नही अन्य। कोई भी पूजा न जाती मान्य।।७९।। योनिपूजा में है महत्त्वपूर्ण। करे योनि का सुगंध से लेपन। करे योनिपूजा विविधप्रकार। उससे कामाख्या होती है प्रसन्न।।८०।। कामाख्या मन्त्र कहा जाता श्रेष्ठ। करते उसकी सेवा समस्त देवगण। करते पूजा गंधर्व, किन्नर, विद्याधर। होते उससे अपने खुद के विषियों में युक्त।।८१।। योगिनी, डाकिनी, भैरवी, विद्या। नायिकादि प्राप्त करती है सेवा। करतीं हैं वे सब परम योग्यता। तीनों लोक में साधक होते है सिध्द।।८२।। बताता हूँ अब मंत्र का स्वरुप। कहे इसमें बीज 'त्रीं'को तीन बार। हुम् (क्रोध) और वधुबीज (स्त्री)। दो दो बार कहकर कहे कामाख्या प्रसीद।।८३।। इस प्रकार प्रसीद कहकर। पुनः पूर्वाक्त सभी बीजों को कहकर। अन्त में दो बार 'ठः' (स्वाहा) कहे। है यह मंत्र समस्त तंत्रों मे दुर्लभ।।८४।। (मंत्र - त्रीं त्रीं त्रीं हूं हूं स्त्री स्त्री कामाख्ये प्रसीद त्रीं त्रीं त्रीं हूं हूं स्त्री स्त्री स्वाहा। इस मंत्र के पहले प्रणव लगाना चाहिए। प्रणव म्हणजे ॐ) प्रणव लगायी हुई यह महाविद्या। है त्रैलोक्य में अतिदुर्लभा। करती है यह चतुर्वर्ग प्रदान। करती है यह महापाप का विनाश।।८५।। इस दुर्लभ मंत्र के ग्रहण मात्र। होता है साधक जीवन्मुक्त। भोग और मोक्ष होते है हस्तगत। हो जाता है साधक सबका प्रिय।।८६।। करती है लक्ष्मी स्वयं उसका वरण। करती है मुख में सरस्वती निवास। होते चिरंजीव पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र।

उन्ही की सिध्दी चलती है पृथ्वीवर।।८७।। उनके नाम से स्मरण से लोग होते विनत। उनका नाम सुनकर हिंस्त्र जंतु होते है पलायित। स्वर्ग लोक, मृत्युलोक, पाताललोक। तीनों मे की सिध्दियाँ सब।।८८।। करती साधकों की सेवा नि:संदेह। साधकेंद्र के सामने वादी जाता गिर। दिखते हैं तेजस्वी सभामें साधक। इस प्रकार यह मन्त्र है वर्णनातीत।।८९।। इस मंत्र के पुरश्चरण में। करे पूर्ववत् न्यासपूजा आदि सब। परन्तु जप हो छह हजार। तत्पश्चात छह सौ होम।।९०।। यह करने से होता है मंत्रज्ञ। सिध्द, और कामाख्या प्रयोग में सक्षम। यही है इस मंत्र पुरश्चरण का महत्त्व। बडी उत्सुकता से करे साधक।।९१।। अब कैसा करना चाहिए ध्यान। कैसा भवानी को करे चिन्तीत। है भवानी सुंदर वेशभूषायुक्त। उसका मुख है निर्मल हँसी से युक्त।।९२।। तीन नेत्रोवाली है दीप्तियुक्त। है कान्ति नीलमेघ से सुंदर। उसके कटी में है पट्टवस्त्र। है यह प्रकाशमान वरदमुद्राधारक।।९३।। धारण किये है रत्नोंवाले आभूषण। अत्यंत भव्य कल्पवृक्ष के नीचे। रत्नजडित सिंहासनपर विराजित। है तेजस्वी प्रभावशाली अत्यंत।।९४।। हरि, हर ब्रह्मा को वन्दनीया। कामबाणविध्द शुध्द बुध्दिस्वरुपा। है भवानी, कामिनी, कामदायिका। समस्त लोगों की विलासरुपा।।९५।। यह देवी है निर्मला, कामरुपा। कली के पाप नष्ट करती यह वरदा। स्वरुप इसका है योनिरुपा। यह भवानी देवी है सिध्ददा।।९६।। देवी का यह ध्यान है गुह्यतर। यह ध्यान है दारिद्र्यनाशक। समस्त तंत्रो में रहस्यस्वरुप। शिवजीनें खुद किया प्रकाशित।।९७।। तंत्र है यह शिवमुखोक्त शास्त्र। किया शिव ने पार्वती को संबोधित। इसके अवतरण में वासुदेव, कार्तिक। गरुड आदि का भी है योगदान।।९८।। स्वामी समर्थजी ने किया प्रेरित।

इससे कर रहा हूँ वर्णित। है सिरपर स्वामीजीं का वरदहस्त। करता हूँ सबको भावपूर्ण नमन।।९९।। हो प्रसन्न कामाख्या मुझपर। दे दे वह अपने आशीर्वचन। हो मेरे सभी कार्य सफल। मिले जीवन में सुखशांती समाधान।।१००।।

।। श्रीकामाख्या माताजीके चरणोंमे समर्पित। परमपूज्य स्वामीजीकें चरणोंमे समर्पित।।

।।अध्याय सातवा।।

श्री गणेशाय नमः। श्री दत्तात्रेयाय नमः। श्री स्वामी समर्थाय नमः। श्री सरस्वत्यै नमः।
श्री कुलदेवताय नमः। श्री कुलस्वामिन्यै नमः। श्री कामाख्यादेव्यै नमः। श्री ग्रामदेवताय नमः।

कामाख्या देवी के चरणों मे वंदन। दे दे वरदान मुझे होकर प्रसन्न। कह रहा हूँ आपका माहात्म्य। मनोकामना मेरी हो जावे पूर्ण।।१।। मेरे सद्गुरु श्री स्वामी समर्थ। है भक्तवत्सल, दयालु, कृपावंत। मेरे सर है उनका वरदहस्त। उनकी कृपा से हो जाऊँ कृपार्थ।।२।। यह कथा है बहुत पुरातन। जीवन रामचंद्रजी का था बडा पावन। लौटे थे वे वनवास से राज्य। कर रहे थे अयोध्या में शासन।।३।। किया था उन्होंने अश्वयज्ञ संकल्प। बने थे शत्रुघ्नजी अश्व के रक्षक। थे रामचंद्रजी यज्ञ में व्यस्त। भरत लक्ष्मण कर हरे थे रक्षण।।४।। भरतजी के पुत्र थे पुष्कल। उनकी भार्या कान्तीमती सुज्ञ। पती से कह रही थी वह। नाथ आपकी हो सर्वत्र विजय।।५।। कीजिए चाचाजी का आज्ञापालन। जिससे होवे यज्ञाश्व का रक्षण। युध्द में न करे मेरा चिंतन। विजय मे होगी बाधा उत्पन्न।।६।। ऐसा कुछ भी न करेंगे आप। जिससे उर्मिलादि करे मेरा उपहास। न कहे कोई तुम्हे महा डरपोक। डरपोक की पत्नी ऐसा न हो उपहास।।७।। कीजिए आप ऐसा कार्य युध्द में। जिससे दूसरे योध्दा रहे आपके पीछे। धनुष्य की टंकार से बधिर हो जाए। तलवार देखकर भयभीत हो जाए।।८।। कान्तिमती से पुष्कलने किया धारण। कवच, मुकूट, धनुष्य, तरकस तथा खड्ग। ये सब शस्त्र धारण करके पुष्कल।

अत्याधिक शोभा से हुए सुशोभित।।९।। इस प्रकार अस्त्र शस्त्र से सुशोभित। वीरमाला से विभूषित पुष्कल। कुंकम,अगरु, कस्तुरी और चन्दन। इनसे पूजित पुष्पमाला से सुशोभित।।१०।। युध्दसज्ज वीर योध्दा पुष्कलकी। उनकी पतिव्रता पत्नी कान्तिमती। उसने की बार बार पुष्कलकी आरती।।११।। आँसुभरी आँखों से कान्तिमतीने। किया आलिंगन पतिको अपने। तब उसे सांत्वना प्रदान करके। धीरगंभीर स्वर में पुष्कल बोले।।१२।। ''प्रिये आप तो है वीर की पत्नी। मेरा वियोग नही अनुभव करेगी। दे दे शूरता से मुझे बिदाई। शुभ कार्य के लिए जा रहा हूँ।।१३।। गये पुष्कल माता - पिता के समीप। माता ने पुत्र को दिया आलिंगन। आँसू भरी आखोंसे बोली स्वस्ति वचन। उनसे बिदा लेते समय।।१४।। अपने पिता से बोले पुष्कल। कर रहे है भगवान श्रीराम यज्ञ। आप और लक्ष्मणजी करेंगे रक्षण। लियी उनसे आज्ञा इतना कहकर।।१५।। पुष्कल चले गए शत्रुघ्नकी सेना में। रथियों, हाथीवाली, अश्वरोही सेना में। प्रसन्नता सें महायज्ञ के घोडे के आगे। महावीर पुष्कल पहुँच गए ।।१६।। पांचालदेश, उत्तरकुरु प्रदेश, दशार्ण। कुरुप्रदेश, श्रीविशाला आदि प्रदेश। सभी प्रदेश थे बडे शोभा संपन्न। जनता सब थी स्वस्थ क्षेमकुशल।।१७।। रावण को जीतनेवाले श्रीराम यशयुक्त। करेंगे अश्वमेधादि पविज्ञ यज्ञ। इससे करेंगे अपने यश का विस्तार। इस तरह करेंगे श्रीराम सबका रक्षण।।१८।। यह सब सुनकर हुए राजा प्रसन्न। हारों, रत्न, वस्त्रों का किया प्रदान। तब शत्रुघ्न के साथ तेजस्वी विशारद। श्रीराम के सचिव सुमति थे।।१९।। महावीर शत्रुघ्न सुमति के साथ। गयें ग्रामो और जनपदों मे विविध। न रोका किसीने भी यज्ञ का अश्व। थे वे राजा महाबली, पराक्रम युक्त।।२०।। पहुँचे वे मुक्तमणिओं के साथ। रघुवीरबंधु पराक्रमी

शत्रुघ्न के पास। बडी नम्रता से बोले वे, 'हे रघद्व। रामजी का है धन, पुत्र, पशु से युक्त राज्य।।२१।। सुनकर राजाओं की प्रेमयुक्त भाषा। शत्रुघ्नजी ने वहाँ स्थापन की आज्ञा। बाद में बढे वे अगली यात्रा की ओर। क्रमशः पहुँचे गये वे अहिच्छापुरी'।।२२।। अनेक प्रकार के वीरोंसे भरी। ब्राह्मण और द्विजोंसे युक्त थी। अनेकविध रत्नोंसे अलंकृत थी। सुवर्ण स्फटिक आदि युक्त वह नगरी।।२३।। सभी भवनों मे थी ललनाएँ सुंदर। रम्भा अप्सराओंसे बढकर रमणीय। थे सब नगरी में भोग, आचारसंपन्न। कुबेर सम थे पराक्रमी वीरपुरुष।।२४।। ऐसी सुसंपन्न नगरी देखकर। देखा सुंदर देवोद्यानसम उद्यान। पुन्नाग, नागचम्पा, तिलक, देवदारु। आम, मंदार, जामुन, ताल, तमाल।।२५।। बकुल, पनस, श्रियाल, अशोक पाटल। चम्पा तथा मदन से था सुशोभित। देखकर उद्यान उस वन के बीच। चला गया उनका यज्ञीय अश्व।।२६।। उसके पीछे शत्रुघ्न गये अंदर। देखा उन्होंने इंद्रानीलमणी, वैडुर्य, मरकत। बेशकिमती मणि रत्नोंसे निर्मित। था एक अद्भुत सुंदर मंदिर।।२७।। देखकर शत्रुघ्नजी हो गये मुदित। ये सुवर्ण से घटित मंदिर के स्तम्भ। पूछा शत्रुघ्नजी ने अपने मंत्रिसे। किस देवता का है यह सुंदर मंदिर।।२८।। इसमें किस देवता की होती पूजा। किस कारण स्थित है यहाँ देवता। तब उनके मंत्री सुमतिने कहा। है यह स्थान कामाक्षा देवी का।।२९।। इस देवी का दर्शन बडा लाभदायक। हुई प्राप्त असुरों को श्री करके दर्शन। यह देवी बडी ही भक्तवत्सल। धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष करती प्रदान।।३०।। इस अहिच्छापुरी के राज है सुमद। उन्होंने किया है देवी को प्रसन्न। उनकी प्रार्थना के ही कारण। करती है देवी भक्त दुःख का विनाश।।३१।। शत्रुघ्न जी आप है वीरों मे श्रेष्ठ। करे आप इस देवी को नमन। देवदैत्योंसे भी

सिध्दी जो दुर्लभ। वें सिध्दी सब करेंगे आप प्राप्त।।३२।। शत्रुघ्नजी ने किया देवी को नमन। पूछा उन्होंने भवानी का विषय। कौन है ये अहिच्छापुरी के स्वामी सुमद। कौनसी तपस्या कियी उन्होंने।।३३।। तब मंत्री सुमति बोले शत्रुघ्नजी से। है एक बडा पर्वत हेमकूट नाम। है यह समस्त देवताओंसे सेवित। है यह सभी ऋषियों से सेवित तीर्थ।।३४।। हो गये थे वे शत्रुओंसे पराभूत। इसीलिए हुए थे समुद बडे खिन्न। मार दिए शत्रुने उनके मातापिता। मारी शत्रुओं ने उनकी प्रजा।।३५।। इसीलिए करते लगे समुद तप। एक पैर खडा रह कर किया तप। बाद में तीन वर्ष सुखे पत्ते खाकर। बाद में किया तप जलमें खडा रहकर।।३६।। ग्रीष्म ऋतु में तापते थे पंचाग्नि। बरसात में वर्षा में रहते थे। इस तरह भक्तिभाव से करते थे तप। बारह बरस बाद हुए भयभीत इंद्र।।३७।। सुमद की कठोर तपस्या देखकर। भयभीत हुए इंद्र शचीवर। बुलाया उसने कामदेव को सपरिवार। दिया इंद्र ने कामदेव को आदेश।।३८।। मोह के स्वामी तुम हो काम। करे मेरा प्रिय कार्य आप। करो सुमद की तपस्या में विघ्न। सुनकर कामदेव हुए बडे प्रसन्न।।३९।। बोले गर्व से इंद्र को कामदेव। मेरे सामने क्या है यह सुमद।।४०।। करता हूँ ब्रह्मा आदि की तपस्या भंग। थोडी ही तपस्या है इसकी।।४०।। मेरे बाणोंसे किया चंद्रमा को विध्द। किया चंद्रमा ने तारा से संग। किया आपने अहिल्या से संग। विश्वामित्र ने किया मेनका से सहगमन।।४१।। देवेंद्र न करे कुछ चिंता आप। करे आप देवताओं का पालन। मैं तो हूँ आपही का सेवक। अभी जाता हूँ सुमद के पास।।४२।। कहकर गये वे हेमकूट पर्वतपर। लिया अपने साथ उसने वसंत। उसी तरह लिया अप्सराओंका समूह। आये बडे गर्व से सुमद के पास।।४३।। किये वसंत ने वृक्ष

पुष्प फलयुक्त। होने लगा कोकिला भ्रमर का रव। दक्षिण दिशा से बहती वायु शीतल। नदी तटपर हुआ लवंग वृक्ष पुष्पित।।४४।। इस तरह हुआ पुर्ण वन सुशोभित। अप्सरा रंभा आयी सुमद के सन्निकट। थी उसकी सखीयाँ उसके साथ। करने लगी किन्नरस्वर में गायन।।४५।। करने लगी सभी मधुर वाद्यवादन। उनका वह मधुर गीत सुनकर। मनोहर वसंत को देखकर। सुमद ने दृष्टी घुमायी दूसरी ओर।।४६।। वह प्रबुध्द हुआ ये देखकर। पुष्पायुत कामने तान लिया धनुष। एक अप्सरा दबाने लगी उसके पैर। दूसरी करने लगी रम्य कटाक्षपात।।४७।। लेकिन सुमद राजा था जितेंद्रिय। था राजा सुमद बडा बुध्दिमान। जाना ये कर हरी है तपस्या में विघ्न। कर रही कार्य इंद्र की आज्ञानुसार।।४८।। पूछा सुमद ने किसलिए हुआ आगमन। क्या है आपको मुझसे कार्य। बोली आपकी तपस्या से आये हम। लिजिए आप हमारा उपभोग।।४९।। सुमद बोले आप है जगन्माता स्वरुप। मैं तप करता हूँ वह माता है सुंदर। तुमने बताया जिस स्वर्ग का सुख। है यह सुख केवल विकल्प युक्त।।५०।। मेरी स्वामिनी करेगी मुझे फलप्रदान। दु:ख हरनेवाली वह देगी सबकुछ। उसकी कृपा से मिला ब्रह्मा को सत्यलोक। क्या चीज है मेरु या नंदनवन।।५१।। सुमद की ऐसी सारी बाते सुनकर। कामदेव ने हाथ में लिया धनुष। किया सुमदपर अनेक बाणों का प्रहार। परंतु सुमद फिर भी था अविचलीत।।५२।। कामदेव के पुष्प बाणों का प्रहार। सुंदरियोंका नुपुरध्वनी, नेत्र कटाक्ष पात। राजा के चित्त में न हुआ विकार। था सुमद का मन इससे विरक्त।।५३।। किये मदन और अप्सराओंने प्रयत्न। करना चाहते थे सुमद को वश। पर था सुमद बडा धैर्यनिष्ठ। न हुआ उनकी क्रिडाओंसे विचलित।।५४।। तब सब

अप्सराएँ गयी लौट। कहने लगी जाकर इंद्र के समीप। है यह राजा बडा धैर्य संपन्न। हुए भयभीत इंद्र सुनकर वचन।।५५।। जितेंद्रिय राजा सुमद को देखकर। हुई कामाक्षा बडी प्रसन्न। सिंह के पीठपर होकर संवार। दिया कामाक्षा ने उसे दर्शन।।५६।। था उस देवी के एक हाथ में पाश। दूसरे हाथ में धनुष्य और बाण। ऐसी जगह को जो करती पवित्र। थी उसकी कान्ती सूर्य समान।।५७।। हो गया राजा बडा रोमाञ्चित। हो गया वह बडा ही प्रसन्न। उनकी भक्ति देखकर देवी हुई प्रसन्न। करने लगी प्रेमपूर्वक उसका तनु स्पर्श।।५८।। हो गये सुमद भक्ति से सद्गदित। किया उन्होंने देवी को प्रणाम। किया गद्गद् स्वरों में देवी स्तवन। हो गये थे राजा बडे रोमांचित।।५९।। राजा बोले,'महादेवि, आप भक्तवत्सल। करती है आधार शक्तिद्वारा स्थापित। इसीलिए है स्थिर सारा जगत। और है पर्वत,वन उद्यानों से सुशोभित।।६०।। आपसे ही है सूर्य आकाश में स्थित। करता है सूर्य पृथ्वी को संतृप्त। करके जल का शोषण देता बरसात। शक्ति उनकी करती है लोककल्याण।।६१।। है आप देवासुरोंसे नमस्कृत। आप है विद्या, माया, और विष्णु का रुप। करती है आप जगत् का पालन। आप से देवता करते है सिध्दी प्राप्त'।।६२।। भक्तवल्लभे,'मैं हूँ आपका सेवक। कीजिए आप मेरा रक्षण। मेरी वांछासिध्दी करे आप। आया हूँ मैं आपकी शरण'।।६३।। इस स्तवन से हुई देवी संतुष्ट। कहा सुमद को माँग लो वरदान। देवी को सुनकर हुए सुमद मुदित। माँगा उन्होंने अपने राज्य का वरदान।।६४।। माँगी देवी चरणों में भक्ति निश्चल। माँगा मुक्ति का वरदान सुमदने। प्रसन्न देवी बोली सुमदसे। न होगा कभी पराभव शत्रुओं से।।६५।। बलशाली श्रीराम रावणको मारकर। करेंगे सामग्री संपन्न अश्वमेध याग। है उनके छोटे भाई

शत्रुघ्न नाम। अश्व की रक्षा करते आयेंगे यहाँपर।।६६।। कर लेना उनका सहर्ष स्वागत। अपना राज्य और धन सबकुछ। करो तुम सब शत्रुघ्न को समर्पित। वीरों द्वारा करो उनका रक्षण।।६७।। उस समय ब्रह्मा ईश द्वारा सेवित। भगवान राम को करना प्रणाम। उससे तुम दुष्प्राप्य मुक्ति करोगे प्राप्त। राम के लिए साधना करते मुनिजन।।६८।। भगवान राम यहाँपर आने तक। करुँगी मैं यहीपर निवास। उसके बाद करके तुम्हारा उध्दार। चली जाऊँगी मैं परम पद।।६९।। सुमद को यह प्रसन्नतासे कहकर। देवी जो देव राक्षसोंसे नमस्कृत। देकर सुमदको बहुत आशीर्वाद। हो गयी जगदम्बा अंतर्धान।।७०।। देवी से सब वरदान पाकर। बाद में अपने शत्रुओं को मारकर। अहिच्छा के राजा हो गए सुमद। है यह राजा वाहनयुक्त बलसंपन्न।।७१।। देवी द्वारा किए गए है उपदिष्ट। नही पकडेंगे वे आपका यज्ञीय अश्व। नगर सन्निकट देखकर उत्तम अश्व। सभी महाराजाओं से सेवित आप।।७२।। करेंगे राजा सुमद आपका सम्मान। करेंगे अपना सबकुछ आपको दान। सुमति से सुनकर यह वृत्तान्त। महाबली शत्रुघ्न हो गए प्रसन्नचित्त।।७३।। अहिच्छत्र के राजा थे सभा में विद्यमान। कर रहे थे उनकी सेवा राजा अन्य। वेद विद्या निपुण न्यायज्ञ ब्राह्मण। दे रहे थे उन्हें प्रसन्नतासे आशीर्वाद।।७४।। उसी समय बोला कोई वहाँ आकर। एक इस पत्र से युक्त अश्व। आया है अहिच्छत्रा नगर के समीप। यह सुनकर राजा ने भेजा सेवक।।७५।। वहाँ जाकर वृत्तान्त सुनकर। आया वह सेवक शत्रुघ्न के समीप। बोले आपका सारा वृत्तान्त जानकर। आया रामचंद्रजी का अश्व यह जानकर।।७६।। करता था जो राजा रामजी का स्मरण। दिया है उस राजाने सबको आदेश। करे सब प्रजा घरों को तोरण से मंगल। आभरण आयुक्त

कन्याएँ मनोहर।।७७।। हाथी पर चढकर जाए शत्रुघ्न सम्मुख। ऐसी आज्ञा प्रजा को देकर। अपने पुत्र रानियों को लेकर। आ गए राजा शत्रुघ्न के समक्ष।।७८।। तब शत्रुघ्नजी थे पुष्कल के साथ। देखा उन्होंने आया राजा सुमद। थे राजा बडी सेना वीरोंसे युक्त। आकर किया उन्होंने शत्रुघ्नजी को प्रणाम।।७९।। बोले राजा सुमद विनम्रता पूर्वक। हो गया आज मैं धन्य कृतार्थ। किया आपने मेरा बडा समादर। है मेरा आपको नम्र निवेदन ।।८०।। है मेरा राज्य सेना ऐश्वर्य से युक्त। है यह राज्य वीरोंसे सुशोभित। महामणि, मुक्ता आदि महाधन संपन्न। करे इस राज्य का शीघ्र स्वीकार।।८१।। कर रहा हूँ मैं प्रतिक्षा चिरकाल। होएगा यहाँ यज्ञाश्व का आगमन। कहा था कामाक्षा देवी ने सब। आज इतने साल बाद हुआ पूर्ण।।८२।। मेरे लिए करे आप नगरका अवलोकन। यहाँ के नगरजनों को करे कृतार्थ। हे महीपते, बनाए यह राज्य पावन। कीजिए हमारा वंश पवित्र ।।८३।। बैठाया पुष्कल को राजा सुमदने । चंद्रमुख नामके हाथी पर। बैठे स्वयं उसी हाथी के पीठ। तभी सुमद राज के द्वारा प्रेरीत।।८४।। भेरी, प्रवण तूर्य तथा वाद्यों की ध्वनि। सारे आकाश में गूँज उठी। हाथी पर हजार कन्याऐं आयी थी। उनके द्वारा सेवा की शत्रुघ्नकी।।८५।। राजा ने खुद शत्रुघ्न के पास जाकर। किया मोतियों से उनका वर्धापन। बादमें प्रसन्नता से वर्धापित। शत्रुघ्न ने किया नगर में प्रवेश।।८६।। आ गए तोरणालंकृत गृह में। हर रत्न और सुशोभित सुमा के साथ। आए शत्रुघ्नजी देवी के मंदिर। कियी वहाँ राजाने उनकी पूजा।।८७।। कियी रामानुज शत्रुघ्न की। राजाने अर्ध्य पाद्य पूजा कियी। कर दिया अपना सकल राज्य। श्रीरामजी के चरणों में समर्पित।।८८।। इस प्रकार किया शत्रुघ्न को संतुष्ट। पूछा उनको रामकथा के

विषय। पूछा सभी लोगों ने बडे श्रेष्ठ। भक्त रक्षावतार रामजी का कुशल।।८९।। बोले उस नगरी के सब नगरवासीय। है वे सचमुच बडे ही धन्य। वे देख सकते है प्रतिदिन। श्रीराम का प्रसन्न मुखकमल नित्य।।९०।। मेरी नगरी में आये आप। हुआ मेरा कुल, भूमि, राज्य कृतार्थ। यह है कामाक्षा का वरप्रसाद। हुआ मुझे रामजी का दर्शन।।९१।। इस तरह से धैर्य संपन्न सुमद। के कहने पर शत्रुघ्नजी ने प्रसन्न होकार। किया श्रीराम के गुणोंका वर्णन। किया तीन रात्र निवास वहाँ पर।।९२।। राजा सुमद ने अपने पुत्र को। शीघ्र किया राज्यपर अभिषिक्त। शत्रुघ्न ने प्रसन्नतासे किया अनुमोदन। पुष्कल ने भी दिया अनुमोदन।।९३।। महामति राजा ने इस अवसर पर। शत्रुघ्न के सेवकोंको प्रसन्न होकर। किमती वस्त्र और मूल्यवान रत्न। किये बडी खुशी से प्रदान।।९४।। निकले उनके साथ राजा सुमद। थे उनके साथ सेना, घोडे रथ। बडी खुशी से राजा सुमद के साथ। निकले आगे शत्रुघ्न अपने मार्ग पर।।९५।। हुई कामाक्षा देवी प्रसन्न अतिशय। मिला सुमद को श्रेष्ठ वरप्रसाद। श्रीरामजी के अनुज शत्रुघ्न। पधारे उसके राज्य में खुद।।९६।। हुआ राजा सुमद का जीवन। रामकथा सुनकर बहोत कृतार्थ। अपने भाग्य से थे वे मुदित। चल दिए शत्रुघ्न के साथ होऊन प्रसन्न।।९७।। कर रहे थे दोनो आपस में। बडी प्रसन्नता से बातचीत। हँसते हुए बोल रहे थे शत्रुघ्न। सुन रहे थे राजा प्रसन्नचित्त।।९८।। कहानी कामाक्षा की यह मनोरम। सुनकर होता है पापों का क्षय। है यह कथा बडी पुण्यप्रदायक। देवी की कृपासे जीवन हो सुखदायक।।९९।। कामाख्या देवी का यह माहात्म्य। पढकर सुनकर होगें दु:खमुक्त। स्वामीजी की कृपा से करता हूँ बयान। कामाख्या देवी चरणोंमे प्रणाम।।१००।।

।। श्रीकामाख्या माताजीके चरणोंमे समर्पित। परमपूज्य स्वामीजीकें चरणोंमे समर्पित।।

।।अध्याय आठवा।।

श्री गणेशाय नमः। श्री दत्तात्रेयाय नमः। श्री स्वामी समर्थाय नमः। श्री सरस्वत्यै नमः।
श्री कुलदेवताय नमः। श्री कुलस्वामिन्यै नमः। श्री कामाख्यादेव्यै नमः। श्री ग्रामदेवताय नमः।

स्वामीजी आपके चरणों में वंदन। आपकी कृपा का है आशीर्वचन। आपकी कृपासे कर रहा हूँ लेखन। कर रहा हूँ कामाख्या माहात्म्य वर्णन।।१।। आपकी कृपा से हो शारदा प्रसन्न। मिले शारदा से शब्दों का वरदान। बने शब्द सार्थ प्रसादयुक्त। स्वामीजी , आपके चरणों में निवेदन।।२।। पाण्डव द्युतक्रीडा में हुए पराजित।मिला उनको वनवास द्वादश वर्ष। उसके बाद एक वर्ष था अज्ञातवास। या यह बडा ही कठीण कार्य।।३।। यदि पहचाने गये अस वर्ष में पाण्डव। फिर से भोगना था द्वादश वर्ष वनवास। फिर बाद में एक वर्ष का अज्ञातवास। लेकिन देवी कामाख्या का मिला वरदान।।४।। बहुत काल तक भ्रमण करने के बाद। पहूँचे पाण्डव कामाख्या योनिपीठ। किया था बहुत समय के पूर्व। यहाँ शंकरजीने बडा महान तप।।५।। पाण्डव थे स्वभावसे धर्म परायण। बडे श्रध्दावान और अतिशय विनम्र। इस स्थान में पाण्डवोंने विधानपूर्वक। बडी भक्तिभाव से की भगवती पूजन।।६।। कियी प्रार्थना बडे विनम्र भावसे। मिले उनका राज्य उन्हें फिरसे। मिले जय अत्यंत घनघोर युध्द में। दुष्ट कौरवों का हो जावे अंत।।७।। हो गई देवी पाण्डवोंको प्रसन्न। देखकर उनकी भक्ति और शुध्दभाव। पांडवों के सामने हुई प्रकट। बोली बडी प्रसन्नतासे मधुर वचन।।८।। कुरुवंश के भाग्यशाली

धर्मपुत्र। तुम वनवास की प्रतिज्ञा करोगे पार। दुरात्मा धार्तराष्ट्रों को मारकर। तुम्हारा राज्य करोगे तुम प्राप्त।।९।। तुम्हारे ये पराक्रमी चारो भाई। धार्तराष्ट्रों को ससैन्य मार डालेंगे। देवताओंकी प्रार्थना सुनकर। देवकी द्वारा प्रकट हुई हूँ वसुदेव के घर।।१०।। मेरी ही आज्ञा से विष्णु भगवान। भाई अर्जुन नाम से हुए उत्पन्न। करने के लिए पृथ्वीभार हरण। कृष्णरुप में करुँगी मै सहाय्य।।११।। करके अर्जुन को आगे मैं ही। भीष्म, द्रोण, अनेकों को मार डालुँगी। वायुपुत्र भीम युध्द में समस्त। धृतराष्ट्र पुत्रों को मार गिराएगा।।१२।। पृथ्वी भारभूत सैकडों राजाओंको। तुम्हारे अन्य आश्रितगण मार डालेंगे। होगा इस प्रकार महाभारत युध्द। होगी उसमें तुम्हारी ही जीत।।१३।। मेरी कृपासे मिलेगा राज्य। इसमें नही है कुछ भी संदेह। इसप्रकार देवी से वरदान प्राप्त। होनेपरहुए युध्दिष्ठिर बहुत प्रसन्न।।१४।। युधिष्ठिर ने किया महादेवी का स्तवन। बोले महादेवी आपको मेरा वंदन। तुम देवता, असुर और विश्व वंदित। हे कामेश्वरी मेरा तुम्हे है नमन।।१५।। आप जगत की आदि कारण भूता। हे कामेश्वरी न जानते कोई देवी देवता। सभी देवेश्वर और स्वयं ब्रह्मा। न जानते है प्रभाव आपका।।१६।। कृपा करके आप हो प्रसन्न। मेरा तुम्हें विनम्र अभिवादन। कामेश्वरी आप जगत् को वन्द्य। हो अनादि, परमा विद्या आप।।१७।। देहधरियोंका देह धारण करनेवाली। बीज स्वरुपा सभी प्राणियों की आप ही बुध्दि, चेतना, धृती। मेरा सादर प्रणाम तुम्हे कामेश्वरी।।१८।। कामेश्वरी खुद हो आपही। निद्रा, स्थिती और जागृति। सज्जनों की शक्ती, साधुओं की भक्ति। नमस्कार मेरा चरणोंमे आपकी।।१९।। परमात्मा शिव करते आराधन। आपकी भक्ति करमे होते कृतार्थ। त्रिजगत् की शक्ति मूलमात्र। आपकी चरणों में मेरा

वंदन।।२०।। दुराचारियोंकी दुराचरणका। संहार करनेवाली तुम देवता। तुम पापपुण्य फल की दायिका। करती हो नाश त्रिलोक तापका।।२१।। आपही हो ऐसी अद्वितीया शक्ति। सृष्टी,स्थिती, विनाश करनेवाली। आपही हो विकरालमुख काली। आपको मेरा प्रणाम हे कामेश्वरी।।२२।। शरणागतों की रक्षा करनेवाली। कमलसुन्दर प्रसन्न मुखवाली। हे त्रिपुरसुंदरी जगज्जननी। आपको मेरा शतशः वन्दन।।२३।। चरणो में तेरे आया हूँ शरण। परमे, पूर्णे, कामेश्वरी, तुम हो प्रसन्न। शुध्दज्ञानयुक्त तुम करती सृष्टीसृजन। पूर्ण प्रकृती विश्वमाते तुम्हे नमन।।२४।। हे देवी, माते, परमे, पूर्णे कामेश्वरी। हे त्रिलोक वरदायिनी सुंदरी। सृजन पालन संहार करनेवाली। जगज्जननी, विश्वमाते, तुम्हे वंदन।।२५।। धर्मात्मा युधिष्ठिर का स्तवन सुनकर। हो गयी देवी भगवती प्रसन्न। कहा उसके सामने होकर प्रकट। माँग लो वर तुम इच्छा के अनुसार।।२६।। तब बोले धर्मपुत्र युधिष्ठिर। आपकी कृपासे प्रतिज्ञानुसार। बिता बारह वर्ष दुःखमय वनवास। अभी करना है एक वर्ष अज्ञातवास।।२७।। अब रहना है हमे अविदित रुप। यह है अत्यंत कष्टदायक काल। इस संकटकाल में हम किस प्रकार। कर सके हम यह एक वर्ष पार।।२८।। है यह बहुतही कठिणतम काल। रहे सिरपर सदा तुम्हारा वरदहस्त। इसलिए हम पार कर सके यह समय। हमारे सिर रहे आपका वरदान।।२९।। देवी बोली तब बडी प्रसन्न होकर। रहो आप सब चिन्तारहित। मत्स्यदेशराजा विराट के नगर। बिताना वर्ष वही पर सब साथ रहकर।।३०।। वहाँ द्रौपदी और अपने भाईयों के साथ। बित जाएगा आपका अज्ञातवास। इसमे हो जाओगे सब सफल। उसके बाद करोगे प्राप्त आप राज्य।।३१।। सुनकर यह युधिष्ठिर हुए प्रसन्न। किया

उन्होंने भगवती को वंदन। तभी तेजस्वी विद्युत लहरी सम। देवी हुई क्षणमें ही अंतर्धान।।३२।। अनन्तर सर्वश्रेष्ठ युधिष्ठिर नें। बुला लिया भाईयों को अपने। निवास संबंधी कियी मंत्रणा उनसे। किया प्रस्थान विराटनगर के लिए।।३३।। आते ही नगर के अत्यंत समीपमें। सब शस्त्रअस्त्रों को रखा उन्होंने। एक घनदाट शमीवृक्ष की कोटरमें। किया देवी को प्रणाम बादमें।।३४।। सुवर्णरचित पाश लेकर हाथ में। विप्रवेष युधिष्ठिर आये विराट के सामने। देखकर विप्रवेष युधिष्ठिर सभा में। उनका परिचय पूँछा विराटने।।३५।। बोले तब धर्मपुत्र युधिष्ठिर। आया हूँ मैं आपको शरण। हूँ मैं युधिष्ठिर संराक्षित। द्युतकुशल कङ्क नाम ब्राह्मण।।३६।। सुनकर विराट राजा हुए मुदित। दिया उन्हें अपनी सभा में संरक्षण। आये वैसे ही भीमराज वहाँपर। हो गए वे राजपाकशाला में नियुक्त।।३७।। मिली मत्स्यराज से अनुमती। इसलिए अर्जुन जो स्त्री वेषधारी। नृत्यशाला में हुई उसकी नियुक्ती। हो गए वे कन्याओं के नृत्यशिक्षक।।३८।। सर्वाङ्ग सुंदरी देवी द्रौपदी। हुई राजपत्नी सुदेष्णा की। प्रसाधन - सेविका सैरन्ध्री नामवाली। आ गए उसी राज पुत्र माद्री के।।३९।। आये दोनो विराट राजा के पास। अश्वशाला और गोशाला में हुए नियुक्त। महादेवी थी उन सब पर प्रसन्न। इस कारण उन्हे नही पहचाना किसीने।।४०।। लेकिन कैसा यह असाधारण योग। उसी वर्ष के ग्यारहवें महिने में। आ गए सुदेष्णा के भाई कीचक। देखा उन्होंने सैरन्ध्री को उस वक्त।।४१।। अति सुंदर सैरन्ध्री को देखकर। पूँछा उन्होंने अपनी बहनको। कौन है यह सुंदरी तुम्हारे पास। है क्या यह शची देवराज की पत्नी।।४२।। क्या है यह साक्षात विष्णु की पत्नी। है उसका सौंदर्य अलौकिक। नही देखी इस स्त्री जैसी। सर्वांग सुंदरी कोई नही देखी।।४३।। अपने

भाई से सुदेष्णा बोली। इस सुंदरी का नाम है सैरन्ध्री। धर्मपुत्र युधिष्ठिर के महलसे आयी। अचानक से मेरी सेवा में लगी।।४४।। बोले कीचक अपनी बहनसे। तुम जल्द ही कुछ ऐसा करो। करे सैरन्ध्री स्वीकार मुझे। नही तो जाऊँगा मैं यमलोक।।४५।। सुदेष्णा बोली है एक अद्‌भूत बात। है यह बात बडी ही रहस्यमय। सोच समझकर बोलो सुनकर बात। तभी करुँगी मैं तेरा कार्य।।४६।। आयी जब वह यहाँ रहने के लिए। तुम मुझसे सुंदर हो बोला मैने। तुम मेरी सेवा के योग्य नही। तुम्हें देखकर राजा हो जाएँगे मोहीत।।४७।। तुम्हारा सौंदर्य देखकर मोही होंगे। हो जाएँगे वे तुम्हारी वशमें। बाद में वे मेरे पास भी नही आयेंगे। होगा यह तो मेरा दुर्भाग्य।।४८।। इसीलिए मेरी विनंती है आपसे। नही रह सकती तुम मेरे पासमें। जाओ इसके अलावा और कही भी। अपनी इच्छानुसार चली जाओ।।४९।। यह सुनकर कहा सैरन्ध्रीने। रहूँगी जब तक तेरी भवनमे। तब तक कोई पुरुष न यहाँ आये। मेरे पती है पाँच वीर गन्धर्व।।५०।। मेरी रक्षा करते है वे दिनरात। इसलिए कोई भी अन्य पुरुष। नही कर सकता मुझपर बलप्रयोग। सुनो तुम्हें मुझसे नही भय।।५१।। उसकी बाते सुनकर रखा मैने उसे। तुम न पडो उसके पीछे। यही है मेरी विनंती भाई तुझसे। पाँचो गन्धर्व मार डालेंगे तुझे।।५२।। हो गया था कीचक बडा मोहीत। बोला गन्धर्वोंसे नही है भय। मैं ही करुँगा उन पाँचो का वध। उनके भय से हो जाओ निश्चिंत।।५३।। तुम सीर्फ इतना ही करो। मिठी मिठी बाते सुनाओ उसे। किसी भी तरह से मनालो। साँज को भेजो मेरी शय्यापर उसे।।५४।। सुदेष्णाने तब बुलाय सैरन्ध्रीको। बोली मेरे भाई कीचक के पास जाओ। बहुत ही चाहता है मेरा भाई तुमको। रुपवान कीचक का स्वीकार करो।।५५।। बोली सैरन्ध्री

मेरे पतियों के अतिरिक्त। नही करती मैं किसीका अंगिकार। नही कर सकता मुझपर कोई बलप्रयोग। वे गन्धर्व कर देंगे उसका वध।।५६।। सुदेष्णा बोली भाई कीचकसे। नही आयेगी सैरन्ध्री पास तुम्हारे। तब बलपूर्वक शीलहरण की। कियी चेष्टा उस दुष्ट कीचकने।।५७।। हो गयी भयभीत तब द्रौपदी। देवी शिवा के शरण में आयी। आप है सब दु:ख हरण करनेवाली। आप हीं है सबकी रक्षा करनेवाली।।५८।। आपही देवी कृपालु जगज्जननी। मुझपर प्रसन्न हो देवी भगवती। चैतन्यरुपिणि, विश्वेश्वरि, महेश्वरी। मेरा नमस्कार तुम्हें कात्यायनि।।५९।। दुर्गा माँ आप मोहस्वरुपा देवी। आप ही शुध्द ज्ञानस्वरुपा जननी। आपही हो सबकी रक्षण कर्त्री। आपही हो प्राणप्रिया सदाशिव की।।६०।। आपही हो दीनजनों की परमाशक्ति। इस दारुण भय से करो रक्षा मेरी। अनन्य शरणमें हूँ मैं आपकी। करो रक्षा मेरी संकटसे हे देवी।।६१।। द्रौपदी की प्रार्थनासे हुई प्रसन्न। कहा देवी ते अंतरिक्ष स्थित होकर। सैरन्ध्री, किचक का मत करो भय। है अब उसकी मृत्यु ही निश्चित।।६२।। सैरन्ध्री पर हुई देवी प्रसन्न। मिला उसे देवी से वरदान। हो गयी वह निर्भय निश्चिंत। करने लगी राजभवन में विचरण।।६३।। किसी कार्य के लिए एक दिन। गयी सैरन्ध्री कीचक के घर। कामलोलुप कीचक ने उसे देखकर। लिया उसका हाथ पकड।।६४।। भाग गयी सैरन्ध्री उसे ढकेलकर। आ गयी मत्स्यराज के सभास्थान। तब धर्मपुत्र और भीमसेन। थे राजा के साथ द्युतमग्न।।६५।। उसने राजा की निन्दा कियी। युधिष्ठिर और भीमसेन को घृणा से देखकर। मत्स्यराजा के भवन में अचानक। सैरन्ध्री चली गयी वहाँ से।।६६।। बाद में भीमसेन ने कहा सैरन्ध्रीसे। बुलाओ कीचक को राजभवन में। उसे पकडकर मै करुँगा

वध। कहना गन्धर्वोसे मारा गया कीचक।।६७।। भीम की बात मानकर सैरन्ध्रीने। बुलाया किचक को राजभवन में। उसे मार डाला भीमसेनने। सैरन्ध्री बोली मारा गन्धर्वोंने ।।६८।। सुनकर उपकीचक वहॉ आ गये। उसका दहन करने के लिए आये। रात्री का समय बिताया रोने में। उन्हें सैरन्ध्री का भी करना था दहन।।६९।। उपकीचक पकडने आये सैरन्ध्रीको । उच्चस्वरमें विलाप किया उसने। सुनकर दीवार लाँघकर भीम आये। उपकीचकों का कर दिया वध।।७०।। लोगों मे भी हुई चर्चा सब ओर। गन्धर्वोंने मारा उपकीचकों को। हो गये भयभीत राजा विराट। उन्होंने सैरन्ध्री को बुलाया।।७१।। राजा बोले विनयपूर्वक उसे। तुम्हारे कारण इतने रक्षक मारे गये। अब एक ही विनंती है तुमसे। मेरा नगर छोडकर तुम चली जाओ।।७२।। बोली सैरन्ध्री बडी विनम्रतासे। क्षमा कीजिए राजन् मुझे। शीघ्र ही मै यह राजप्रसाद छोडके। चली जाऊँगी दूर यहाँ से।।७३।। तत्पश्चात अज्ञात वास का तेरहवा वर्ष। बडी सफलता पूर्वक हुआ व्यतीत। कीचकोंका वध सुनने के बाद। वहाँ पांडव होंगे हुआ निश्चित।।७४।। तब राजा दुर्योधन मत्स्यदेश आया। उसका अर्जुन के साथ युध्द हुआ। युध्द में भीष्मद्रोणादि हुए पराजित। दुर्योधन को वापस जाना पडा।।७५।। इस कारण यहाँ रहनेवाले ये सब। है बडे पराक्रमशाली पांडव। मत्स्यराज विराटने यह जानकर। कियी उनकी पूजा विनम्र होकर।।७६।। वहाँ ही अर्जुन पुत्र अभिमन्यु का। विराट पुत्री उत्तरा के साथ ब्याह हुआ। मत्स्यदेश पुरा आनंदित हुआ। अत्यंत आनंददायक मंगलोत्सव हुआ।।७७।। यह सब होने के बाद में। महाभारत युध्द की तैयारी हुई शुरु। पाञ्चालदेश के राजा सेना को लेकर। पाण्डवों को साथ देने के लिए आए।।७८।। काशिराज

और अन्य बडे नृपवर। पाण्डवोंकी सहायता के लिए आए। मत्स्यदेश के अन्य राजा जुड गए। सभी मिलकर कुरु क्षेत्र में पधारे।७९।। देवी कामाख्या का था वरप्रसाद। बीत गया सुखमय अज्ञातवास। हो गया उसके बाद महाभारत रण। हो गए देवी कृपासे विजयी पांडव।।८०।। इस प्रकार पांडवों को साथ मिला। भगवती का वरप्रसाद मिला। हो गए पांडव रण में विजयी। देवी कामाख्या ने कृपा कियी।।८१।। सुनकर नारदजी का विनित वचन। शिव ने बताया मंगलमय कामाख्या कवच। बोले यह दिव्य कावच सुनने मात्र। उपद्रव, भूख, प्यास, विघ्न करते पलायन।।८२।। कामरुप में निवास करनेवाली। पूर्व दिशासे करे रक्षण तारा भगवती। अग्निकोणम षोडशी देवी। दक्षिण दिशा से रक्षा करे धुमावती।।८३।। नैऋत्य कोणम् भैरवी भगवती। पश्चिम दिशा से देवी भुवनेश्वरी। वायव्य कोणम् मे करे देवी महेश्वरी। छिन्नमस्ता निरंतर करे रक्षा मेरी।।८४।। उत्तरदिशा में विद्या देवी बगलामुखी। ईशान कोण में महात्रिपुरसुंदरी। कामाख्या शक्तिपीठ निवासिनी। उर्ध्वभाग से रक्षा करे मातंगी।।८५।। स्वयं भगवती कालिका देवी। सर्वत्र नित्य करे रक्षा मेरी। सर्वत्र रक्षा करे देवी भगवती। रहे मेरे साथ सदा कृपा देवी की।।८६।। प्रश्नरुपा, महाविद्या, सर्व विद्यामयी। स्वयं दुर्गा करे रक्षा मेरे सिरकी।।८७।। त्रिपुरा देवी करे रक्षा मेरे भौहोंकी। शर्वाणी रक्षा करे नासिकाकी। करे रक्षा देवी चण्डिका आँखोकी। दोनो कानों की रक्षा नील सरस्वती।।८८।। श्री भगवती सौम्यमुखी मुख की। देवी पार्वती करे रक्षा ग्रीवा की। जिह्वा ललन भीषणा देवी भगवती। सदा रक्षा करे मेरी जिह्वा की।।८९।। साक्षात देवी वागेश्वरी वदन की। भगवती महेश्वरी वक्षस्थलकी। महाभुजा करे रक्षा दोनो बाहुकी। सुरेश्वरी करे हाथ की अंगुलियों

की।।९०।। देवी भीमाख्या रक्षा करे पृष्ठभाग की। भगवती दिगंबरी कटि प्रदेश की। और महाविद्या देवी महोदरी। करे रक्षा मेरे उदरकी।।९१।। महादेवी उग्रतारा जंघा, उरुओं की। तथा देवी सुर सुंदरी गुदा की। तथैव मेरे अण्डकोश। लिंगकी। तथा वह देवी रक्षा करे नाभिकी।।९२।। भवानी त्रिदशेश्वरी पैर के अंगुलियोंकी। सदा रक्षा करे वह मेरे पैरों की। देवी शवासना रक्त, मांस, अस्थि। करे रक्षा मेरे मज्जा आदि की।।९३।। कामाख्या शक्तिपीठ निवासिनी। महाभय का निवारण करनेवाली। होकर प्रसन्न वह महामाया देवी। भयंकर महाभयसे करे रक्षा मेरी।।९४।। भस्माचलपर स्थित दिव्य सिंहासनपर। सदा विराजमान रहनेवाली। सदा प्रसन्न होकर वह कालिका देवी। सभी विघ्नों से करे रक्षा मेरी।।९५।। अब जो भी स्थान नही कहा कवच में। अत एव रह गया वह रक्षा रहीत। करे रक्षा सदा उन सभी स्थानोंकी। सर्वदा सर्व रक्षणकारिणी रक्षा करे उनकी।।९६।। बोले तभी महादेव,‘‘’हे मुनिश्रेष्ठ। मेरे द्वारा कहा गया यह रक्षा करनेवाला। देवी कामाख्याका यह उत्तम कवच। है यह अत्यंत गोपनीय और श्रेष्ठ।।९७।। इस कवच से रक्षित साधक होते निर्भय। मंत्रसिध्दि विरोध भय से सुरक्षित। जो धारण करे इसे कण्ठ वा बाहु में। निर्विघ्न हो कर मनोवांछित सिध्दि करे प्राप्त।।९८।। बहु अमोघ आज्ञावाला होकर। होता है वह सर्व विद्याओंमें प्रविण। जहाँ जाता है उन सभी जगह पर। दिन प्रतिदिन मंगल सुख करता प्राप्त।।९९।। जो जितेंद्रिय व्यक्ति करता है। इस अद्‌भूत कवच का पाठ नित्य। जाता है वह भगवती धाम निश्चित। नि:संशय है यह वात सत्य सत्य।।१००।।

।। युधिष्ठिर उवाच कामाख्या स्तुती ।।

नमस्ते परमेशानि ब्रह्मरुपे सनातनि। सुरासुरजगद्वन्द्ये कामेश्वरी नमोऽस्तु ते।।१।।

न ते प्रभावं जानन्ति ब्रह्माद्यास्त्रिदशेश्वरः। प्रसीद जगतामाद्ये कामेश्वरी नमोऽस्तु ते।।२।।

अनादिपरमा विद्या देहिनां देहधारिणी। त्वमेवासि जगद्वन्द्ये कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।३।।

त्वं बीजं सर्वभूतानां त्वं बुध्दिश्चेतना धृतिः। त्वं प्रबोधश्च निद्रा च कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।४।।

त्वामाराध्य महेशोऽपि कृतकृत्यं हि मन्यते। आत्मानं परमात्माऽपि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।५।।

दुर्वृत्तवृत्तसंहर्त्रि पापपुण्यफलप्रदे। लोकानां तापसंहर्त्रि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।६।।

त्वमेका सर्वलोकानां सृष्टिस्थित्यन्तकारिणी। करालवदने कालि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।७।।

प्रपन्नर्तिहरे मातः सुप्रसन्नमुखाम्बुजे। प्रसीद परमे पूर्णे कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।८।।

त्वामाश्रयन्ति ये भक्त्या यान्ति चाश्रयतां तु ते। जगतां त्रिगजध्दात्रि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।९।।

शुध्दज्ञानमये पूर्णे प्रकृतिः सृष्टिभाविनी। त्वमेव मातार्विश्वशि कामेश्वरि नमोऽस्तु ते।।१०।।

।। कामाख्या कवच ।।

ॐ प्राच्या रक्षतु मे तारा कामरुपनिवासीनी। आग्रेय्यां षोडशी पातु याम्यां धूमावती स्वयम्।।१।। नैऋत्यां भैरवी पातु वारुण्यां भुवनेश्वरी। वायव्यां सततं पातु छिन्नमस्ता महेश्वरी।।२।। कौबेर्यां पातु मे देवी श्रीविद्या बगलामुखी। ऐशान्यां पातु मे नित्यं महात्रिपुरसुन्दरी।।३।। ऊर्ध्वरक्षतु / ऊध्व्ररक्षतु मे विद्या मातंगी पीठवासिनी।

सर्वतः पातु मे नित्यं कामाख्या कलिकास्वयम्।।४।। ब्रह्मरुपा महाविद्या सर्वविद्यामयी स्वयम्। शीर्षे रक्षतु मे दुर्गा भालं श्री भवगेहिनी।।५।। त्रिपुरा भ्रूयुगे पातु शर्वाणी पातु नासिकाम। चक्षुषी चण्डिका पातु श्रोत्रे नीलसरस्वती।।६।। मुखं सौम्यमुखी पातु ग्रीवां रक्षतु पार्वती। जिव्हां रक्षतु मे देवी जिव्हाललनभीषण।।७।। वाग्देवी वदनं पातु वक्षः पातु महेश्वरी। बाहू महाभुजा पातु कराङ्गुली सुरेश्वरी।।८।। पृष्ठतः पातु भीमास्या कट्यां देवी दिगम्बरी। उदरं पातु मे नित्यं महाविद्या महोदरी।।९।। उग्रतारा महादेवी जङ्घोरु परिरक्षतु। गुदं मुष्कं च मेदं च नाभिं च सुरसुंदरी।।१०।। पादाङ्गुली सदा पातु भवानी त्रिदशेश्वरी। रक्तमासास्थिमज्जादीनपातु देवी शवासना।।११।। महाभयेषु घोरेषु महाभयनिवारिणी। पातु देवी महामाया कामाख्यापीठवासिनी।।१२।। भस्मचलगता दिव्यसिहासनकृताश्रया। पातु श्रीकालिकादेवी सर्वोत्पातेषु सर्वदा।।१३।। रक्षाहीनं तु यत्स्थानं कवचेनापि वर्जितम्। तत्सर्वं सर्वदा पातु सर्वरक्षण करिणी।।१४।। इदं तु परमं गुह्यं कवचं मुनिसत्तम। कामाख्या भयोक्तं ते सर्वरक्षाकरं परम्।।

।। श्रीकामाख्या माताजीके चरणोंमे समर्पित। परमपूज्य स्वामीजीकें चरणोंमे समर्पित।।

।।अध्याय नववा।।

श्री गणेशाय नमः। श्री दत्तात्रेयाय नमः। श्री स्वामी समर्थाय नमः। श्री सरस्वत्यै नमः।
श्री कुलदेवताय नमः। श्री कुलस्वामिन्यै नमः। श्री कामाख्यादेव्यै नमः। श्री ग्रामदेवताय नमः।

श्रीगणेशजी है आपका वरदहस्त। श्री कुलस्वामिनी का कृपाछत्र। कुलस्वामी सदा मुझपर प्रसन्न। उनकी ही कृपा से मेरा जीवन।।१।। देवी का माहात्म्य है शब्दातीत। देवी की कृपा से जीवन कृतार्थ। देवीजी का है अलौकिक सामर्थ्य। उनके चरणों में मेरा वंदन।।२।। मेरे गुरु है स्वामी समर्थ। उनकी आज्ञा से कहता हूँ माहात्म्य। किया उन्होंने मुझे प्रेरीत। करता हूँ बयान कामाख्या चरित्र।।३।। कामरुप की वायव्य दिग्स्थित। है जल्पीश नाम पवित्र लिंग। उनकी आराधनासे किया प्राप्त। नन्दी ने गणों के स्वामी पद।।४।। उसी के निकट समीप में स्थित। जगन्मयी महामाया कामाख्या स्थित। यहाँपर ही नन्दी ने किया प्राप्त। सदाशिव से गाणपत्य पद।।५।। यहाँपर हैं विविध तीर्थक्षेत्र। है यहाँ पर नदियोंका उगम। करते पवित्र सभी को सब। देते है भक्तों को कैवल्यपद।।६।। जटोदा, सितप्रभा, नवतोया नाम। सभी नदियों यहाँ उगमस्थान। इनके जल में स्नान, जल का पान। होता है इससे ब्रह्मलोक प्राप्त।।७।। नन्दीकुण्ड में स्नान, नक्तव्रत। दुसरे दिन जाऐ जल्पीश मन्दिर। जाकर वहाँ करने से दर्शन। करे भक्ति से जल्पीश शिव पूजन।।८।। है यहाँ सिध्देश्वरी शिवा मंदिर। करे यहाँ पूजन और उपवास। करे यहाँ अष्टमी में उपवास। उससे होती है देवी प्रसन्न।।९।। कहा है

इस में पंचाक्षर जप। कामाख्या तंत्र से करे पूजन। जो करे इन दोनों का प्रयोग। नहीं लेना पडता उसे पुनर्जन्म।।१०।। जल्पीश, वरद, अभयमुद्रा युक्त। है जल्पीश दो भुजा युक्त। कुंद की आभायुक्त जल्पीश का पूजन। करे भक्ति से कहकर तत्पुरुष मंत्र।।११।। और्व मुनि से पूछा सगरने। कामरुप पीठ संस्थान के बारे में। बोले,'' शिव - अंबिका का स्थान। उनका माहात्म्य है प्रिय मुझे''।।१२।। और्व ने कहा कामरुप क्षेत्र। कामरुप का वायव्य भाग। किया है मैने उसका बयान। सुनो उसका नैऋत्य, उत्तर, मध्य पूर्व भाग।।१३।। करतोया नदी के दक्षिण भाग में। बहुरोका नाम नदी पवित्र। बहती यह उत्तर दिशा की ओर। है कामरुप के पूर्वभाग स्थित।।१४।। है यहाँ सुरस नाम का जीमृत(पर्वत)। है इसीसे बहुरोका का उगम। करती है यह वृष प्रदान। है समीप में महावृष नाम लिंग।।१५।। सुरस पर्वत के ही समीप। है महावृष नाम शिवलिंग। देवी महेश्वरी इसी स्थानपर। है योनिमण्डलरुपमें स्थित।।१६।। बहुरोका नदी में स्नान कर। सुरस नाम पर्वत पर चढकर। करेगा जो शिवरुप महावृष। तथा देवी महेश्वरी का पूजन।।१७।। इससे श्रध्दावान साधक। होता है पापोंसे मुक्त। जीतकर सभी प्रकारके द्वंद्व। नही होता है उसका पुनर्जन्म।।१८।। महावृष है वरद अभयकारक। मुद्रा और शूल करता धारण। है यह चारभुजाओंसे युक्त। है यह वृषभ पर सँवार।।१९।। है यह तेजस्वी शुध्दस्फटीक सम। करते अघोर मंत्र से पूजन। है यह महेश्वरी कामेश्वरी स्वरुप। करती है यह फलप्रदान।।२०।। उसी स्थान पर है वशिष्ठ कुण्ड। है यह वशिष्ठ मुनिद्वारा सेवित। पुरा रोके गये थे वशिष्ठ। नरकासुर राक्षस द्वारा यही पर।।२१।। वशिष्ठ ने दिया नरकासुर को शाप। तभी वशिष्ठमुनिने किया कुण्ड। है यह कुण्ड

देवगणों से पूजित। इसमें स्नान से मिलता है स्वर्गलोक।।२२।। सुरस के पूर्व में है पर्वत। इस पर्वत का नाम है कृत्तिवास। प्राचीन काल में भगवान शिव। सती के साथ करते थे निवास।।२३।। बहती है यहाँ चंद्रिका नदी। इसमें स्नान करके करे कृत्तिवास दर्शन। इससे हो जाता है वह उत्तम पुरुष। भूतेश शिव को करता है प्राप्त।।२४।। हंसनदी के थोडीही दूरीपर। बहती श्रेष्ठनदी फेनिला नाम। ब्रह्मा की पुत्री है यह। शतानन्द लाये इसे धरती पर।।२५।। देवोत्थान एकादशी नाम ब्रह्मोत्थान। दिवस करते जो फेनिला में स्नान। जीत जाता है वह पुरुष नरक। करता है वह स्वर्गलोक प्राप्त।।२६।। ऐसे अनेक पवित्र नदी युक्त। अनेक तीर्थस्नान यहाँ पर। छुट जाता इससे नरकवास भय। होता सबको स्वर्गलोक प्राप्त।।२७।। है नन्दन पर्वत के पूर्वभाग। भस्मकूट नाम एक पर्वत। यह पर्वत ही है खुद शिवरुप। है वह सदा उत्तम और शांत।।२८।। भस्मकूट के दक्षिण में उर्वशी नाम। इंद्र को जो करती प्रसन्न। यह पीयुष धारिणी देवी स्थित। पहले देवताओंने किया स्थापित।।२९।। कामाख्या भोजन के लिए अमृत। उसे धारण किये उर्वशी स्थित। थोडा थोडा करके वह अमृत। करती नित्य योनि मंडल में स्थापित।।३०।। उर्वशी कुंड मे करती जो निवास। सुधा धारिणी उर्वशी शिलाओं के अंदर। बहती भस्मकूट के मध्य में। इसमें स्नान से मिलता है मोक्ष।।३१।। कामाख्या के योनि मण्डल से । ईशानकोण दिशा में जाती सदैव। भस्मकूट में करती है प्रवेश। यह उर्वशी धारण करती अमृत।।३२।। उस अमृत से देवी प्रमुदित। होती सदा वह प्रसन्नतायुक्त। करती यहाँ पर कामाख्या निवास। रहती है मुदित वह काम के साथ।।३३।। भस्मकूट के ईशान कोण में। है मणिकूट नाम महान पर्वत। है यहाँपर मणिकर्ण शिवलिंग। है यह

शिव का सद्योजात रुप।।३४।। सद्योजात मन्त्र से करे साधक। मणिकर्ण सदाशिव का पूजन। करे इन्द्रसहित मणिकर्णेश्वर दर्शन। भस्माचल जाने से मिलता मोक्ष।।३५।। वर्ण 'श' हो चंद्रबिंदु समन्वित। कहते है शँ शुक्र का बीज। करे साधक उससे इंद्र का पूजन। उससे इन्द्र होता है प्रसन्न।।३६।। मणिकूट के पूर्व मैं है मत्स्यध्वज।यह पर्वत है परम पवित्र। होकर कामदेव ने मत्स्यरुप। शिवाराधना से प्राप्त किया स्वशरीर।।३७।। यहीपर है नदी शाश्वती नाम। वहीपर है कामसर नाम सरोवर। शाश्वती में स्नान कामसर जलपान। साधकको इससे मिलता है शिवलोक।।३८।। गन्धमादन के पूर्व में है एक। सुकाल नाम का बडा पर्वत। उसके किनारे प्रदेश में। है वासव नाम का कुण्ड।।३९।। इंद्रद्वारा कराया था अमृतभोजन। उससे संबंधित है यह कुंड। उसके दक्षिण दिशा में स्थित। है कामरुप नाम का क्षेत्र।।४०।। शची के पति देवराज इंद्र। प्राचीन काल में गये थे थक। उन्हों ने थककर कामरुप में। किया था अमृत का पान।।४१।। वासव कुंड में स्नान कर के। सुकान्त पर्वत के उपर चढकर। होता है साधक इंद्रका प्रिय। करता है वह इंद्रलोक प्राप्त।।४२।। सुकान्त पर्वत के पूर्व भाग। है रक्षकूट नाम का पर्वत। राक्षस देवता निर्ऋति नाम। करते है यहाँ निरन्तर निवास।।४३।। चंद्र - बिंदु के सहीत अन्तिम। और उसके पहले का व्यंजन। क्ष और ह तथा वर्ण क। कहते है ये निर्ऋति का बीज।।४४।। करे उससे निर्ऋति का पूजन। तथा करे राक्षसेश्वरी चण्डिका पूजन। रहता है वह राक्षसभय से रहीत। होता है राक्षसों से भय से निवृत्त।।४५।। उस साधक को देखने मात्र। राक्षस,पिशाच, वेताल, गणनायक। होते विशेष रुप से भयभीत। है ऐसा प्रचिती दायक निर्ऋती पूजन।।४६।। रक्षकूट के पूर्व में भैरव नाम। विष्णु प्रसिध्द

पाण्डुनाथ नाम। है ये शिलारुप में विराजमान। कहता हूँ अब उनका स्वरुप।।४७।। है लाल गौराङ्ग वर्णवाले यह। उज्ज्वल मुकुट किया है धारण। है यह चारभुजा सुशोभित। शुध्द कुण्डलोंसे शोभायमान।।४८।। श्रीवत्समणि है वक्षस्थलपर। है यह पाण्डुनाथ तेजोमय। यह पाण्डुनाथ नामक विष्णु। है उत्तर तंत्र मे अष्टाक्षर मंत्र वर्णित।।४९।। 'ॐ नमो नारायणाय' है मूलबीज। करे इस मंत्र से इनका पूजन। चतुर्वर्ग को है यह वरदायक। सिध्दी के लिए करे इसका पूजन।।५०।। पाण्डुनाथ की उत्तरदिशा में। ब्रह्मकूट नामक सरोवर। देवगणों के स्नान के लिए। है यह ब्रह्माद्वारा निर्मित।।५१।। (सर्व पापहरं पुण्यं, देवलोकात् समागतम्,कमण्डलुसमुद्भूतं ब्रह्मकुण्डामृतस्त्रव। हर मे सर्वपापानि पुण्यं स्वर्ग च साधय। इत्यनेन तु मात्रेण स्नात्वा तस्मिन् सरोजले। पाण्डुनाथं च सम्पूज्य विष्णु सायुज्यमाप्नुयात्)। मन्त्रार्थ - अर्थ है ये देवलोक से आये। ब्रह्मा कमण्डलु से निकले। ब्रह्मकुण्ड में स्त्रवित होने वाले। सभी पापों को हरनेवाले।।५२।। है आप निर्मल पवित्र जल। दूर कर आज मेरे सभी पाप। करो मुझे पुण्यकारक स्वर्ग। करो सुलभ और आसान।।५३।। इस मंत्र से करके स्नान। जो करे पाण्डुनाथ का पूजन। हो जाएगा वह पापमुक्त। होगा विष्णु सायुज्य प्राप्त।।५४।। पाण्डुनाथ के पूर्व में चित्रकूट नाम। है भगवान विष्णु का पर्वत। इसी स्थान में विष्णु भगवान। वराहरुप में करते निरन्तर निवास।।५५।। तत्पश्चात है नीलकूट नामक। कामाख्या देवी का श्रेष्ठ निवास। उसके पूर्वभाग में ब्रह्मगिरिरुप में। करते है ब्रह्मा सदा निवास।।५६।। उसी ब्रह्मशैल के पूर्व भूमितल। है कामाख्या का नाभिमण्डल स्थित। है यह नाभिमण्डल सुंदर। गहरा, शुभ्र आवर्तन युक्त।।५७।। यही पर है उग्रतारा रुप। देवी परमेश्वरी करती रमण।

इस देवी का यह शुभ स्वरुप। करे उसी रुप में देवी का पूजन।।५८।। है क्षोभक नाम महान पर्वत। उसके ईशान कोण में संध्याचल नाम। है एक ऊँचा और उत्तम पर्वत। यहाँ प्राचीन काल में वशिष्ठ ने दिया शाप।।५९।। प्राचीन काल वशिष्ठ ये ब्रह्मा के पुत्र। उन्हे मिला राजानिमि से शाप। हुए थे वशिष्ठ शरीर विहीन। उनकी शाप से निमि हुआ शरीर विहीत।।६०।। ब्रह्मा ने वशिष्ठ को दिया उपदेश। अतः कामरुप में संध्याचल पर। कियी वशिष्ठ ने तपस्या बहुत। तब दिया विष्णु ने उन्हे दर्शन।।६१।। दिया विष्णु ने उन्हे वरदान। पर्वत तलहटी में कुण्ड बनाकर। वशिष्ठ ने उतारा उसमें अमृत। उसमें स्नान करके किया जल पान।।६२।। तब वसिष्ठ मुनि को मिला लाभ। मिला वशिष्ठ को पूर्ण शरीर। अमृतकुण्ड से निकली नदी संध्या नाम। उससे होता मनुष्य निरोगी, दीर्घायु।।६३।। है अमृतकुण्ड से पूर्वभाग। सुंदरी नदी ललीता नाम। इसे महादेव शिव ने स्वयम्। दक्षिणसागर (ब्रह्मपुत्र) से निकाला था।।६४।। वैशाख शुक्ल तृतीया को जो मनुष्य। करता है ललिता में स्नान। होता है प्राप्त उसे शिवलोक। है यह इस ललिता का माहात्म्य।।६५।। ललिता के पूर्वी तटपर। है भगवान नाम पर्वत। यहाँ स्वयं विष्णु भगवान। करते है लिंगरुप में निवास।।६६।। शुक्लपक्ष की द्वादशी तिथिपर। करता है जो ललिता में स्नान। बाद में करता परमेश्वर पूजन। जाता है सशरीर विष्णुलोक।।६७।। है यह सभी नदियाँ प्रसिध्द। बहती है सब उत्तर की ओर। है ये सब गंगासमान श्रेष्ठ। जाकर गिरती है दक्षिण सागर।।६८।। जो साधक करता कामाख्या दर्शन। उर्वशी नदी में करता स्नान। तत्पश्चात करता इन नदियों मे स्नान। करता है वह मुक्ति प्राप्त।।६९।। कामाख्या पर्वत के पूर्वी द्वारपर। है सुंदर गणेशजी स्थित। वैसेही

उसकी पूर्वी द्वार। है अग्निवेताल भी स्थित।।७०।। प्रारंभ में मूलबीज 'गं' वर्णसहित। 'ॐ नमः उल्कामुखाय'मंत्र। है यह कामाख्या द्वार स्थित। सिध्दगणेशजी का मूलमंत्र।।७१।। इसका तंत्र याने पूजा विधान। बताया है पंचवक्त्र के पूजासमान। वैसा ही विधानसहीत पूजन। यहाँ गणेशजी का करे पूजन।।७२।। उसी द्वार पर स्थित अग्नि वेताल। है ये दो भुजायुक्त भयंकर। लंबी जटाएँ उनके मस्तक पर। करते रहते है घोर गर्जन।।७३।। अग्नि (र) से युक्त 'प'से चौथा वर्ण। 'भ' जो है 'ऊ' से सुशोभित। ऐसा अग्निवेताल का बीजमंत्र। 'भ्रूं' होता है सब भयनाशक।।७४।। सब स्थानों पर भय दूर करने के लिये। अग्नि वेताल का पूजन करे। करता है जो साधक यह पूजन। नही रहता उसे भूतादिका भय।।७५।। शैलपुत्री आदि आठ योगिनियाँ। है इनके जो आठ मंत्र।कहे गये वैष्णवी तंत्र में। है ये आठ मंत्राक्षरों के रुप।।७६।। दुर्गा तंत्र मे किये है वर्णित। है ये बीजमंत्र स्वरुप। प्रत्येक अश्ररों से या नेत्रबीज से। करना चाहिए योगिनिओं का पूजन।।७७।। कात्यायनी पाददुर्गा का पूजन। करे दुर्गातंत्र से साधक। कालरात्रि मन्त्रोका करके प्रयोग। करे साधक कालरात्रि का पूजन।।७८।। महामाया तंत्र के मन्त्रों से। करे भुवनेश्वरी का पूजन। है ये सभी योगिनियाँ। फलदायिनी कामाख्या समान।।७९।। नरसत्तम जो श्रेष्ठ पुरुष। प्रत्येक योगिनी का करे पूजन। वह श्रेष्ठ पुरुष कर लेता प्राप्त। इससे सभी यज्ञ करने का फल।।८०।। नीलपर्वत के वर्णन प्रसंग में। कामेश्वर की पूजा कही है। दुर्जय नाम का है पर्वत श्रेष्ठ। इस उत्तम पर्वतपर करे यह पूजा।।८१।। है वहीपर भैरव नाम सरोवर। है वहाँ ही भैरवगंगा नाम नदी। इन दोनों में स्नान स्नान करके मनुष्य। कर लेता है प्राप्त वह शिवलोक।।८२।। दुर्जय पर्वत के पूर्व

भाग। है वरासन नाम का पूर। है उसीके दक्षिण भाग। क्षोभक नाम का विशाल पर्वत।।८३।। उस पर्वत के शिलातलपर। है पंच पुष्करिणी नाम। पाँच योनियो के रुप मे। है यहाँपर रक्तदेवी स्थित।।८४।। हिमनगसुता पार्वती रहती यहाँ पर। रक्षण करने के लिए नित्य। पाँच दुर्गम योनियों के जल से। करे यहाँ पर शिव का पूजन।।८५।। उस पर्वत की घाटी भूमिपर। महाकुण्ड नाम एक दिव्य कुण्ड। इस दिव्य कुण्ड में करके स्नान। करे पञ्चपुष्करिणी रुपी शिवा का पूजन।।८६।। होता है वह पुनर्जन्म से मुक्त। पुनः योनि में न होता उत्पन्न। अपनी पञ्च योनियों को करती है। पञ्चपुष्करिणी रुप में स्थित।।८७।। इसप्रकार देवी के पाँच रुप। मानते है इसे इन रुपों के कारण। है यह स्वयं पञ्चपुष्करिणी स्वरुप। है यह अति पवित्र, मंगलमय।।८८।। आकार में ये योनियाँ पाँच। है सभी बकुलपुष्प के समान। ये पञ्चपुष्करिणी है प्रचण्ड। करती है साधक की कामना पूर्ण।।८९।। त्रिपुरादि तंत्रो के मंत्रोंसे। अथवा कामेश्वरी तंत्र मंत्रोसे। मन मे भक्तिभावपूर्ण होकर। करे साधक देवियोंका पूजन।।९०।। बाला त्रिपुरा के ही मंत्र। माने गए है उसके मंत्र। उन मंत्रोंसे करे देवी का पूजन। या कामेश्वरी मंत्र से करे पूजन।।९१।। ये योगिनियों के विषय कहता हूँ अब। है ये सब पाँच योगिनीयों नाम। उग्रचण्डा, प्रचण्डा, चण्डोग्रा। चण्डनायिका और चण्डा पाँच।।९२।। वही पर शिलापर है एक। हेरुक नाम का एक शिवलिंग। देवी के दक्षिणपूर्व में स्थित। है यह योगिनियों के नायक।।९३।। उसी रुप में करे उसका पूजन। करे भैरव मंत्र से पूजन। इस शिवलिंग का करके पूजन। प्राप्त करता है साधक शिवलोक।।९४।। कहा गया है कामरुप पीठ में। विविध देवियोंका पूजन। उसी तरह कहा गया है यहाँ। शिव, ब्रह्मा, विष्णु का पूजन।।९५।।

यह सब पूजन कहा शंकरने। वेताल, भैरव, पुत्रों को अपने। किया समस्त कामरुप पीठ वर्णन। तत्पश्चात चले गए कैलास पर।।९६।। कैलास पर्वत जाकर शंकर। हुए अपनें कार्य में मग्न। जाकर अपने पुत्रों को यथोचित। योगमार्ग में किया नियोजित।।९७।। कहता हूँ इस सबका फल। शिव, पार्वती, वेताल और भैरव। थे ये पहले सभी देवतारुप। आये थे ये सब मनुष्य योनियों मे।।९८।। हो गए सभी अपने शापसे मुक्त। हो गया उन्हे अपना लोक प्राप्त। है यह आख्यान सुनने फल। होते है सब पाप से मुक्त।।९९।। कहा कामरुपपीठ का आख्यान। स्वामीकृपा का यह वरदान। रहे देवदेवियोंका सदा वरदहस्त। मिले सब भक्तों को उनका वरप्रसाद।।१००।।

।। श्रीकामाख्या माताजीके चरणोंमे समर्पित। परमपूज्य स्वामीजीकें चरणोंमे समर्पित।।